पुस्तकालय
CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अश्रु-तर्पण

तुमने किसको कितना अपनाया माना,
सबने अपनेको ही सबसे प्रिय जाना।
तुम मानवताकी थे उदार परिभाषा,
जिसमें न कहींकी भेद-भावकी भाषा॥

उरकी भाषाको बिना कहे पढ़ते थे,
अकथित प्रश्नोंके समाधान गढ़ते थे।
दुख - दर्द दूसरोंके सुन करके रोते,
थे शुष्क न होते तब करुणाके सोते॥

तुम माधवकी मुरलीके मोही स्वर थे,
श्रीराधाके मञ्जीर मनोज्ञ मुखर थे।
तुम राग-भक्तिरसके अक्षय सागर थे,
तुम श्रीराधा थे या नटवर नागर थे?
तुमने विषको भी मीठा शर्बत देखा,
परमाणु - सदृश पर-गुणको पर्वत देखा।
तुम दोष देखनेमें अंधे गहरे थे,
पर - निन्दा सुननेमें पूरे बहरे थे॥

तुम दैवी विभूतिके गुण छाये थे,
तुम मानवमें भगवान् उतर आये थे।
तुम भक्तवृन्दके भाल - तिलक कुंकुम थे,
अर्थीकी आशाओंके कल्पद्रुम थे॥

धीरज अखण्ड विश्वास अटूट तुम्हारा,
मैत्री मुदिता करुणाकी अविरल धारा।
सबमें सर्वत्र सदा ईश्वरका दर्शन,
परहित - चिन्तन गम्भीर विचार विमर्शन॥

तुम व्यापक हरि हो गये, हार आँसूका,
श्रद्धासे अर्पित सुमन चार आँसूका।
हम विकल तुम्हारे लिए सभी भाईजी,
हम भूल न सकते तुम्हें कभी भाईजी!!

—श्री रामनारायणदत्त शास्त्री

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri
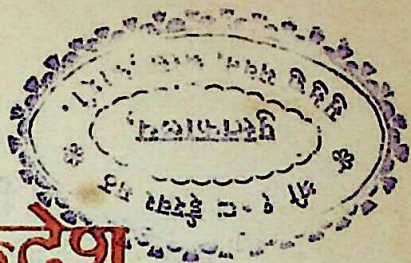
श्रीकृष्ण-सन्देश

धर्म, अध्यात्म, साहित्य एवं संस्कृति-प्रधान मासिक

पोद्दार-स्मृति-अंक

प्रवर्तक
ब्रह्मलीन श्री जुगुलकिशोर बिरला

● संख्या
वर्ष : ६, अङ्क : १०
मई, १९७१
श्रीकृष्ण संवत् : ५०७०

● शुल्क
वार्षिक : ७ रु०
आजीवन : १५१ रु०

सम्पादक-मण्डल ●
आचार्य सीताराम चतुर्वेदी
डा० विद्यानिवास मिश्र
विश्वम्भरनाथ द्विवेदी

सम्पादक ●
पाण्डेय रामनारायणदत्त शास्त्री 'राम'

इस अंकके सम्पादक
गोविन्द नरहरि वैजापुरकर

प्रवन्ध–सम्पादक
देवधर शर्मा
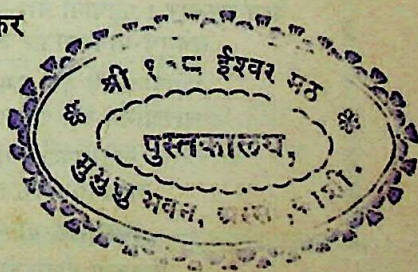
प्रकाशक :
श्रीकृष्ण-जन्मस्थान-सेवासंघ, मथुरा

दूरभाष : ३३८

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

विषय-सूची

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

श्री १०८ ईश्वर
पुस्तकालय,
मुमुक्षु भवन, वाराणसी

हमारे ये श्रद्धा-सुमन !

मथुरा। विगत २२ मार्चको श्रीकृष्ण-जन्मस्थान सेवा-संघका एक विशेष अधिवेशन हुआ, जिसमें श्री हनुमानप्रसाद पोद्दारजीके वैकुण्ठवास पर निम्नलिखित प्रस्ताव पारित कर उनको मौन श्रद्धाञ्जलि समर्पित की गयी :

"पूज्य भाईजी श्री हनुमानप्रसादजी पोद्दारने गीता-प्रेस द्वारा धार्मिक एवं आध्यात्मिक जगत्‌की जो सेवा की है, उसे भारतकी धर्मप्रिय जनता ही क्या, विश्व भी युगोंतक याद रखेगा। 'कल्याण'के माध्यमसे उनके जो उद्‌गार जन-मानसतक पहुँचे हैं, यदि उन्हें परम कल्याणका साधन माना जाय, तो पूज्य भाईजीको परम कल्याणके लिए साध्य मान लेना कोई अत्युक्ति नहीं होगी।

श्रीकृष्ण-जन्मस्थान सेवा-संघको उनसे जो प्रेरणा, शक्ति एवं सहयोग प्राप्त हुआ है, उसे व्यक्त कर पाना हम लोगोंके वशकी बात नहीं। हम तो यही कह सकते हैं कि श्रीकृष्ण-जन्मस्थानकी अबतक जो भी प्रगति हुई, वह पूज्य श्री भाईजीकी प्रेरणा तथा उनकी शक्तिसे ही हुई है। संघके प्रारम्भसे ही उपाध्यक्षके रूपमें उन्होंने जो मार्गदर्शन किया, वह तो अविस्मरणीय है ही। उन्हींकी प्रेरणासे यहाँ श्री केशवदेव-मन्दिरका निर्माण हुआ, जिसका उद्‌घाटन संवत् २०१५ में उन्हींके कर-कमलों द्वारा सम्पन्न हुआ। उन्हींकी प्रेरणासे यहाँ संवत् २०१९ में 'कृष्ण-चबूतरा'का निर्माण हुआ और उन्हींके योजनानुसार 'भागवत-भवन'का विशाल मन्दिर साकार बनता जा रहा है। संवत् २०२१ में भागवत-भवनका शिलान्यास करते समय उन्होंने कहा था :

भगवान् श्रीकृष्णकी प्रेरणासे भागवत-भवनका निर्माण प्रारम्भ हुआ है। भगवान् श्रीकृष्ण ही इसके संचालक हैं और वे ही अपने जन्मस्थानका पुनरुद्धार-कार्य करवा रहे हैं।

उनके इस वाक्यमें कर्मको अकर्ममें परिवर्तित करनेकी पुनीत प्रक्रिया ही कर्म-योगका सार है। वे अब हमारे मध्य नहीं हैं, इसपर एकाएक विश्वास नहीं होता। हम तो केवल यही कामना करते हैं कि वे सनातन श्रीकृष्णके चरणारविंदोंके साथ हमारा मार्ग निरन्तर प्रशस्त करते रहें।"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अतीतकी कुछ स्मृतियाँ

श्री भाईजी

स्वामी श्री अखण्डानन्दजी सरस्वती
अध्यक्ष : श्रीकृष्ण-जन्मस्थान-सेवासंघ

★

हमारे सुहृद् एवं स्वजनके गोलोक-धाम-गमनसे हमें बड़ी पीड़ा हुई। यह धार्मिक जगत्की अपूरणीय क्षति है।

× × ×

मैं जब कल्याण-परिवारमें एक सदस्य था, श्री उड़ियाबाबाजी महाराजका दर्शन करने गंगातट कर्णवास आया। बाबा बोले : 'क्यों शान्तनु ! वहाँ सब ठीक है ?' मैंने कहा : 'हाँ महाराज ! सेठजीकी निष्ठा बड़ी पक्की है। भाईजी बड़े भक्त हैं। हमसे बहुत प्रेम भी करते हैं।' बाबाने कहा : 'अच्छा शान्तनु ! मैं तुम्हें एक कथा सुनाता हूँ।'

"एक थे महात्मा, सर्वथा विरक्त साधु ! विचारशील और त्यागी। वे गाँव-गाँव, ठाँव-ठाँव कहते फिरते : 'कहीं कब्र है कब्र ?' गृहस्थ उनका अभिप्राय समझ नहीं पाते थे। एक थे गृहस्थ ज्ञानी, असंग और निष्ठावान्। वे समझ गये और अपने घरकी ओर उंगली दिखाकर बोले : 'महाराज ! कब्र तो यह है, कहीं मुर्दा भी है ?'

साधुने अपने शरीरको मुर्दा बताया और उनके घरमें घुस गये। उनके लिए एकान्त कमरेकी व्यवस्था हो गयी। वे किसीसे मिलते-जुलते नहीं थे। एकरस बारह वर्ष बीत गये।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

एक दिन गृहस्थके घर चोर घुसे। लाखोंको सम्पत्ति समेटकर जाने लगे। साधुके मनमें आया : 'मैंने बारह वर्ष तक इसकी रोटी खायी। मेरी आँखोंके सामने इसकी चोरी हो जाय, क्या यह उचित है ? मेरा कुछ भी कर्तव्य नहीं ?'

वे चोरोंके पीछे लग गये और जगह-जगह कौपीन फाड़ कपड़े बाँध दिये। जिस कुएँमें चोरोंने सम्पत्ति डाली, उसे पहचान लिया। दूसरे दिन साधुके बतानेपर चोर पकड़े गये और सम्पत्ति मिल गयी।

स्वस्थ और शान्त होनेपर एक दिन गृहस्थने साधुसे प्रश्न किया : 'महाराज ! मुर्दा सच्चा या कब्र ?'

वे बोले : 'कब्र सच्ची, मुर्दा झूठा।' और वे वहाँसे विरक्त होकर निकल पड़े।"

बाबाके इस उपदेशको मैंने संन्यासकी प्रेरणा समझी। सचमुच भाईजी और उनके परिवारसे घनिष्ठता बढ़ती जा रही थी। मैंने संन्यास अपनी आनुवंशिक घर-गृहस्थीसे नहीं, भाईजीके परिवारसे ही लिया।

× × × ×

एक दिन भाईजीके पास एक व्यक्ति आया। भाईजीसे बोला : 'मेरी बीमार पत्नी अस्पतालमें है, सहायता दीजिये।' उन्होंने सहायता दी। कुछ दिन बाद आया। 'अस्पतालमें उसे बच्चा हुआ है, सहायता दीजिये।' तब भी दी। कुछ दिन बाद आया : 'हालत खराब है, कुछ और दीजिये।' तब भी दी। पाँच, दस दिन बाद आया : 'मर गयी, अन्त्येष्टि कैसे करें ?' फिर भी दी। 'घर जानेके लिए किराया चाहिए।' फिर भी दी।

किसीने पूछा : 'भाईजी यह कैसा आदमी है ? कोई ठग लगता है।'

भाईजीने कहा : 'मुझे पहले ही दिनसे मालूम है। न पत्नी, न बीमार, न बच्चा, न अस्पताल, न मृत्यु। किन्तु जब यह मेरे सम्मुख आकर बैठता है, तब लगता है कि इसने पूर्वजन्ममें मुझे कोई ऋण दे रखा था। मैं इसका ऋणी हूँ और वही चुका रहा हूँ।'

भाईजीके मनमें यह भाव ही नहीं था कि 'मैं इसपर उपकार कर रहा हूँ। ठगके प्रति दुर्भावकी तो बात ही क्या ?'

× × × ×

एक दिन मुझसे भाईजीने कहा : 'पण्डितजी ! भगवान्‌की स्मृति सदा नहीं रहती। वे बीच-बीचमें भूल जाते हैं।'

मैंने कहा : 'भाईजी ! यह विस्मृति भी तो वे ही देते हैं। उन्होंने गीतामें कहा है : **मत्तः स्मृतिर्ज्ञानमपोहनञ्च।**'

'विस्मृति भी वे ही देते हैं !'—भाईजीने दुहराया और उनके नेत्रोंसे अश्रुधारा चलने लगीं। शरीर रोमाञ्चित हो गया। वे भावविभोर हो उठे। ●

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

स्थितिप्रज्ञ बन्धुवर !

श्री वियोगी हरि

मन्त्री : श्रीकृष्ण-जन्मस्थान सेवा-संघ

काफी दिनोंसे पोद्दारजीका स्वास्थ्य अच्छा नहीं था, तथापि वे 'स्वस्थ' थे । अर्थात् अपने आपमें स्थित थे। जीवन उनका सतत साधना करते हुए स्थितप्रज्ञका हो गया था । क्रोध और द्वेषको उन्होंने जीत लिया था । उनके साथ जिसका किसी बातमें मत नहीं मिलता था, उसके प्रति भी वे मैत्रीभाव रखते थे । भगवद्-भक्ति उनके रोम-रोममें एकरस हो गयी थी । हृदय उनका सरल और सरस था । किसीको दुखी नहीं देख सकते थे । अन्तरसे करुणाका स्रोत सदा बहता रहता था ।

गीता-प्रेसके द्वारा उन्होंने बड़े महत्त्वका काम किया । प्राचीन ग्रन्थोंको शुद्ध और सुलभ मूल्यमें प्रकाशित, प्रसारित करके 'कल्याण'का सम्पादन करते-करते वे स्वयं कल्याणमूर्ति बन गये थे । भारतीय धर्म और संस्कृतिको उनके देहावसानसे निस्सन्देह अपूरणीय क्षति पहुँची है ।

मेरे साथ उनका जो स्नेहभाव था, उसे शब्दोंमें कैसे व्यक्त करूँ ? लगभग ४५ वर्षोंसे मैं उनके स्नेहका भाजन रहा । जब 'प्रेमयोग' गीता-प्रेसमें छप रहा था, तब मुझे उनका सत्संग-लाभ तीन सप्ताह तक मिला था । तबसे हमारी आत्मीयता बढ़ती ही गयी । पिछले दिनों ऋषिकेशमें जब उनसे मिलना हुआ, तब क्या पता था कि वह हमारी अंतिम भेंट होगी । आशा करनी चाहिए कि गीता-प्रेस और गीता-भवन तथा अन्य संस्थाएँ उनसे अदृष्ट प्रेरणा लेती रहेंगी, क्योंकि वे ही उनकी पुण्य-स्मारिका हैं । मैं बन्धुवर हनुमानप्रसादजीको अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ ।

●

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सनातन-धर्मके एक स्तम्भ !

श्री स्वामी करपात्रीजी

★

कल्याणके ओजस्वी सम्पादक श्रीहनुमानप्रसाद पोद्दारजीके असामयिक स्वर्गवाससे सनातन-धर्मका एक स्तम्भ टूट गया। वे उच्चकोटिके विद्वान् होनेके साथ धर्म तथा देशके कर्मठ सेवक थे। भारतके स्वतन्त्रता-आन्दोलनमें उन्होंने सक्रिय भाग लिया था। इसी तरह गोरक्षा-आन्दोलनमें भी वे अपना पूरा योग प्रदान कर रहे थे।

उनका स्वभाव सरल था। अपनी लोकप्रियतापर गर्व या घमण्ड उन्हें छू तक नहीं पाया। श्रीराधा-रानीके वे अनन्य भक्त थे। राधा-अष्टमी बड़े उल्लाससे मनाया करते थे। इस अवसरपर उनके भाषण मननीय होते थे। 'सत्संग-वाटिका'के मननसे बहुतोंको सन्तोष और शान्ति प्राप्त हुई है। उनके जैसे योग्य और निर्भीक व्यक्तिकी आज बड़ी आवश्यकता थी, पर कुटिल कालने हमसे उन्हें छीन लिया।

उनका शरीर भले ही न रहे, क्योंकि शरीरका नाश अवश्यम्भावी है, पर उनके विचार चिरकालतक लोगोंको प्रेरणा और स्फूर्ति प्रदान करते रहेंगे। उनके द्वारा चलाये गये कार्यको हम जारी रखें और आगे बढ़ायें, यही उनका सच्चा स्मारक होगा।

●

हिन्दू-जाति और सनातन धर्मके संरक्षक

काशिराज श्री विभूतिनारायण सिंह

श्री हनुमानप्रसादजी पोद्दारके निधनसे हिन्दू-जाति और सनातन-धर्मावलम्बियोंने अपना एक अदम्य उत्साही संरक्षक खो दिया है। 'गीता-प्रेस' और 'कल्याण'के माध्यमसे उन्होंने नैतिक अभ्युत्थान और सनातनधर्मके प्रचार-प्रसारका जो महत्कार्य किया, वह उनके यशःशरीरको सदैव अक्षुण्ण रखेगा। स्व० पोद्दारजी एक महान् भक्त, धर्मपालक और सदाचारके प्रतिष्ठापक थे। दीन-दुखियोंके प्रति उनके मनमें सदैव दया रहती थी। 'कल्याण' और 'गीता-प्रेस'के विभिन्न प्रकाशनोंकी देश-विदेशमें जो इतनी लोकप्रियता बढ़ी, वह उन्हींके अध्यवसायका फल है। बाबा विश्वनाथसे प्रार्थना है कि वह दिवंगत आत्माको शान्ति दें।

●

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

समभावी, उदारमना धर्मनिष्ठ !

आचार्य तुलसी

श्री हनुमानप्रसादजी पोद्दारको मैंने सदा उदार धार्मिक व्यक्तिके रूपमें देखा। उन्होंने जीवनभर वैदिक-धर्म और साहित्यकी अमूल्य सेवाएँ कीं, फिर भी उनका धर्म उदार और व्यापक दृष्टिकोणसे पुष्ट था। वे 'कल्याण'के अंकोंमें जैन और बौद्धकी सामग्री बड़ी श्रद्धासे देते। जब-जब 'कल्याण'के विशेषांकके प्रकाशनका समय आता, तब मुझे तथा मेरे शिष्य-शिष्याओंके लेखोंके लिए उनका अनुरोध आ जाता। ऐसे समभावी, उदारमना और धर्मनिष्ठ व्यक्तिका अभाव निश्चय ही सम्पूर्ण धार्मिक-जगत्को खटकनेवाला अभाव है ?

•

लाखों-लाख प्रणाम !

देश, धर्म, संस्कृति, समाज की सेवा की निष्काम !
रहा समर्पित जीवन जिनका अमर रहेगा नाम !!
मूल्यांकन हो नहीं सकेगा ऐसा जिनका काम !
श्रद्धा-सुमन समर्पित उनको लाखों-लाख प्रणाम !!

× × ×

भाईजी ! यह निधन आपका वज्रपात बनकर आया !
आज राष्ट्र के जन-जीवन में सहसा अन्धकार छाया !!

× × ×

माता, पिता, बन्धु, गुरु सब थे, पर 'भाईजी' कहलाए !
निधन आपका वज्रपात-सा कैसे भला सहा जाए !!

—श्री गौरीशंकर गुप्त

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

स्वर्गीय श्री हनुमान प्रसाद पोद्दार (भाई जी)

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वर्ष : ६] मथुरा, मई १९७१ [अङ्क : १०

हमारे देश - धर्म प्रचुरसेवाकौं प्रगट्यौ श्री हनुमानप्रसाद !
नुषमात्रकौं सुलभ कियौ सब वेद-पुराण अगाध ॥
मान रहित हृदयमें हुती सब जीवनकी मर्म वेदना ज्ञान ।
नहिं खोयौ पलहु बिन परहित सदां निरत रहे 'कल्यान' ॥
प्रसन्नता झलकत रही मुखपै हियमें ध्यान प्रभुकौ नाम ।
साधक बन्यौ धर्म-प्रचारचौ प्रेरचौ सबनि कियो पूरण काम ॥
दत्तक सब याचकजनकौ जिन जैसौ देख्यौ रूप अनुसार ।
पोष्यौ हिन्दुत्व प्रचारचौ जगमें खोले नेत्र बाहरी संसार ॥
हास्य - भावतें प्रभु आराधे सफल कियौ मानुषतन धार ।
रह्यौ नित्य सेवाहितकी में मध्य निकुंज 'सुकुमारि' वपुधार ॥

—श्री हितसुकुमारीलाल गोस्वामी

टीकैत-अधिकारी : श्री राधावल्लभजीका मन्दिर, वृन्दावन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अपनी बात

महामानव भाईजीके चरणोंमें

राष्ट्रगुरु समर्थ रामदास स्वामी बताते हैं कि जिस पुरुषने जीवनका रहस्य समझा और उसे आचरणमें भी उतारा, वह तो बन गया भाग्यवान् पुरुष, शेष अभागोंमें ही गिने जायँगे : समजले आणि वर्तले । तेंचि भाग्यवंत पुरुष झाले । आणिक जे उरले । करंटे पुरुष ॥ संत तुकाराम भी कहते हैं कि जिसकी कथनी और करनी एक हो, उसके पैर पकड़ लें : बोले तैसा चाले । त्याची वंदावी पाऊलें ॥ शास्त्रकार यः क्रियावान् स पण्डितः से यही दुहराते हैं । परोपदेशे पाण्डित्यम् जगह-जगह निन्दित है । तुलसीबाबा भी पर-उपदेस कुसल बहुतेरे से उनपर व्यंग्य कसे बिना नहीं रहते । सबका निचोड़ जगद्गुरु श्रीकृष्णने एक ही अर्धालीमें आदेशकी भाषामें बोल दिया है : तस्माद् योगाय युज्यस्व योगः कर्मसु कौशलम् ।

सचमुच आचरणकी'सानपर तंरासा ज्ञानरत्न ही महार्घता पाता है । मात्र यह कार्य मानवके ही बूतेकी बात है । स्वर्गके फरिश्ते केवल सुखभोगयोनि तो नरकके कीड़े दुःखभोगयोनि ही हैं । मात्र मानव ही किसी कुशल कृषककी तरह मेहनत-मशक्कतसे अच्छीसे-अच्छी फसल पकाकर अपने मन-मुताबिक सुख भोगता और दूसरोंको भी सुखी बनाता है । घरकी पूँजी निकाल-निकाल खरचने-खानेवाला और अन्ततः एक दिन दिवाला पीटनेवाला सामन्त क्या जाने उसका सवाद ?

स्वर्गीय भाई श्री हनुमानप्रसाद पोद्दारजीमें यही मानवता अपने पूर्णरूपमें विकसित पायी जाती रही । उन्होंने जो कुछ कहा, करके कहा । आचार, विचार और उच्चारका सुन्दर सङ्गम साधा, जो मनुष्याणां सहस्रेषु ही नसीब हो पाता है । सच्चे अर्थमें यही सर्वसाधारणको अपनी ओर आकृष्ट कर लेता है और यही है, किसी लोकसंग्रहीकी प्रमुख योग्यता ! समर्थने मानवके क्रमशः तीन कर्तव्य बताये हैं : १. हरिकथा-निरूपण, २. सदैव सावधानता और ३. लोकसंग्रह । श्री भाईजीने इस दिशामें क्या-क्या किया और कैसे किया, यह सब तो इस अंकमें गुरुजनोंने विस्तारसे कहा ही है । हम उसकी यहाँ पुनरुक्ति करना नहीं चाहते । हमारी दृष्टिमें तो वे परम भाग्यवान् हैं ! कारण भगवान् आद्य शंकराचार्यके शब्दोंमें उनमें मनुष्यत्व, मुमुक्षुत्व और महापुरुष-संश्रय ये तीनों भाग्य अहमहमिकया उभरते दीखते हैं ।

हम इतना ही कहना चाहते हैं कि उनमें विकसित यह सर्वाङ्गीण मानवता मानवमात्रके लिए अनिवार्यतः अनुकरणीय है । कारण हमारे देश और विश्वको आज इसकी तीव्र आवश्यकता है । उसीके अभावमें अश्रद्धा, अविश्वास या नास्तिक्य, द्वेष और दमनसे सारा संसार जल रहा है । भाईजीने अपने लम्बे जीवनमें इसी मानवताकी उपासना की है । हम उसका थोड़ा भी अनुकरण कर लें तो हमारा इहलोक और परलोक दोनों सुधर जाय, जीवन कृतार्थ हो जाय । महाभाग्यशाली, अनुकरणीय-चरित, महामानव और सच्चे लोकसंग्रही वैकुण्ठलीन भाईजीके प्रति यही परम श्रद्धाकी अभिव्यक्ति कही जायगी और यही होगा, उनका सच्चा स्मारक !

—गोविन्द नरहरि वैजापुरकर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कर्म, साधन और भक्तिके प्रयाग !

म० म० पद्मभूषण श्री गोपीनाथ कविराज

★

कर्मयोगी हनुमानप्रसादजी पोद्दार (भाईजी) ने दीर्घकालतक 'कल्याण' पत्रके सम्पादक एवं गीता-प्रेस तथा संस्थाके कर्णधार रूपमें समाज एवं साहित्य द्वारा जिस आदर्शकी स्थापना की है, वह इस युगमें एक परम दुर्लभ बात है।

'कल्याण'के प्रकाशनके प्रारम्भसे ही उनके साथ मेरा परिचय हुआ और वह सम्बन्ध आजतक घनिष्ठ भावसे अक्षुण्ण रहा। मैं उनके असामान्य व्यक्तित्व और धर्मके प्रति अकपट निष्ठाका सम्मिश्रण एवं लोक-सेवाके प्रति हृदयकी तीव्र आंकाक्षा देख सचमुच अतिशय आनन्द पाता था। उनके चरित्रगत सौन्दर्य और महत्त्वके कारण ही 'कल्याण'में शास्त्र और सिद्धान्तके विषयमें नाना प्रकारके लेख भेजनेको मैं उत्साहित हुआ। उनकी बहुमुखी प्रतिभाने सामाजिक और आध्यात्मिक क्षेत्रमें नाना प्रकारसे कल्याणका साधन किया। अर्थलाभकी ओर दृष्टि न रखकर समाजके प्रत्येक व्यक्तिको प्राचीन धर्म और नीतिका सारांश प्राप्त करानेके लिए यत्न गीता-प्रेसका महनीय आदर्श है। पोद्दारजी जीवनमें जिस आदर्शको लेकर अग्रसर हुए वह था, लोक-सेवाके असामान्य नैतिक आदर्शकी प्रेरणा द्वारा जीवन-संचालन और उसके साथ सबके मूलमें स्थित भगवत्-प्रेम एवं सेवा-शक्तिका अनुशीलन। उनकी इच्छा रही कि इस पथमें अकेले ही क्यों, सभी लोग सम्मिलित रूपसे अग्रसर हों जिससे इस अविश्वासके युगमें वास्तविक मंगल आविर्भूत हो।

मैं उनके चरित्रगत महत्त्वपर अत्यधिक मुग्ध हूँ। यह बात जगत्को कहनेकी नहीं है; किन्तु वे मेरे विशेष स्नेह-भाजन रहे, इसीलिए इस कर्मवीरके सम्बन्धमें जगत्के सामने कुछ व्यक्त कर रहा हूँ। आजके युगमें जो लोग जगत्का कल्याण करते हैं, वे साधारणतः बहिर्मुख होते हैं। किन्तु भाईजी अन्तर्मुख थे और ऊर्ध्वदृष्टिकी रक्षा करके प्राचीन आदर्शको शिरोधार्य कर व्यक्तिगत एवं समष्टिगत सामाजिक कर्तव्यका पालन कर उन्होंने आदर्श स्थापित किया। वास्तवमें ऐसा ही व्यक्ति कर्मवीर कहलाता है।

जीवन कर्म-स्रोतके मध्य सतत प्रवाहित होते हुए भी उनमें साधन एवं भक्तिकी अन्तःसलिला निरन्तर भगवद्-अभिमुख होकर प्रवाहित हो रही थी। अन्तपर्यन्त वे साधनोचित धर्ममें प्रतिष्ठित रहे।

●

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

धार्मिक जगत्‌का उज्ज्वल नक्षत्र

श्री हरिभाऊ उपाध्याय

परम भागवत श्री हनुमानप्रसादजी पोद्दारके स्वर्गवाससे सनातनधर्मका जबरदस्त पुरस्कर्ता, कल्याण-पथका पथिक और मार्गदर्शक, प्रगतिशील हिन्दू-धर्मका जाग्रत पृष्ठपोषक, भारतीय राष्ट्रिय समाजका एक प्रबुद्ध नागरिक उठ गया ! वे ब्रह्मलीन जयदयालजी गोयन्दकाके सहयोगी और उसके बाद उनकी भगवद्‌भक्ति-परम्पराके आजन्म संचालक रहे। उनके निधनसे मुझे आज इन दोनों महानुभावोंका अभाव एक साथ बुरी तरह खटक रहा है। लगभग ४५ वर्षसे मेरा उनका स्नेह-सम्बन्ध रहा। उनके जैसे सरल, सहृदय, परदुःखकातर, निरभिमानी विरले ही होते हैं। वंग-भंग-आन्दोलनके दिनोंमें वे कलकत्तेके अपने अन्य समवयस्क राजस्थानी मित्रोंके साथ ब्रिटिश-सरकारके कोप-भाजन हुए थे। धनिक-परिवारके होते हुई भी उन्होंने लक्ष्मीकी अपेक्षा नारायणकी सेवाको जीवनमें सर्वाधिक महत्त्व दिया। कई पुस्तकें लिखीं। हिन्दू-धर्मका उनका अध्ययन गहरा था। वे जो कुछ लिखते, उसपर भगवान्‌के प्रति निष्ठाका रंग चढ़ा रहता। राजस्थानी ही नहीं, सारे हिन्दू-समाजमें उनके प्रति स्नेह, श्रद्धा, आदर रखनेवालोंकी संख्या कम नहीं है। उन सभीको आज यह अनुभव हो रहा है कि हमारा एक सच्चा सखा, आप्त, पथदर्शक और धार्मिक जगत्‌का उज्ज्वल नक्षत्र संसारसे अस्त हो गया !

●

धन्य वह बहन, धन्य वह भाई !

बहन शिरीन हैदरअली बोहरी

★

मेरे अन्नदाता, साक्षात् परमेश्वर भैया हनुमानप्रसादजीका देहान्त सुनपर मुझे लगा कि जैसे मेरेलिए संसारकी हर एक चीजका अन्त हो गया। वे भाई महात्मा थे, जिन्होंने आज ७० सालोंतक हुमायूँ बनकर मेरी रक्षा की ! द्रौपदी समझकर श्रीकृष्णकी तरह पल-पल मुझे सहारा देते रहे। भैया मेरे रक्षक थे, मेरी जिन्दगीका सहारा थे। भैया ही मेरे इस जीवन-रूपी नौकाके खेवनहार थे। भैया, तुमने मुझे अकेला छोड़ दिया, अब मैं किसके सहारे जिऊँ ? 'भैया' कहकर किसे पुकारूँ ? मुझे 'बहन' कहकर कौन गले लगायेगा ? राखी कौन बँधवायेगा ? भैया, मुझे किसके सहारे छोड़कर गये ? तुम्हें अपनी चमड़ीके जूते पहनाऊँ तो भी कम है। मुझ जैसी हजार बहनें कुर्बान करूँ तो भी दुनियामें ऐसा भाई न हुआ, न होगा !

●

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आस्तिकताके साधक भाईजी !

डॉ० विद्यानिवास मिश्र

☆

भाईजीको समीपसे जाननेका अवसर मुझे यद्यपि नहीं मिला, किन्तु गोरखपुर उनका इतने वर्षोंतक कर्मक्षेत्र रहा, इसलिए उनका काम तो मनपर छाया ही रहा है। जब-जब उनसे मिला तो संस्कृतके कामसे मिला हूँ, एक-दो बार हिन्दू-धर्मके पुनरुज्जीवनके सम्बन्धमें भी। श्रद्धेय भाईजीमें दो गुण ऐसे थे, जो सहज ही अपनी ओर आकृष्ट कर लेते थे : एक तो आस्तिकताका संस्पर्श और दूसरा विनय। 'कल्याण'की यात्रा भाईजीकी आस्तिकताकी निरन्तर अनथक साधना की ही यात्रा है। भाईजीकी आस्तिकता बड़ी संक्रामक थी। वे 'नास्ति'को पलभरमें 'अस्ति'में परिवर्तित कर देते थे, क्योंकि उनकी दृष्टिमें 'नास्ति' कहीं था ही नहीं। कल्याणका 'ईश्वरांक' शायद पहला अंक है, जिसे मैंने कुछ होशमें आनेपर सावधानीसे पढ़ा। उसमें मुखियाजीकी एक कहानी थी। 'अस्ति'-भावना किस प्रकार सरल और सूधे व्यवहारमें प्रस्फुटित हो उठती है और किस प्रकार आसपासके सभी लोगोंमें चैतन्यशक्तिकी धारा प्रवाहित कर देती है, उस कहानीके पढ़नेपर इसका प्रभाव अभी भी मनपर गहरा है। भाईजीको जाने क्यों, उस कहानीके मुखियाजीके स्वरूपमें जब-जब उनसे भेंट हुई, मैंने देखा है।

इतना गहरा प्रभाव डालनेकी क्षमता होते हुए भी जो सबसे अधिक विस्मयजनक बात उनमें थी : वह थी अतिशय विनयशीलता। वे यह अनुभव करनेका अवसर ही नहीं देना चाहते थे कि जो आस्तिकता प्रवहमान हो रही है, उसमें उनका सान्निध्य ही सबसे बड़ा कारण है। वे क्षणभरके लिए भी अपने कर्तृत्वको उभरने नहीं देते थे। एक स्वयंको मध्यस्थ चुम्बकीय केन्द्रके रूपमें रखना चाहते थे। कई बार भेंट करनेपर स्पष्ट हो गया कि उनकी यह लोकोत्तर विनयशीलता मिलनेवालेके भीतरसे सब कुछ खींच लेनेका एक साधन था। मिलनेवाला आश्वस्त होकर अपनी पूरी बात कह ले, अपनेको पूरी तरह उड़ेल दे, उसका अस्ति पूर्णरूपमें अभिव्यक्त हो उठे, इसीलिए भाईजी अपनेको अत्यन्त सामान्य श्रोताकी भूमिकामें डाले रहते थे।

बीच-बीचमें कहीं विप्रतिपत्ति उपस्थित हो, तो वे एक हलका झटका भी दे देते थे। पर यह हलका झटका तभी देते, जब कहीं अस्तिकी समग्रताका खण्डन होता था। वे ईश्वरकी भावनापर बल देते थे और भावना गहरी हो एकनिष्ठ हो तो चाहे जिस भावसे हो, उसे महनीय मानते थे। दूसरेकी भावनाके सम्बन्धमें सन्देह भी उन्हें अप्रीतिकर था।

वे प्रत्येक व्यक्तिको अपने विश्वासके अनुसार पारमार्थिक सत्ताके साथ सम्बन्ध जोड़नेके लिए स्वतन्त्र देखना चाहते थे। इसीलिए न तो स्वयं दूसरेकी भावनाका निरादर करते थे, न उसका निरादर करते सुन सकते थे। इसीको मैं सच्चे साधुका निर्मत्सर भाव मानता हूँ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वे राधावल्लभीय सम्प्रदायवालेके सामने उस सम्प्रदायकी दृष्टिसे लीलाका विवेचन करते तो चैतन्यसम्प्रदायवालेके सामने चैतन्य-सम्प्रदायकी दृष्टिसे विचारते। वे कहते : **न बुद्धिभेदं जनयेत्।** भाईजी मनुष्यकी ईश्वराकांक्षामें पूर्णरूपसे विश्वास करते और अपने आचरणसे इस विश्वासको और जाग्रत् करनेमें सचेष्ट रहते। वे न तो सन्देह करना जानते थे और न सन्देह करनेवालेको सन्देहका अवसर ही देते थे।

सूधे मन सूधे वचन, सूधी सब करतूति।
तुलसी सूधी सकल विधि, रघुवर प्रेम प्रतीति॥

आर्जवके असिधारा-व्रतसे उन्होंने राजनीतिसे अलग रहकर भी देशके राजनीतिज्ञोंको अपने स्नेहपाशमें बाँध रखा, वे देशभरके महात्माओंको एक मञ्चपर लानेमें सतत सफल रहे और प्रत्येक आकारकी धार्मिक-भावनाको ईश्वरोन्मुख करनेमें कृतकार्य हुए।

भाईजीको पाकर यह संज्ञा बड़ी सार्थक हुई! भाई-सा नैकट्य, भाई-सी अगाध वत्सलता और भाई-सा सहज आदरभाव उनके सान्निध्यसे विकिरणशील रहता था। वे विश्वास करते थे और विश्वास उत्पन्न करते थे, विश्वास भरते थे और विश्वास खींचते थे। ●

जब 'बाबूजी'से 'भाईजी' बने!

श्री कृष्णचन्द्र, एम० ए०

★

पोद्दारजी जब बम्बईमें रहते थे तो अपने स्नेहशील, सेवा-परायण स्वभावसे इतने लोकप्रिय हो गये थे कि गरीब-अमीर, छोटे-बड़े धार्मिक-प्रामाणिक सभी लोग उन्हें अपना मानने लगे। उन्हें पोद्दारजी भी अपने स्वजनकी भाँति अनुभव होने लगे। सभीको ऐसा लगने लगा था कि ये ऐसे व्यक्ति हैं जो सभी प्रकारके भेदभावोंसे ऊपर हैं। वे छोटेके लिए छोटे हैं, बड़ेके लिए बड़े हैं, सुखीके लिए सुखी हैं, दुःखीके लिए दुःखी हैं। उनका हृदय धार्मिक, सामाजिक, आर्थिक आदि संकीर्णताओंसे रहित हैं। वे पूर्ण सदाचारी होते हुए भी पथ भूले हुए भाई-बहनोंके प्रति उसी प्रकार स्नेहसे भरे हैं। वे अपने लिए नियमोंके पालनमें कट्टर हैं, पर दूसरेको उनके लिए बाध्य नहीं करते। वे सभीके अपने हैं, स्वजन हैं। अतएव किसीको भी अपने हृदयकी चाहे जैसी बात पूर्ण विश्वासके साथ उनके सामने रखनेमें तनिक भी संकोच नहीं होता था। इस प्रकार सबके विश्वासभाजन, स्नेहभाजन, आत्मीय होनेके कारण लोग स्वभावतः उन्हें अपने सगे भाईके रूपमें अनुभव करने लगे। श्री श्रीलालजी याज्ञिक बाबूजीके मित्रोंमें से थे। पोद्दारजीके सम्पर्कमें आनेवाले व्यक्तियोंसे इनका बराबर मिलना-जुलना होता था। उन सभी व्यक्तियोंमें बाबूजीके प्रति एक ही और प्यार स्नेहमयी भावनाके दर्शन हुए : 'पोद्दारजी हमारे भाई हैं।' श्री श्रीलालजीको स्वयं इसकी अनुभूति थी ही। बस, वे बाबूजीको 'भाईजी' नामसे पुकारने लगे। फिर तो समाजके सभी छोटे-बड़े उन्हें 'भाईजी' कहकर पुकारने लगे। 'पोद्दारजी', 'हनुमानप्रसादजी' नामसे भी अधिक उनका 'भाईजी' नाम प्रचलित हो गया! कारण वह सबके हृदयकी स्वाभाविक अनुभूति थी। ●

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भाईजी : जीवन और कार्य—तिथियोंमें

यों प्रायः प्रत्येक लेखकने अपनी-अपनी श्रद्धाञ्जलिमें भाईजीके जीवन एवं कार्योंका यथावसर कुछ-कुछ निर्देश किया ही है। फिर भी समग्र रूपमें और आँकड़ोंमें उन्हें एक साथ रखनेकी आजकी नयी पद्धति निश्चय ही अनुकरणीय है। अतएव हम भी यहाँ तिथियों और आँकड़ोंमें उसे प्रस्तुत कर रहे हैं। यह संकलन डॉक्टर भगवतीप्रसाद सिंहकी कृपासे बन सका है।—सम्पादक

आश्विन कृष्ण १२, सं १९४९ (१७ सितम्बर १८९२) : जन्म (शिलांगमें)।

श्रावण कृष्ण १२, सं० १९५१ (१८९४ ई०) : मातृशोक।

सं. १९५३ (१८९६ ई.) : शिलांगके भूकम्पमें प्राणरक्षा।

सं. १९५७ (१९०० ई.) : निम्बार्क-सम्प्रदायके महात्मा मेहरदाससे मन्त्र-दीक्षा।

सं. १९५८ (१९०१) : शिलांग छोड़कर कलकत्ता-आगमन।

ज्येष्ठ कृष्ण ४, सं. १९६१ (१९०४ ई.). : यज्ञोपवीत - संस्कार। स्वदेशी-आन्दोलन और स्वदेशी-व्रत-धारण।

सं. १९६७ (१९१० ई.) : कलकत्तेमें क्रान्तिकारियोंकी गुप्त - समितिकी सक्रिय सदस्यता, अरविन्द घोष और देशबन्धु चित्त-रंजनदाससे घनिष्ठता।

सं. १९६९ (१९१२ ई.) । पिता श्री भीमराजका देहावसान। श्री जयदयालजी गोयन्दकासे कलकत्तेमें प्रथम साक्षात्कार।

सं. १९७२ (१९१५ ई.) : विवाह।

सं. १९७३ (१९१६ ई.) : राजद्रोहके अपराधमें गिरफ्तारी और अलीपुर सेण्ट्रल जेल तथा शिमलापालमें डेढ़ वर्षकी नजरबन्दी। भगवन्नामका आश्रय, साधन-जीवनमें उत्कर्ष।

वैशाख शुक्ल ४. १९७५ (१९१८ ई.) बंगालसे निष्कासन और रतनगढ़-प्रस्थान।

सं. १९७६—७८ (१९१९—२१ ई.) : अखिलभारतीय कांग्रेसके अमृतसर-अधिवेशनमें गरमदलके नेता बाल गंगाधर तिलकके अनुयायीके रूपमें सम्मिलन। कलकत्ता, नागपुर-अधिवेशनमें सम्मिलनके बाद धार्मिक मतभेदसे कांग्रेस-त्याग, अध्यात्म-साधना धर्म-प्रचार।

सं. १९७९ (१९२२ ई.) : सत्संग-मण्डलीके साथ सेठ जयदयाल गोयन्दकाजीकी प्रथम बम्बई-यात्रा।

वैशाख शु. १३ (१९२३ ई.) : दादी रामकौर बाईका नृसिंह-जयन्तीके दिन देहावसान।

सं. १९८२ (१९२५ ई.) : सेठ जमना-लाल बजाजके साथ खादी-प्रचारके लिए बीकानेर-यात्रा।

चैत्र शु. १, २, ३, सं. १९८३ (१३ १४, १५ अप्रैल १९२६ ई.) : मारवाड़ी अग्रवाल महासभाके दिल्ली अधिवेशनमें एक धार्मिक पत्रिका निकालनेका प्रस्ताव और रामनवमीको 'कल्याण' मासिकपत्र निकालने-का निर्णय। श्रावण कृष्ण, ११ को कल्याण'के प्रथम अंकका वेंकटेश्वर प्रेससे, सत्संग-भवन, बम्बई द्वारा प्रकाशन।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भाद्र सं. १९८४ (अगस्त १९२७ ई.) 'कल्याण-कार्यालय' का बम्बईसे गोरखपुर स्थानान्तरण, गीता-प्रेससे उसके प्रकाशनका आरम्भ। मार्गशीर्ष १० भगवन्नाम-प्रचारार्थ सत्संग-मण्डलीके साथ भारत-भ्रमण।

वैशाख शु. ७ सं. १९८५ (१९२८ ई.) : श्री चिम्मनलाल गोस्वामीका 'कल्याण-कल्पतरु'का सम्पादन - कार्य करनेके लिए गोरखपुर-आगमन, साधन-समितीकी स्थापना।

आश्विन शु. २, सं० १९८६ (१९२९) ई.) : महात्मा गांधीका गोरखपुर आगमन और गीता-प्रेसमें भाषण।

फाल्गुन शु. १, सं. १९८६ (१९२९ ई.) : गोरखपुरमें हिन्दी-साहित्य-सम्मेलनका वार्षिक अधिवेशन, साहित्यकारोंका आतिथ्य।

आषाढ़ शु. १, सं. १९८७ (१९३०) ई. गोरखपुर जिलेके बाढ़पीड़ितोंकी सहायता।

आश्विन कृ. २, सं. १९८९ (१९३२ ई.) गीता एवं रामायण-प्रचार समितिकी स्थापना।

सं. १९९१ (१९३४ ई.) : बिहार भू-कम्प पीड़ितोंकी सहायता। श्रावण-भाद्रमें गोरखपुर जिलेके बाढ़-पीड़ितोंकी सेवा।

शरद्-पूर्णिमा सं. १९९३ (१९६३ ई.) : बाबा चक्रधरका गोरखपुर-आगमन।

माघ कृ. १, २, सं. १९९३ (१९३६ ई.) : पण्डित मदनमोहन मालवीयका गीता-वाटिकामें आगमन और निवास।

कार्तिक शु. ८ सं. १९९५ : राजस्थानमें अकाल-सेवाकी व्यवस्था।

सं. १९९६-९७ (१९४० ई.) : एकांत साधनाके लिए दादरी (हरियाणा) तथा रतनगढ़ (राजस्थान) वास। बंगालके भीषण अकालमें सहायता।

मार्गशीर्ष शु. १०, १९९८ (१९४१ ई.) : पुत्री (सुश्री सावित्री बाई) का विवाह।

भाद्र कृ. १० सं. १९९९ (१९४२)। बीकानेरमें अतिवृष्टिसे पीड़ित जनताकी सेवा।

पौष शु. १५, सं. २००१ (१९४४ ई.) हिन्दू-कोडबिल-विरोधी अभियान।

सं. २००३ (१९४६ ई.) : नोआखाली काण्डसे पीड़ित हिन्दुओंकी सहायता लिए गीता-प्रेस सेवक-मण्डल द्वारा व्यापक व्यवस्था।

पौष शु. सं. २००६ (१९४६ ई.) : राम-जन्मभूमि अयोध्यामें मूर्ति प्राकट्यके अनन्तर अखण्ड कीर्तनकी व्यवस्था।

वैशाख कृ. ६ से ९ सं. २०१० (१९५३ ई.) : गो-सेवक-परिषद् दिल्लीके अध्यक्ष पदसे भाषण, प्रयाग-कुम्भमें सत्संग एवं प्रवचन।

सं. २०११ (१९४५) : पूर्वी उत्तर-प्रदेशके बाढ़-पीड़ितोंमें सहायता कार्य।

भाद्र कृ. ८, सं. २०१५ (१९५८ ई.) : श्रीकृष्ण-जन्मभूमि, मथुराका उद्घाटनोत्सव।

२७ जनवरी १९६५ : चतुर्धाम वेदभवन-न्यासकी स्थापनामें योगदान।

११ फरवरी १९६५ : श्रीकृष्ण-जन्मभूमि, मथुरामें विशाल भागवत-भवनकी योजना एवं शिलान्यास।

७ नवम्बर १९६६ ई० : गो-रक्षा-आन्दोलनका संयोजन।

सं. २०२३ (१९६६ ई.) : बिहारके अकालमें सेवा।

सं. २०२५-२६ (१९६८-६९ ई.) : राजस्थानके भीषण अकालमें मनुष्यों और गो-वंशकी रक्षाके निमित्त वृहद् सेवा-योजना।

सं. २०२६ (१९६९ ई.) आसामके तूफानग्रस्त क्षेत्रमें सेवा-कार्य।

सं. २०२७ (१९७०) : पाकिस्तानके तूफान-पीड़ितोंकी सहायता।

२२ मार्च १९७१ : प्रातः ७।५५ पर जीवन-यात्रा-संवरण। ●

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सर्वभूतहित-साधनाके सजग प्रहरी !

डॉक्टर भगवतीप्रसाद सिंह

★

'आजके युगमें जो लोग जगत्का कल्याण करनेमें लगे हैं, वे साधारणतः बहिर्मुख होते हैं। किन्तु भाईजी अन्तर्मुख थे और अपनी ऊर्ध्वदृष्टिकी रक्षा करते हुए प्राचीन आदर्शको शिरोधार्य कर उन्होंने व्यक्तिगत एवं समष्टिगत सामाजिक कर्तव्यका पालन कर उच्च आदर्शकी स्थापना की। वास्तवमें वे कर्मवीर थे। उनका आदर्श लेकर यदि देशका कल्याण साधन करनेकी चेष्टा की जाय, तो आज जो निरन्तर अनर्थ हो रहे हैं, वे कभी नहीं होंगे। देश और समाजका वातावरण शुद्ध एवं निर्मल हो जायगा। ऐहिक कल्याण-मार्गसे पारमार्थिक कल्याणका मार्ग खुल जायगा।'

'कल्याण' के लब्धकीर्ति सम्पादक पोद्दारजीके ७९ वें जन्म-दिवसपर (१७ सितम्बर १९७०) अभिनन्दन करते हुए महामहोपाध्याय डाक्टर गोपीनाथ कविराजने उनकी चारित्रिक विशेषताओंके सम्बन्धमें अपने विचार इन शब्दोंमें व्यक्त किये थे। वास्तवमें भाईजीके अध्यात्मनिष्ठ लोकसंग्रही व्यक्तित्वका यही यथार्थ शब्दचित्र है। इस दृष्टिसे १९वीं शतीके धार्मिक पुनर्जागरणके अग्रदूत राजा राममोहन राय, स्वामी दयानन्द सरस्वती, परमहंस रामकृष्ण, स्वामी विवेकानन्द, महात्मा गांधी, पण्डित मदनमोहन मालवीय जैसी प्रातः-स्मरणीय विभूतियोंकी शृंखलामें भाईजीका व्यक्तित्व देदीप्यमान एवं सुदृढ़ कड़ीके रूपमें प्रतिष्ठित ठहरता है।

'कल्याण'-पत्र के प्रवर्तक, सम्पादक एवं उन्नायकके रूपमें उन्होंने गत ४४ वर्षोंसे आध्यात्मिक ज्योतिकी जो धारा बहायी, उससे देश-विदेशके सहस्रशः पथभ्रांत साधकोंको सन्मार्ग-दर्शन तथा संदेह और अविश्वासके अन्धकारमें भटकते असंख्य लोगोंको निष्ठा एवं विश्वासका संबल प्राप्त हुआ। उन्होंने गीताप्रेस द्वारा प्रकाशित विपुल धार्मिक साहित्य द्वारा सदाचारप्रधान लोकधर्मका अनुकरणीय आदर्श प्रस्तुत किया। इनसे हिन्दू-संस्कृतिकी परम्परागत मान्यताओंकी जिस कुशलतासे पुनःस्थापना एवं रक्षा हुई है और जिस विलक्षण पद्धतिसे इस भौतिकतापरक युगमें भी जन-मानसमें उनके प्रति अविचल श्रद्धा अक्षुण्ण रखी गयी है, वह चिरकालतक इस देशके जातीय जीवनके इतिहासकी अबूझ पहेली बनी रहेगी। लोक-जीवनमें विद्यमान आस्तिकताके पोषणके लिए—गीता, रामायण, महाभारत, श्रीमद्भागवत, उपनिषद, विभिन्न पुराण, रामचरित तथा धर्माचरणसम्बन्धी महत्त्व-पूर्ण साहित्यके सर्वसुलभ संस्करणोंसे लोकशिक्षाका जो विराट् आन्दोलन गीताप्रेसने चलाया, उससे राष्ट्रको विदेशोंसे आयातित, भारतीय-संस्कृति-विरोधी तत्त्वोंसे संघर्ष करनेकी अपूर्व क्षमता प्राप्त हुई। आनेवाला युग इसके दूरगामी प्रभावोंका यथार्थरूपेण महत्त्व आंक सकेगा।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आरम्भिक जीवन

पोद्दारजीके पूर्वजोंकी मूलभूमि पुराने बीकानेर राज्य (राजस्थान) का रतनगढ़ नगर है। वहाँसे उनसे पितामह सेठ कनीराम व्यापारके लिए आसामके शिलांग नगरमें जाकर बस गये थे। बादमें उनके पिता श्री भीमराजजी और माता रिखीबाई भी वहीं चली गयीं। वहीं आश्विन कृष्ण १२, सं० १९४९ (१७ सितम्बर १८९२) को पोद्दारजीका जन्म हुआ। दैवयोगसे पुत्रको जन्म देनेके डेढ़ वर्षके भीतर माता दिवंगत हो गयीं, बादमें दादी रामकौरने अपने कुलके एकमात्र दीपकका बड़े लाड़-प्यारसे सार-सँभार किया। वे अत्यन्त विदुषी, धार्मिक, भगवद्भक्त और सन्तसेवी थीं। बालक हनुमानप्रसादपर उनके आचार विचारका गहरा प्रभाव अबोधावस्थामें ही पड़ गया।

रामकौर देवी वेदान्तकी पण्डिता होनेके साथ ही हनुमान्‌जीकी अनन्य भक्त थीं। कहते हैं, उन्हें हनुमान्‌जीका इष्ट था। इसीलिए उन्होंने नामकरण संस्कारके समय इनका नाम 'हनुमानप्रसाद' रखा। उनकी प्रेरणासे ये बाल्यावस्थासे ही 'हनुमत्-कवच'का नियमित रूपसे पाठ करते थे। रतनगढ़में 'सालासर' के हनुमान्‌जी उनके आराध्य थे। यह विग्रह आज भी उस क्षेत्रमें आध्यात्मिक प्रेरणाका केन्द्रबिन्दु माना जाता है।

सन् १८९६ में शिलांगमें प्रलयंकर भूकम्प आया। उस समय ये चार वर्षके थे। देवीकृपासे मलबेके नीचे दबकर भी प्राणरक्षा हुई। इस घटनाके कुछ ही दिनों बाद परिवार कलकत्ता चला आया। वहाँसे आप दादाके साथ रतनगढ़ आते-जाते। आपका सम्पर्क निम्बार्क सम्प्रदायके महात्मा ब्रजदासजीसे हुआ और उन्हींसे दादीने आपको दीक्षा दिला दी। स्थानीय गौड़ीय सम्प्रदायके महन्त मेहरदास, नाथपंथीय महात्मा बबखन्नाथके भी ये कृपापात्र बन गये। इन सन्तोंके प्रभावसे पोद्दारजीके हृदयमें गीता और कृष्णकी भक्तिके अंकुर विकसित हुए। पारिवारिक अव्यवस्थाके कारण आपकी नियमित शिक्षा न हो सकी। प्रारम्भमें महाजनी पढ़ी और हिन्दी, बंगला तथा गुजरातीका अभ्यास घरपर किया। सं० १९५८ से पिताके साथ व्यापारमें लग जानेपर भी आपका स्वाध्याय चलता रहा। भीमराजजी उदार और धर्मपरायण व्यक्ति थे। वे कलकत्तामें बाहरसे आनेवाले साधु-संन्यासियोंके सम्मानमें सत्संग-सभाओंका आयोजन कराते रहते थे। दक्षिणके महात्मा जगदीश्वरानन्द भारती और शंकरानन्दजीपर आपकी अगाध श्रद्धा थी। इन्हीं महात्माओंके उपदेशोंका हनुमानप्रसादजीपर विशेष प्रभाव पड़ा। अध्यात्मके साथ साहित्यानुशीलनकी भी प्रवृत्ति बढ़ती गयी। फलतः अखण्ड अध्यवसाय तथा ईश्वर-प्रदत्त प्रतिभासे, आपने संस्कृत हिन्दी, बंगला तथा अंग्रेजीका व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त कर लिया।

देश-सेवा और समाज-सेवाका सूत्रपात

उन्हीं दिनों लार्ड कर्जनके 'बंग-भंग' विधानकी प्रतिक्रियामें समस्त बंगाल स्वदेशी-आन्दोलनकी लपेटोंसे धधक उठा। तेरह वर्षकी छोटी उम्रमें ही आपने राष्ट्रिय महायज्ञमें सक्रिय भाग लेना आरम्भ कर दिया। उसी समय स्वदेशी वस्त्रोंके उपयोगका भी व्रत ले

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लिया जो अन्ततक अक्षुण्ण रूपसे चलता रहा। समाज-सुधार और राजनीतिमें गहरी रुचिसे प्रेरित होकर आप कलकत्तामें मारवाड़ी-समाजके उत्साही नवयुवकों द्वारा स्थापित 'गुप्त-समिति'के प्रमुख कार्यकर्ता बन गये। अपनी इस राष्ट्रिय विचारधाराके कारण ये उस समयके प्रसिद्ध क्रान्तिकारी नेता अरविन्द्र घोष और विपिनचन्द्र पालके घनिष्ट सम्पर्कमें आये और कुछ ही दिनोंमें सर सुरेन्द्रनाथ बनर्जी, देशबन्धु चित्तरंजनदास, श्री श्यामसुन्दर चक्रवर्ती तथा पण्डित गिरीशपति काव्यतीर्थके स्नेहभाजन बन गये।

राजनीतिके सहधर्मी सामाजिक और राजनीतिक जीवनका सूत्रपात भी आपमें कलकत्ता-वासकालमें ही हुआ। मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी, हिन्दू-महासभा, हिन्दू-क्लब, वैश्य-सभा जैसी अनेक संस्थाओंकी स्थापना तथा संचालनमें भाग लेकर आपने सामाजिक रूढ़ियों तथा धार्मिक अन्धविश्वासोंका विरोध किया और समकालीन जीवनमें जागृति एवं प्रगतिकी नवीन चेतना उत्पन्न की। आपकी सामाजिक एवं धार्मिक सुधारवादी भावनाकी अभिव्यक्ति समाज-सेवाविषयक स्थूल कार्योंके अतिरिक्त उत्तरी भारतके विभिन्न हिन्दी पत्र-पत्रिकाओंमें प्रकाशित लेखोंमें भी हुई। दैवयोगसे उस समय कलकत्ता हिन्दी-पत्रकारिताके महान् पुरस्कर्ता पण्डित दुर्गाप्रसाद मित्र, बाबू बालमुकुन्द गुप्त, पण्डित अम्बिकाप्रसाद वाजपेयी, पण्डित बाबूराव विष्णुराव पराड़कर, पण्डित लक्ष्मण नारायण गर्दे, पण्डित बनारसीदास चतुर्वेदी जैसी प्रतिभाओंकी प्रमुख कार्यस्थली था। उनके सान्निध्यमें पोद्दारजीके मानसमें पत्रकारिताका बीजारोप हुआ, जिसका चरम विकास 'कल्याण'-सरीखे लोकविश्रुत मासिक-पत्रके सफल सम्पादकत्वमें दृष्टिगोचर हुआ।

राजद्रोहके अपराधमें गिरफ्तार

उग्र राजनीतिमें भाग लेनेके कारण अंग्रेजी शासनकी शनिदृष्टिसे बचना असम्भव था। पुलिसने आपको राजद्रोहके अपराधमें पकड़कर बन्द कर दिया। कुछ दिनोंतक अलीपुर सेण्ट्रल जेलमें रहनेके बाद आप शिमलापाल (बांकुड़ा) में नजरबन्द कर दिये गये। यहाँ २१ महीनेतक नजरबन्दीका जीवन व्यतीत करनेके पश्चात् आपको मुक्तिका आदेश मिला—इस प्रतिबन्धके साथ कि आप तत्काल बंगाल छोड़ देंगे और फिर राजकीय आदेश प्राप्त किये बिना उसकी सीमामें प्रवेश न करेंगे। इसके परिणामस्वरूप आपको कलकत्ताका अपना रहा-सहा व्यापार समेटकर सपरिवार पितृभूमि रतनगढ़की शरण लेनी पड़ी। पिताका देहावसान पहले हो चुका था। राज-नीतिक तथा सामाजिक आन्दोलनमें निरन्तर व्यस्तताके कारण व्यापार ठप-सा हो गया था। परिवारपर २० हजारका कर्ज भी हो गया, जिसे उन्होंने २० वर्ष बाद संवत् १९९२ में चुकाया।

रतनगढ़में निवास करते कुछ ही दिन बीते थे कि सेठ जमनालाल बजाजका पत्र आया। उन्होंने बम्बई आकर व्यापार करनेके लिए आपको लिखा था। फलतः आप बम्बई चले गये और वहाँ उनके सहयोगसे व्यापार तथा सामाजिक सेवा करते हुए कालयापन करने लगे। बम्बईके प्रवासकालमें आपकी जीवनधाराने नया मोड़ लिया। अलीपुर और शिमलापालके बन्दी-जीवनमें की गयी अखण्ड साधनाने आपकी प्रवृत्तिमें युगान्तकारी परिवर्तन संघटित कर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दिया था। सांसारिक विफलताओंने उसे उद्दीप्त किया। बम्बईमें साधना अनवरत रूपसे गतिशील रही। अब आपको यह अनुभव होने लगा कि रक्तरञ्जित बाह्य क्रान्तिकी अपेक्षा अहिंसापूर्ण आध्यात्मिक क्रान्ति ही देशवासियोंको दुःखसे निवृत्ति दिला सकती है। इस भावनाके उदयसे सक्रिय राजनीतिमें रुचि उत्तरोत्तर कम होती गयी और आप आध्यात्मिक उत्थानके साधनोंका संग्रह करनेमें अधिक लीन रहने लगे। सत्संग-सभाओंका आयोजन, गीता-कक्षाओंकी व्यवस्था, नाम-संकीर्तन-यज्ञोंका अनुष्ठान, सत्संग एवं प्रवचन-सभाओंका प्रबन्ध, आपकी दिनचर्या हो गयी। सेठ जमनालाल बजाजके माध्यमसे महात्मा गांधी, लोकमान्य तिलक तथा लाला लाजपतरायका आपको अपार स्नेह प्राप्त हो गया। गांधीजी तो अपने परिवारके सदस्यकी ही भाँति मानने लगे। संगीताचार्य श्री विष्णु दिगम्बर पलुस्कर आपकी आध्यात्मिक उपलब्धियोंसे इतने प्रभावित हुए कि आप द्वारा रचित पदोंको स्वर-योजना कर गाते और आत्मविभोर हो उठते।

'कल्याण' का सम्पादन

साधना और सत्संगके उत्कर्षसे आपका मन शनैः-शनैः व्यापारी-जीवनसे विरत होने लगा! उन्हीं दिनों दिल्लीमें 'मारवाड़ी अग्रवाल महासभा'का अधिवेशन हुआ। उसमें प्रसंगवश धार्मिक मासिक-पत्रिका निकालनेकी चर्चा चली। उसीके आधारपर वापसी रेलयात्रामें पोद्दारजीने सेठ जयदयालजी गोयन्दकाकी सहमतिसे 'कल्याण' नामके मासिक-पत्र निकालनेका प्रस्ताव किया। इसके प्रकाशनका श्रीगणेश श्रावण शु० ११, संवत् १९८३ में बम्बईमें हुआ। कुछ समयतक पोद्दारजीने इसे वेंकटेश्वर-प्रेससे निकाला। इसका प्रथम विशेषांक 'भगवन्नामांक' वहींसे प्रकाशित हुआ। १३ अंक निकलनेके अनन्तर दूसरे वर्ष सन् १९२७ के आरम्भसे सेठ जयदयाल गोयन्दकाके संयोजकत्वमें इसे गीता-प्रेस, गोरखपुरसे प्रकाशित करनेकी योजना बनी। भाईजीका विचार बम्बई छोड़कर कहीं गंगातटपर रहते हुए एकान्त-साधनामय जीवन व्यतीत करनेका था। किन्तु सेठजीके स्नेहपूर्ण आग्रहसे उन्हें बरबस गोरखपुर आकर 'कल्याण'के सम्पादकत्वका सारा भार स्वयं लेना पड़ा। 'कल्याण'-सम्पादनके गत ४४ वर्षोंमें पोद्दारजीने भारतीय साधना, धर्म और संस्कृतिके जो लोकशिक्षापरक अमूल्य संदेश साधारण तथा विशेषांकों द्वारा प्रसारित किये, वे इस देशके परम्परागत ज्ञान-विज्ञानके अक्षय-कोषरूपमें सर्वत्र समादृत हुए हैं।

साहित्य-सर्जना

यों पन्द्रह वर्षकी आयुसे ही 'भारतमित्र' (कलकत्ता), 'नवनीत' (बनारस), 'वेंकटेश्वर समाचार' (बम्बई) आदि पत्रोंमें पोद्दारजीके लेख प्रकाशित होते रहे हैं। किन्तु उनकी साहित्य-सर्जनाका व्यवस्थित क्रम 'कल्याण'के सम्पादनकाल १९२६ ई० से ही मिलता है। इन ४४ वर्षोंके भीतर धर्म, साधना, भक्ति, दर्शन, सदाचार, समाज-सुधार आदि विभिन्न विषयोंपर निबन्ध, कुछ विशिष्ट धर्म-ग्रन्थोंपर भाष्य एवं टीकाएँ, स्वतन्त्र ग्रन्थ तथा खड़ी बोली, व्रज, राजस्थानी एवं गुजरातीकी कविताएँ 'कल्याण'के सामान्य अंकों तथा विशेषांकोंमें प्रकाशित

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हुई हैं। उनमें गत अर्धशताब्दीके भीतर भारतके राजनीतिक, सामाजिक तथा धार्मिक पुनर्जागरणका स्वर बड़े सजीव शब्दोंमें मुखरित हुआ है। उनसे हिन्दी साहित्यकी गौरव-वृद्धि हुई ही है, साथ ही आपके द्वारा अहिन्दीभाषी क्षेत्रोंमें हिन्दीके प्रसारको भी उल्लेख्य गति मिली। कितने ही लोगोंने कल्याणमें भाईजीके द्वारा लिखे गये एवं सम्पादित लेखोंको पढ़नेके लिए हिन्दी सीखी। उनके गरिमामय व्यक्तित्वका बल पाकर गीता-प्रेस सामान्य मुद्रणालयसे प्रसिद्ध प्रकाशन-संस्थान बन गया!

लोक-संग्रह

इन साहित्यिक तथा धार्मिक सेवाओंके अतिरिक्त भाईजी लोकजीवनमें व्याप्त व्यक्तिगत तथा सामाजिक सन्ताप, द्वन्द्व एवं कष्ट-शमनमें भी यथाशक्ति योग देते रहे हैं। उनकी जीव-दया मात्र मानव-जगत्तक सीमित न होकर चराचर-व्यापिनी रही है। गोरक्षा-आन्दोलनके पुरस्कारकर्ताओंमें उनका विशिष्ट स्थान रहा है। अकालके समय राजस्थान तथा अन्यान्य प्रदेशोंमें गोवंशकी रक्षाकी व्यवस्था कर आपने अक्षय पुण्यलाभ किया। इसके साथ ही जन-सेवाका आयाम भी उनके हृदय-सा ही विशाल एवं व्यापक रहा है—कुष्ठरोगियोंकी चिकित्सा, मूक-बधिर बालकोंकी शिक्षा-व्यवस्था, देवालयों-भजनाश्रमोंकी स्थापना, लुप्तप्राय तीर्थों तथा ध्वस्त देवालयोंका पुनरुद्धार, विधवाओंकी वृत्ति-व्यवस्था, छात्रवृत्ति, असहाय रोगियोंकी चिकित्साका प्रबन्ध, अकाल-सेवा, बाढ़-सेवा, दैवी आपत्तियोंसे ग्रस्त मानवोंका उद्धार—ऐसे अगणित लोकोपकारी कार्योंके प्रेरक, आयोजक तथा सहायकके रूपमें वे आर्त-नारायणकी सेवामें संलग्न रहे हैं। उनके गुप्तदानकी अजस्र वर्षासे अनाथ और अपंग, कालचक्रसे पीड़ित धनी, विद्वान्, साधु-सन्त, साहित्यकार, सेवा-निवृत्त उच्च तथा निम्नपदस्थ कर्मचारी, राजनेता, समाजसेवी—सभी समान रूपसे तृप्त होते रहे हैं। अभावग्रस्त, दीन-दुःखीके लिए आपका द्वार सदैव खुला रहता।

जीवदया भाईजीकी प्रवृत्ति थी और सर्वभूतहित-साधना उनकी दृष्टिमें एकमात्र करणीय कर्म था। उन्होंने गीताकी लगभग दो करोड़ प्रतियाँ प्रकाशित कर योगेश्वरकी अमर वाणीको सुदूर देशों एवं प्रदेशोंमें पहुँचाकर निष्काम कर्मयोगके प्रति लोकमानसको उन्मुख करनेका ही प्रयास नहीं किया, गीताके तत्त्वज्ञानको अपनी जीवन-नौकाकी पतवार बनाकर स्वयंको भी उसी साँचेमें ढाला। उनकी राधा-माधवभक्तिका ऐकान्तिक आदर्श व्यष्टिरूपेण भावसमाधि एवं नामजप-साधना थी और समष्टिरूपेण जगत्-सेवा द्वारा अग-जगमय परमपुरुष और पराप्रकृतिकी अभ्यर्चना **स्वकर्मणा तमभ्यर्च्य सिद्धिं विन्दति मानवः** उनके जीवनसूत्रका संचालक महामन्त्र रहा है।

लोकमान्यतासे विरति

भाईजीकी जीवनव्यापी लोकसेवापर मुग्ध होकर समकालीन शासन, सामाजिक तथा तथा साहित्यिक संस्थाओंने उनके सम्मानके लिए समय-समयपर अनेक योजनाएँ बनायीं। लक्ष्मीपतियोंने अपने स्वरूपानुकूल उनके अभिनन्दनके लिए लाखों योजनाएँ तैयार कीं। किन्तु लोकेषणाका यह आकर्षक स्वरूप भी उन्हें अपने सिद्धान्तसे विचलित न कर सका। साहित्य-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कारोंने उनकी साहित्यिक सेवाओंके उपलक्ष्यमें अभिनन्दन-ग्रन्थ समर्पित करनेकी योजनाएँ प्रस्तुत, विज्ञप्त एवं प्रकाशित कीं, पर वे सभी उनके कड़े विरोधके कारण मन और वाणीकी सीमामें ही अवरुद्ध रह गयीं। व्यक्तित्वके विज्ञापनकी विदेशी पद्धति उन्हें भारतीय जीवन-दर्शनके विपरीत और साधनामार्गके नितान्त प्रतिकूल लगीं। अपने द्वारा किये गये किसी कर्मका किसी रूपमें प्रतिदान लेनेसे वे भागते रहे। अपनी दृष्टिसे उन्होंने ये सभी परोपकार कहे जानेवाले कर्म कर्तव्य समझकर किये—उनका उद्देश्य न इस लोकमें प्राप्य अभ्युदय रहा है, न परलोकमें अभीष्ट निःश्रेयस्। वे मात्र उस आराध्यकी प्रसन्नताके निमित्त किये गये हैं, जिसका स्पष्ट आदेश है : तदर्थं कर्म कौन्तेय मुक्तसङ्गः समाचार।

दो महान् प्रेरक

सेठ जयदयाल गोयन्दका और राधाबाबा पोद्दारजीके अन्यतर स्नेही एवं सुहृद् रहे हैं। सेठजीसे उनका परिचय बाल्य-जीवनसे ही कलकत्ता-वासके समय स्थापित हो गया था। वे सम्बन्धमें उनके मौसेरे भाई लगते थे। स्वदेशी-आन्दोलनमें कारागार तथा नजरबन्दीके समय उनके परिवारकी गोयन्दकाजी बड़ी तत्परतासे देखभाल करते थे। कलकत्ता-आगमनके अवसरपर उनके सत्संगका ये बराबर लाभ उठाते रहे। तभीसे सेठजीके आध्यात्मिक व्यक्तित्व-की उनपर गहरी छाप पड़ गयी। पीछे बम्बई-प्रवासमें भी ये यथावसर उनका सत्संग-लाभ करते रहे। फिर 'कल्याण' के प्रकाशन-कालसे तो ये दोनों व्यक्ति गीतोक्त निष्काम कर्मयोगके सिद्धान्तानुसार गीता-प्रेस और 'कल्याण' को आध्यात्मिक ज्योतिके उत्पादक एवं विकिरक केन्द्रबिन्दुके रूपमें प्रतिष्ठित करनेमें संलग्न हो गये। बीच-बीचमें यद्यपि भाईजीकी अन्तःप्रवृत्ति एकान्तसेवनके निमित्त गोरखपुर छोड़नेके लिए उद्दीप्त होती रही, किन्तु सेठजीका स्नेहबन्धन उन्हें 'कल्याण' और गीता-प्रेसके साहित्यिक मोहपाशमें बद्ध किये रहा। १९६५ ईसवीमें सेठजीका लोकान्तरण हो गया, तबसे सम्पादनके साथ ही प्रेसकी व्यवस्थाका भार भी आप पर आ पड़ा। अतः गीता-प्रेस और गोरखपुर छोड़कर कहीं बाहर जानेका प्रश्न सदाके लिए समाप्त हो गया।

भाईजीकी जीवन-यात्रामें राधाबाबाका आगमन बड़े ही चमत्कारिक रूपमें हुआ। उनका भी जीवन-प्रभात पोद्दारजीकी ही भाँति क्रान्तिकी रक्तिम किरणोंसे आलोकित रहा है। संवत् १९९३ में वे पहलीबार गोरखपुर आये। कुछ ही दिनोंके सम्पर्कसे उनका भाईजीके प्रति जन्म-जन्मान्तरका सख्यभाव उद्दीप्त हो उठा और फिर वह इस सीमातक पहुँच गया कि उनसे एक क्षणका भी वियोग इनके लिए अकल्पनीय हो गया। बाबा तत्त्ववेत्ता संन्यासी होनेके अतिरिक्त राधा-माधवकी भक्तिमें लीन रसिक भक्त भी हैं। 'कल्याण' में 'श्रीकृष्ण-लीला-चिन्तन' शीर्षकसे प्रकाशित भावपूर्ण लेख उनकी अन्तस्था रसात्मिका भक्तिके परिचायक हैं। वे साधनाक्रममें प्रायः मौनावलम्बनका अनुष्ठान करते रहते हैं। उस स्थितिमें केवल 'राधा' नाम उच्चारण करते हैं। इसीलिए इन्हें आश्रमवासी 'राधाबाबा' कहने लगे। फिर तो इसी नामसे उनकी लोकप्रसिद्धि हो गयी। पूर्वनाम 'चक्रधर' ऐश्वर्यपरक था। वह माधुर्यकी वेगवती धारामें विलीन-सा हो गया।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सन्ति सन्तः कियन्तः

आचार्य श्री सीताराम चतुर्वेदी

★

यह दैव-दुर्विपाक ही है कि निधनसे एक दिन पूर्व श्री चिमनलाल गोस्वामीजीकी सूचना प्रकाशित हुई थी कि श्री हनुमानप्रसाद पोद्दारजी, जिन्हें लोग परम आत्मीयता और अभिन्नताके नाते 'भाईजी' कहते थे, अब पहलेसे अच्छे हैं। किन्तु अगले ही दिन यह हृदयवेधक समाचार पत्रोंमें प्रकाशित हुआ कि वे अपना यशःशरीर और असंख्य स्नेही, आत्मीय सहयोगी बन्धुओंको विकल छोड़कर स्वर्गस्थ हो गये हैं। पोद्दारजी ही नहीं गये, उनके साथ एक आध्यात्मिक प्रेरणा-स्रोत, कर्मठताका सजीव पोत और सबको एक सूत्रमें बाँधकर संस्था चलानेवाला स्वयं संस्थान-रूप महामानव चला गया, जिसका स्थान लेनेवाला कोई दिखायी नहीं देता।

अध्ययनशीलता, निष्काम-निःस्पृह धर्म-सेवा, त्याग, तपस्या और सौजन्यकी वे साक्षात् प्रतिमूर्ति थे। उन्होंने जीवनभर अपने सम्बन्धमें कोई इच्छा, लालसा, आकांक्षा या भावनाको कोई स्थान नहीं दिया। इतना ही नहीं, दूसरे भी यदि उनकी महत्ताके प्रति आत्मीयतापूर्ण कृतज्ञता व्यक्त करनेका कोई व्यक्तिगत या सार्वजनिक आयोजन करनेका प्रयास करते थे तो वे सदा उससे अत्यन्त विनीत भावसे उपरत ही रहते थे। एकबार हम लोगोंने काशीमें उनका सार्वजनिक अभिनन्दन करनेका विराट् आयोजन किया। किन्तु जब-जब उसके लिए उनसे आग्रह किया गया तब-तब वे अपनी स्वाभाविक निर्लिप्तताके साथ उदासीनता ही व्यक्त करते रहे। 'नहीं' कर देनेसे हम लोगोंको बुरा न लगे और हमारा उत्साह न भंग हो, इस सौजन्यका निर्वाह करते हुए वे निरन्तर अत्यन्त मृदुतासे उसे टालते रहे। आज वह दिन आ गया है कि उस महापुरुषका अभिनन्दन करनेको नन्दन-वनका वृन्दारक-वृन्द नन्दित-आनन्दित हो रहा है।

पोद्दारजी साधु-पुरुष थे। अपने शरीरसे जितनी दूसरोंकी सेवा हो जाय, सहायता हो जाय, कल्याण हो जाय, उसे ही वे जीवनकी सार्थकता समझते थे। 'कल्याणके' द्वारा उन्होंने जितना जन-कल्याण किया, जितने अधीर, अशान्त, क्षुब्ध, शोकग्रस्त और चिन्तित पुरुषों और स्त्रियोंको मानसिक और आध्यात्मिक विश्रान्ति प्रदान की, वह अद्भुत साधना अत्यन्त असामान्य व्यक्तिके लिए भी दुर्लभ है। साधु या सन्तके लिए जो कहा गया है :

मनसि वचसि काये पुण्यपीयूषपूर्णा-
स्त्रिभुवनमुपकारश्रेणिभिः प्रीणयन्तः।
परगुणपरमाणून् पर्वतीकृत्य नित्यं
निजहृदि विकसन्तः सन्ति सन्तः कियन्तः॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

[जिनके मन, वचन और शरीरमें पुण्य (परोपकार) का अमृत लहरें मारता है, जो तीनों लोकोंको उपकारकी श्रेणियोंसे (निरन्तर उपकारसे) तृप्त करते रहते हैं और जो दूसरोंके छोटेसे भी गुणोंको पर्वतके समान विशाल बनाकर नित्य मन-ही-मन खिल पड़ते हैं, ऐसे सन्त संसारमें हैं कितने ?]—ऐसे ही सन्त थे पोद्दारजी !

किसीने उन्हें कभी किसीको कटु या अप्रिय वचन कहते नहीं सुना। मृदुता और सौम्यताकी वे श्लाघनीय विभूति थे। उनके संसर्गमें जो भी कभी आया, वह उनके आत्मीयता-पूर्ण सौजन्यसे प्रभावित हुए बिना नहीं रहा। इतना ही नहीं, वह यह विश्वास लेकर गया कि ये सचमुच मेरे परम आत्मीय हैं। उन्हें कभी किसी बातका पूर्वाग्रह, कदाग्रह या दुराग्रह नहीं था। वे सबके मतको भलीभाँति मथते थे, उसपर विचार तथा मनन करते थे, उसकी तात्त्विक मीमांसा करते थे और फिर तर्क, युक्ति तथा प्रमाणके आधारपर उसकी अत्यन्त विनीत और मृदु विवेचना करते थे। उनकी वाणी और लेखनीमें कटुता और तर्जनने कभी प्रवेश पानेकी धृष्टता नहीं की। इस सौजन्यके साथ ही उनमें अपरिमित विवेकशीलता विद्यमान थी, जिसके कारण वे कभी मनसे असन्तुलित नहीं हो पाये। वे कभी आवेग, उद्वेग, भावावेश और उत्तेजनाके आखेट नहीं हुए। महाकवि कालिदासके शब्दोंमें :

विकारहेतौ सति विक्रियन्ते येषां न चेतांसि त एव धीराः।

[विकारका कारण प्रस्तुत होनेपर भी जिनका मन विकृत नहीं होता, वे ही धीर पुरुष कहलाते हैं।] ऐसे ही धीर-पुरुष थे पोद्दारजी !

मन, वाणी, आहार-विहार और व्यवहार सबमें वे अत्यन्त सात्त्विक थे। उन्हें न किसी प्रकारका व्यसन था, न कोई रुचि ही। सीधी-सादी वेशभूषा और रहन-सहनके साथ उन्होंने सत्यनिष्ठ कर्मयोगीकी भाँति अनासक्त होकर कार्य किया। गीता-प्रेस चलाया, 'कल्याण'का संपादन किया, जब देशपर किसी प्रकारका संकट पड़ा तब-तब अत्यन्त तत्परता और सन्नद्धताके साथ बाढ़-पीड़ितों, भूकम्प-पीड़ितों, निराश्रितों, विप्लव-पीड़ितों, देशभक्तों और आर्तोंको उन्मुक्त हृदय और हस्तसे सब प्रकारकी सहायता पहुँचानेमें कभी आलस्य या शैथिल्य प्रदर्शित नहीं किया। चीन और पाकिस्तानने अत्यन्त क्षुद्रता और कायरताके साथ भारतपर सहसा आक्रमण किया था। उस समय देशके लिए युद्ध करनेवाले भारतीय सैनिकोंके लिए उन्होंने जो विशिष्ट सहायता भेजी थी, वह कृतज्ञता और सराहनाके साथ स्मरण की जाती है।

वे बड़े कुशल और विवेकशील लेखक थे। उन्होंने 'कल्याण'के माध्यमसे न जाने कितना लिखा, किन्तु कहीं शास्त्र और धर्मकी संयत मर्यादाओंका कभी उल्लङ्घन नहीं किया। वे पुराणपन्थी और कट्टरतावादी कभी नहीं रहे। भारतीय धर्म और सामाजिक शीलके प्रति उनकी सहज और सिद्ध निष्ठा थी, जिसमें किसी प्रकारकी कृत्रिमता और आडम्बर नहीं था। वे जो कुछ सत्य समझते थे, उसीका जीवनमें अनुभव करते थे और अपने लेखों तथा ग्रन्थोंमें उसीका समर्थन करते थे। अन्तः शाक्ताः बहिः शैवाः की बहुरूपिया-वृत्तिसे उन्हें स्वाभाविक विरक्ति थी। इसीलिए इस प्रकारकी प्रवृत्तिका न उन्होंने कभी स्वागत किया, न उसका समर्थन। वे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

शत-शत कोटि प्रणाम हमारे !

वैद्य श्री रामकृष्णवर्मा 'सुमन'

शत शत कोटि प्रणाम हमारे !
वसुन्धराके लाल अनोखे, ओ महान्, जन-जनके प्यारे ॥
कोटि-कोटि दुखियोंके आश्रय, निर्बलके बल एक सहारे।
धर्म सनातनके जीवन तुम, भक्तजनोंके प्राण - अधारे ॥
जगत्-पिताके पूत लाडले, भारत-माँके हृदय-दुलारे।
पर-दुख देखि द्रवित नित रहते, नेत्र सजल हरिनाम उचारे ॥
जगमें रहकर जगसे न्यारे, सरल भाव करुणा उर धारे।
कोटि-कोटि जन-मानसके तुम, पाप-पंकसे तारनहारे ॥
तीर्थरूप हैं देव अनूपम, प्रेम-गगनके चाँद उजारे।
गोरखपुरकी पुण्य - स्थलीमें, देने प्रभु-सन्देश पधारे ॥
डूबी हुई धर्म-नौकाके, निज करसे तुम तारनहारे।
दे 'कल्याण' सुदान धरा पै, नेह-सुधा बरसावन-वारे ॥
धन्य हुई यह धरा सुपावनि, जहाँ-जहाँ तुमने पग धारे।
हे युगपुरुष ! नमन चरणोंमें, करते जन-जन आज तुम्हारे ॥

●

मौन, शान्त और एकान्तवासी होकर जो कुछ सेवा कर गये, वह इस व्यस्त, कोलाहलपूर्ण युगमें एक व्यक्तिसे क्या, अनेक व्यक्तियोंसे भी नहीं हो सकती।

ऐसे बहुगुणसम्पन्न पुरुषके सहसा बीचसे उठ जानेसे विक्षोभ और व्याकुलता होना स्वाभाविक है। उनके उठ जानेसे जो विराट् रिक्तता उत्पन्न हो गयी है, वह कैसे भर पायेगी, यह भी अत्यन्त चिन्तनीय समस्या उठ खड़ी हुई है। संस्थाएँ चलती रहती हैं, चलती रहेंगी; किन्तु जो पुरुष अपने दिव्य सात्त्विक व्यक्तित्वसे उन संस्थाओंका आध्यात्मिक पोषण करके उन्हें ऊर्जस्विनी और वर्चस्विनी बनाये रखता है, उसका स्थान कोई शीघ्र नहीं ले पाता। किसी समाज, राष्ट्र, संस्था या जातिके इतिहासमें ऐसे अमृत-यशस्वी पुरुष कभी उसके भाग्यसे जन्म लेते हैं और उसे अपने सात्त्विक जीवनसे पुष्ट कर, अमृत पिलाकर तिरोहित हो जाते हैं।

ऐसा ही अनुपम व्यक्तित्व था श्री हनुमानप्रसाद पोद्दारजीका :

नैननमें जे सदा रहते तिनकी अब कान कहानी सुन्यौ करौं।

●

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हिन्दीकी मरुभूमिको उर्वरा बनानेवाले भगीरथ !

श्री कान्तानाथ पाण्डेय 'राजहंस'

★

एक स्वर्गिक ज्योति जगत्का आँगन आलोकित कर तिरोहित हो गयी। एक पारिजात-प्रसून अपनी सुगन्धसे दिगन्तको सुरभित कर मुरझा गया। एक भक्ति-संगीत मानवताके म्रियमाण प्राणोंको अमृत पिलाकर अनन्तमें विलीन हो गया!

"भाईजी" के नाम-रूपमें प्रसिद्ध करोड़ों आस्तिकों, भक्तों और श्रद्धालुओंके भजनीय हनुमानप्रसादजी पोद्दारके नामके पूर्व 'स्वर्गीय' शब्दका प्रयोग करते हुए जी न जाने कैसा हुआ जा रहा है।

पृथ्वीके लिए स्वर्गका सन्देश लेकर आये हुए थे वे। कोई योग-भ्रष्ट महर्षि—जिन्हें लोक-कल्याणके लिए मृत्युलोकमें अवतरित होना पड़ा था! साधारण जीवनके भीतर असाधारण शक्ति छिपाये वे एक आदर्श महामानव थे। सच्चे कर्मयोगी थे; ज्ञान और भक्तिके क्षेत्रोंमें उनकी साधना अद्वितीय थी। 'कल्याण' के द्वारा उन्होंने इस देशका ही नहीं, विदेशोंके भी असंख्य नर-नारियोंका 'कल्याण' किया है। धार्मिक-जगत्में उनकी यह लोक-सेवा अविस्मरणीय रहेगी।

पूज्य पोद्दारजीके पवित्र नाम और यशसे तो मैं बहुत पहलेसे ही परिचित था, परन्तु उनके पावन दर्शन मुझे सन् १९३८ ई० में गोरखपुरमें ही हुए। मैं वहाँ एक इण्टरमीडिएट कालेजमें प्रवक्ता पदपर नियुक्त होकर गया हुआ था। पोद्दारजीके निजी सचिव श्री देवधर शर्मासे मेरा पूर्व-परिचय था। कल्याण-परिवारके प्रमुख सदस्य पाण्डेय श्री रामनारायणदत्त शास्त्री भी मुझपर कृपा रखते थे। गोरखपुर जाकर मैं गीता-उद्यानमें ही ठहरा था। दस-बारह दिनोंतक वहींका आतिथ्य-लाभ किया और सबसे बढ़कर लाभ जो वहाँ मुझे मिला, वह था भाईजीका सान्निध्य। प्रथम दर्शन में ही लगा जैसे वे चिर-परिचित हैं, अपने ही हैं। कहीं कोई बनावट नहीं; कोई दुराव-छिपाव नहीं। उनके सत्संग तथा प्रवचनका मेरे जीवनपर जो प्रभाव पड़ा है, उसका मैं क्या वर्णन करूँ?

गोरखपुरमें जब मैंने किरायेका मकान ठीक कर लिया और काशीसे अपने परिवारको लिवा गया, तब जाते ही मेरी पत्नी अत्यधिक अस्वस्थ हो गयी। उस विपत्-कालमें पोद्दारजीकी प्रेरणा तथा सहायतासे उक्त नगरके प्रमुख चिकित्सक डॉ० लाहड़ी तथा अन्य अनेक डाक्टर-वैद्य बातकी बातमें मेरे यहाँ पहुँच गये और प्रभुकी कृपा तथा भाईजीके आशीर्वादसे मेरी पत्नीकी प्राण-रक्षा हो गयी।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सालभर बाद जब मैं काशीमें ही रहनेके विचारसे यहाँ लौट आया, तब भी भाईजी से दूर नहीं हो सका। समय-समयपर पत्र लिखकर उनसे अपनी कठिनाइयोंमें पथ-निर्देश प्राप्त करता रहा। भाईजी भी जब कभी काशी आते, उनके दर्शनका सुयोग मुझे मिल जाता।

साधु-सन्तों, गऊ-ब्राह्मणोंपर उनकी अडिग आस्था थी। मेरे पिताजी मेरे गोरखपुर-प्रवासके समय जब वहाँ गये थे, तब उन्होंने भी पोद्दारजीके दर्शनोंकी इच्छा प्रकट की थी। मैं उन्हें गीता-उद्यान लिवा गया। भाईजी उस समय अस्वस्थ रहते थे और किसीसे मिलते-जुलते भी नहीं थे। किन्तु वे बाहर आये और मेरे पिताजीका श्रद्धापूर्वक चरण-स्पर्श किया। मैं उनकी यह विनम्रता और श्रद्धालुता देखकर बहुत ही प्रभावित हुआ था।

गो-रक्षा-आन्दोलनमें उनको सक्रिय भूमिका इतिहासकी अमूल्य सामग्री होगी। आधुनिक हिन्दी-साहित्यकी मरुभूमिको भक्तिकी सुधासे सींचकर उर्वरा बनानेका भगीरथ-प्रयत्न उन्हींके बूतेकी बात थी। जीवन्मुक्तकी जीवन्मुक्तिके इस अवसरपर उनकी पवित्र स्मृतिको मेरे कोटि-कोटि प्रणाम!

श्री पोद्दारजीके कारण गांधीजी निश्चिन्त

बात सन् १९३२ की है। गांधीजीके सुपुत्र श्री देवदासजी गांधी गोरखपुर जिला-जेलमें कैद थे। ब्रिटिश-सरकारने उन्हें राजनैतिक कैदीके रूपमें जिला-जेलमें बन्द कर रखा था। जेलमें श्री देवदासजी अस्वस्थ हो गये, उनको टायफायडने घेर लिया। जेलके अधिकारी देवदासकी संभाल ठीक प्रकारसे कर सकेंगे, ऐसी आशा गांधीजीको नहीं थी, विश्वास करना तो बहुत दूरकी बात है। जेलमें जैसा ढंग, जैसी लापरवाहीपूर्ण व्यवस्था, कैदियोंकी उपेक्षा, चिकित्साकी न्यूनता आदि रहा करती है, इन सबसे गांधीजी पूर्णतः अवगत थे। अतः उन्होंने तुरन्त बाबूजीको लिखा कि देवदास गोरखपुर-जेलमें बीमार है, और उसकी देख-भालका, चिकित्सा आदिका सारा भार आपपर है।

गांधीजी उस समय यरवदा-जेलमें थे। वहाँसे गांधीजीका संकेत मिलना मात्र पर्याप्त था। प्रतिदिन जेलमें मिलना कानूनन सम्भव नहीं है, किन्तु पूज्य बाबूजीके प्रभाव एवं प्रयाससे वह भी सम्भव हो गया। बाबूजी प्रतिदिन देवदासजीकी संभल करने जाते तथा औषधि, अनुपान एवं अन्य आवश्यकताओंका सम्यक् प्रबन्ध करते। बाबूजीने सारी व्यवस्थाकी सूचना तार एवं पत्र द्वारा महात्मा गांधीजीको दी। गांधीजीने उत्तर-स्वरूप लिखा :

यरवदा-मन्दिर
भाई हनुमानप्रसाद, २१-७-'३२

आपका पत्र मिला और आज तार भी।···देवदासके लिए चिन्ता नहीं करूँगा, क्योंकि आप वहाँ है और देवदासने मुझको भी···(है)···कि आपने उससे बड़ा प्रेम किया था। डाक्टर तो अच्छा है ही। आपके पत्रको आजकल हमेशा आजकल प्रतीक्षा करता रहूँगा।

जो मनुष्य सांसारिक वस्तुकी प्राप्तिके लिए या और किसी कारण असत्यका सहारा लेता है, राग-द्वेषसे भरा है, उसको भगवत्प्राप्ति हो ही नहीं सकती है। —बापूके आशीर्वाद

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

महान् देवात्मा—पूज्य भाईजी

पद्मभूषण सेठ श्री मुंगतूराम जैपुरिया

हिन्दू-धर्म और संस्कृतिके महान् उन्नायक, लक्ष-लक्ष धर्मपरायण जनताकी श्रद्धाके मूर्तिमान् प्रतीक, हिन्दी, संस्कृत, गुजराती, बंगला, अंग्रेजी तथा अनेक भारतीय भाषाओंके प्रकाण्ड विद्वान् एवम् अनेक उत्कृष्ट धार्मिक पुस्तकोंके प्रणेता, सुप्रसिद्ध पत्र 'कल्याण' मासिकके यशस्वी सम्पादक, प्रातःस्मरणीय परमपूज्य भाईजी (श्रद्धेय श्री हनुमानप्रसादजी पोद्दार) श्री राधा-माधवके युगल-पदाम्बुजोंमें लीन हो गये। उनके गोलोक-वाससे हिन्दू-जगत् और सनातन-धर्मकी जो महान् क्षति हुई है, उसकी पूर्ति होना असम्भव लगता है। मेरे जैसे उनके असंख्य श्रद्धालु, विनीत प्रेमी इस समाचारसे सचमुच मर्माहत हो उठे हैं। ज्ञान, कर्म और भक्तिकी परम पवित्र त्रिवेणीमें आप्लावित उस पुण्यात्माको हम किन शब्दोंमें श्रद्धांजलि अर्पित करें ? यद्यपि मानवका नश्वर तन धारण करके वे इस असार संसारमें उपस्थित हुए, किन्तु उनमें सचमुच एक महान् देवात्माका वास था। वे हमारे बीच पारस-मणिकी भाँति ज्योतित थे, जिनके परम मृदुल स्वभाव और करुणा-विगलित व्यक्तित्वका आकर्षण सभीको सम्मोहित कर लेता था।

परम-पूज्य नित्यलीलालीन भाईजी आयुमें मुझसे करीब दस वर्ष बड़े थे। प्रथम महायुद्धके समय जब कलकत्तेमें उन्होंने एक क्रान्तिकारीके रूपमें अपने जीवनका प्रारम्भ किया था, तभीसे मैं उनके निकट सम्पर्कमें आया। सन् १९१६ में देशके स्वतन्त्रता-आन्दोलनमें उन्होंने निर्भीकतापूर्वक भाग लिया। ब्रिटिश-सरकारने उन्हें गिरफ्तार कर अलीपुर-जेलमें ठूँस दिया। वहाँ जेल-अधिकारियोंने उनपर नाना प्रकारके असहनीय अत्याचार किये। जेलमें कुछ अवधितक रखनेके बाद अँग्रेजी सरकारने पश्चिमी बंगालके बांकुड़ा जिलेके सुदूर अंचल शिमलापाल नामक ग्राममें उन्हें नजरबन्द कर दिया। इक्कीस मासकी नजरबन्दीके बाद जब जेलसे छूटकर पूज्य भाईजी बाहर आये, तो सन् १९१८ में उन्हें ब्रिटिश हुकूमतने बंगालसे निष्कासित कर दिया। यह नजरबन्दी उनके भावी जीवन और सम्पूर्ण हिन्दू-जगत्के लिए गहरा वरदान सिद्ध हुई, क्योंकि यहीं एकान्तमें उन्हें भारतीय दर्शन, अध्यात्म-साधना और-शास्त्रोंके अध्ययन करनेका सुनहला अवसर प्राप्त हुआ। इसके पश्चात् पूज्य भाईजी कुछ दिनों बाद बम्बई चले गये और प्रसिद्ध फर्म ताराचन्द घनश्यामदासजीके साथ शेयरोंका व्यवसाय करने लगे। व्यावसायिक कार्योंके प्रति उनमें विरक्ति उत्पन्न हो गयी और ब्रह्मलीन परमपूज्य श्री जयदयालजी गोयन्दकाकी प्रेरणासे सन् १९२६ में उन्होंने बम्बईके प्रमुख प्रकाशन-संस्थान खेमराज श्रीकृष्णदासके प्रेससे सनातन-धर्मके व्यापक प्रचार-प्रसारके उद्देश्यको लेकर 'कल्याण' मासिकपत्रका प्रकाशन प्रारम्भ कर दिया, जिसकी अन्ततक वे सेवा करते रहे।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अवश्य ही कल्याणके प्रकाशनकी बात सुझावके रूपमें सर्वप्रथम श्री घनश्यामदासजी बिड़लाने 'मारवाड़ी अग्रवाल महासभा'के दिल्ली-अधिवेशनके समय कही थी। विश्वभरमें हिन्दू-धर्मकी विजय-पताकाको फहराने एवं सनातन-धर्मकी उत्कृष्ट विचार-धाराके प्रति विश्वभरका ध्यान आकृष्ट करनेमें 'कल्याण'का कितना महान् योग-दान रहा है, यह हम सभी जानते हैं। बंगालमें बांकुड़ा जिलेके प्रसिद्ध व्यवसायी ब्रह्मलीन सेठ जयदयालजी गोयन्दका परम तत्त्व-निष्ठ व्यक्ति थे। वे पूज्य भाईजीको बम्बईसे गोरखपुर ले आये। गोरखपुरमें इस समय गीता-प्रेसकी स्थापना हो चुकी थी और इसके द्वारा धार्मिक-जगत्‌में पूज्य भाईजीने जो ठोस और महत्त्वपूर्ण कार्य किया, उसीके फलस्वरूप वे समस्त धार्मिक-जगत्‌की श्रद्धा और प्रेमके पात्र बन गये। चौबीसों घण्टे अनवरत रूपसे प्रभुके चरण-कमलोंमें ध्यान-मग्न रहनेवाले पूज्य भाईजी अपनी दिनचर्या एवं लोक-व्यवहारके काम-काज सदैव सहज एवं सामान्य रूपसे करते रहते थे। वे किसीको भी अभाव-ग्रस्त एवं दुखी नहीं देख सकते थे। विनम्रता और सादगी तो जैसे उनके रोम-रोममें समायी हुई थी। उनके जैसा मृदुभाषी, सदाशयी, व्रतनिष्ठ और सर्वप्रिय व्यक्तित्व अनास्थाके इस युगमें शायद ही कहीं देखनेको प्राप्त हो।

मारवाड़ी-समाजके तो वे महान् जातिगौरव ही थे। उन्होंने अनेक छोटे-बड़े उद्योग-पतियों, व्यवसायियोंके हृदयमें धर्म-कर्म, परमार्थ एवं परोपकार तथा दानशीलताके प्रति गहरी रुचिको जन्म दिया। वे हमारे समाजमें निःस्वार्थ सेवा-भावके ज्वलन्त प्रतीक थे। कलकत्तेकी सुप्रसिद्ध संस्था 'मारवाड़ी-साहित्य-समिति', जो बादमें 'मारवाड़ी-रिलीफ सोसाइटी' के नामसे प्रचलित हुई, के संस्थापकोंमें से थे। मारवाड़ी-समाजके दोनों ही उन्नायकों, भाई घनश्यामदासजी बिड़ला एवं पूज्य भाईजीके बीच गहरी आत्मीयता और मैत्री व्याप्त थी। श्रद्धेय भाईजी बिड़लाजीको सदैव 'घनश्याम' कहकर ही सम्बुद्ध करते रहे और इसी भाँति बिड़लाजी भी उन्हें 'हनुमान' कहकर ही सम्बुद्ध करते थे। शेष सभी समवयस्क मित्र आपसमें 'जी'का आदर-सूचक सम्बोधन लगाते थे।

मुझपर तो पूज्य भाईजीका प्रारम्भसे ही अत्यन्त स्नेह और प्रेम-भाव रहा। हमारे परिवारके सुख-दुःख आदि जाननेके लिए वे सदैव व्यग्र रहा करते थे। तीन-चार वर्ष पूर्व जब चारों धामोंमें वेद-भवन स्थापित करनेके लिए बातचीत चली, तो उन्होंने मुझे उक्त कार्यके लिए निर्मित ट्रस्टका कोषाध्यक्ष बननेका आदेश दिया, जिसे मैंने सहर्ष स्वीकार कर लिया। उनकी प्रत्येक आज्ञा, प्रत्येक आदेशका पालन करनेमें मैं अपना अहोभाग्य समझता था। उनके देहावसानसे मेरे जैसे अनेक श्रद्धालु, प्रेमी भक्त अत्यन्त मर्माहत हैं। किन्तु इसे परम-पिता प्रभुकी इच्छा समझकर धैर्य धारण करनेके अतिरिक्त हमारे पास अन्य अवलम्ब ही क्या है? हम उनके चरण-चिह्नोंपर चलकर स्वयंको उनके सुयोग्य अनुयायी कहलानेके योग्य बना सकें, इससे बढ़कर पूज्य भाईजीके प्रति हमारी सच्ची श्रद्धांजलि और क्या हो सकती है? पूज्य भाईजीका भौतिक शरीर अब हमारे बीच नहीं रहा, किन्तु उनका यशःशरीर ज्योतित और जाग्रत रूपमें हमारे बीच विद्यमान है ही।

●

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जिस गागरमें गुणोंका सागर भर गया !

श्री शिवनाथ दुबे

क्या पता कि पूज्य भाईजीकी ७८वीं जन्मतिथिपर लिखा यह लेख उनके लिए श्रद्धाञ्जलिके काम आयेगा ! आज उनके विरहमें वाणी मूक है और लेखनी अवरुद्ध है, इसलिए विवशतः इसे ही श्रद्धाञ्जलिका उपकरण बनाना पड़ रहा है । हम कल्याण-सम्पादकीय-विभाग सदस्योंके प्राणाधार इस महामानवमें गुणोंका सागर गागरमें भर जानेकी कविप्रौढोक्ति स्वतःसंभवी अर्थका मूर्तरूप ले रही है । उनके एक-एक भी गुणका हमने अपने जीवनमें अनुकरण किया तो वही उनके प्रति सच्ची श्रद्धाञ्जलि होगी ।

'आप डाक्टर साहबको नहीं जानते भाईजी !—भारतके राष्ट्रपति देशरत्न डॉ० राजेन्द्रप्रसादजीके जीवन-कालमें उनके चरित्रपर लांछन लगाते हुए एक व्यक्तिने पोद्दारजीसे कहा—'उन्होंने एक······'

'एक डिठौना रहना चाहिए ।'—बीच ही में उनकी बात काटकर पोद्दारजीने तुरन्त उत्तर दिया—'नहीं तो उनमें इतने सद्गुण हैं कि कहीं नजर न लग जाय ।'

परदोष-दर्शन तो दूर, किसीकी निन्दा भी सह लेना आपके वशकी बात नहीं । किन्तु अपना दोष बतानेवालेका उपकृत होना, उसका आभार स्वीकार करना इनका सहज गुण ही नहीं, स्वभाव भी है । बहुत वर्ष पूर्व आपको अपने एक मित्रके द्वारा सूचना मिली कि किसीने एक पुस्तकमें इनकी कुछ आलोचना की है । आपने उक्त मित्रको तुरन्त लिखा :

"आपके कथनानुसार पुस्तकमें यदि मुझपर कटाक्ष किये गये हैं तो इसमें आपत्तिकी कौन-सी बात है ? यदि आलोचकने कोई सच्चा दोष दिखलाया होगा तो वह मुझपर उसका उपकार ही मानना चाहिए ।···यदि उसने कहीं अनुचित और मिथ्या आक्षेप किया हो तो बेचारा भ्रममें है । परमात्मा उसकी भ्रम-भरी बुद्धिको शुद्ध करें ।'

निश्चय ही उत्तर प्रदेशका सौभाग्य है कि राजस्थानके इस सत्पुरुषने अपना कार्यक्षेत्र यहाँ बनाया । संवत् १९४९ वि० की आश्विन कृष्णा द्वादशीको इन्होंने असम प्रान्तके शिलांगमें

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भीमराज पोद्दारजी धर्मपत्नी रिखीबाईकी कोखसे जन्म लिया और दो ही वर्ष बाद माताका शरीरान्त हो गया। धर्मपरायणा पितामहीने इनका लालन-पालन किया। पितामहीके ईश्वर-विश्वास, भजन, सत्संग एवं दान-दयाकी अमिट छाप इनके जीवनपर पड़ती रही। संवत् १९५३ वि० के असमके भूकम्पमें ये एक मकानके नीचे दब गये, किन्तु भगवत्कृपासे बाल-बाल बचे।

संवत् १९६२ वि० में लार्ड कर्जनने बंग-विच्छेदकी घोषणा कर दी। फलस्वरूप देशमें स्वदेशी-आन्दोलन आँधीकी तरह फैल गया। उस समय पोद्दारजीने भी स्वदेशी वस्त्र-धारणका संकल्प लिया और आजतक ये शुद्ध खादीके वस्त्रोंका व्यवहार करते हैं।

उदारता और प्रेमके मूर्तिमान् स्वरूप पोद्दारजीमें दया तो कूट-कूटकर भरी है। यह आध्यात्मिक साधना एवं भगवद्-अनुग्रहका ही परिणाम है कि वे कभी किसी भी प्राणीको मनसे भी क्लेश पहुँचानेकी कल्पना नहीं कर पाते। एक शायरका कथन है :

फजलो हुनर बड़ोंके गर तुममें हो तो जानें।
गर यह नहीं तो बाबा वह सब कहानियाँ हैं॥

सत्य भी है, आदर्श ग्रन्थों एवं महापुरुषोंकी आदर्श वाणियोंका उल्लेख तो अधिक लोग करते देखे जाते हैं; किन्तु वे गुण उनमें भी रहें, इसकी आवश्यकता कम लोग ही समझ पाते हैं। किन्तु वर्षोंतक अत्यन्त सूक्ष्म दृष्टिसे पोद्दारजीके जीवन-चरित्रका अवलोकन करनेवाले इसी निष्कर्षपर पहुँचे हैं कि वे जो कुछ प्रवचनोंमें कहते अथवा लेखोंमें लिखते आये हैं, सब कुछ उनके जीवनमें विद्यमान हैं। जो जीवनमें नहीं, वह उनकी वाणीमें नहीं, लेखनीमें नहीं। उनका कथन है कि 'एक परमोज्ज्वल चरित्र-सम्पन्न मौनी महापुरुषसे देश और समाजका जितना लाभ होता है, उतना शत-शत (चरित्रके अभावमें) वक्ता और लेखकका प्रभाव नहीं पड़ता।'

पोद्दारजीकी अत्यन्त कोमल-प्रकृति, ईश्वर-विश्वास, हृदयकी पवित्रता, जीवनमें संयम, क्षमा, सहिष्णुता, सादगी, सत्य और ईमानदारी प्रभृति अद्भुत गुणोंके कारण एक-दो और दस-पाँच ही नहीं, शत-शत पुरुषोंने इन्हें अपनी श्रद्धा ही समर्पित नहीं की, इनके द्वारा अपने जीवनका निर्माण भी किया है। एक सज्जन तो अपने अन्तिम श्वासतक इनके जीवनकी छोटी-छोटी-सी घटनाओं एवं पत्रोंका संकलन करते रहे। उनके कथनानुसार पोद्दारजीके संगसे उन्हें अकथनीय लाभ हुआ था। जो भी हो :

दिलोंमें करते जो उल्फतसे हैं जहाँदारी।
जहाँको एक नजरमें गुलाम करते हैं॥

पोद्दारजीने अपने प्रेमके प्रभावसे अनेक प्रान्तोंके सहस्र-सहस्र व्यक्तियोंको अपना बना लिया है। गांधीजी जैसे राष्ट्रपुरुष, महामना मालवीय जैसे महान् पुरुष, रफी अहमद किदवाई और गोविन्दवल्लभ पन्त जैसे तेजस्वी नेता, पं० लक्ष्मण नारायण गर्दे और बाबूराव विष्णु

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पराड़कर जैसे विद्वान् पत्रकार तथा वर्तमान कालके विद्वानों, व्यापारियों एवं साधारणसे-साधारण व्यक्तिके भी वे प्रीतभाजन रह चुके और हैं। इनसे मिलनेवाला अनुभव करता है कि एक आदर्श महापुरुषसे मिलकर मैं कृतार्थ हुआ। सरल इतने कि एक बच्चा भी इन्हें छेड़ ले, पर अपने सिद्धान्तके कट्टर भी इतने कि किसी प्रकार भी विचलित नहीं। प्रेम तो जैसे इनकी धमनियोंमें बह रहा है। इनके प्रेमी (और किसीको नष्ट न पहुँचे, इस) स्वभावके सम्बन्धमें एक घटनाका उल्लेख कर देना अप्रासंगिक न होगा।

एक सज्जनने आकर मुझसे अपनी व्यथा-कथा कही। वे पोद्दारजीसे मिल पाते तो उनका कष्ट दूर हो जानेका उन्हें विश्वास था। अत्यधिक व्यस्तताके कारण पोद्दारजीके लिए उस समय किसीसे मिलना बड़ा कठिन था। उन्होंने मुझसे सहायताकी प्रार्थना की। पोद्दारजीकी स्थिति मैं जानता था। वे व्यस्त ही नहीं थे, उनका स्वास्थ्य भी कुछ शिथिल था और शायद उनका अभीष्ट भी सिद्ध न होता। किन्तु मैंने उस सज्जनकी करुण-गाथा सुनकर विनोदमें कह दिया : 'यदि आप एक अभिनय करें तो शायद आपका कुछ काम बन जाय।'

'क्या ?'—बड़ी उत्सुकतासे उन्होंने पूछा।

'यदि आप किसी प्रकार पोद्दारजी तक अपनी तीव्र नाराजगी प्रकट कर सकें तो शायद कुछ काम बने।'

दूसरे दिन वे मुझसे मिले तो प्रसन्न थे। बोले : 'मैंने कल एक बन्द पत्र उनके पास भिजवा दिया और उसमें आपके बताये अस्त्रका उपयोग था। मैंने यह भी लिख दिया था कि कल एक बार और आऊँगा।···और आज आते ही उनके दर्शन मिल गये।···चलते-चलते उन्होंने बड़ी प्रसन्नतासे कहा : 'पोद्दारजी मनुष्य नहीं, देवता हैं। आजके युगमें ऐसे पुरुष देखनेमें नहीं आते।'

'भाईजी' इस मधुर, प्रेमपूरित नामसे प्रख्यात हैं पोद्दारजी। सहोदर भाईका प्यार और गहन आत्मीयता पायेंगे आप उनसे मिलकर। इस कारण यह नाम उनके लिए अक्षरशः यथार्थ ही है। आजकी शिक्षा, आजका समुदाय और आजका वातावरण देखनेपर विश्वास करना कठिन है, पर सत्य है कि वे विश्वके प्रति गम्भीर सहानुभूति, प्राणिमात्रके लिए आत्मीयता और सबके प्रति प्यार एवं शुभ-भावना अपने हृदयमें संजोये रहते हैं। कण-कणमें व्याप्त, सर्वान्तिर्यामी, करुणामय परमात्माके पथपर जीवन समर्पित करनेवाले सच्चे व्यक्तिका यही सहज स्वभाव होता है। इसे परमार्थ-पथके पथिक ही समझ पाते हैं, किन्तु ऐसे पुरुषोंसे हित-साधन तो सभीका होता है—प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष।

पोद्दारजी आदर्श गृहस्थ हैं; किन्तु सच्चे अथमें साधु पुरुष भी हैं। आप इनके निकटस्थ वातावरणपर दृष्टिपात करें तो यह कथन सर्वथा सत्य पायेंगे। भजन, सत्संग, भगवन्नाम-कीर्तन, परहित-चिन्तन, बाढ़, सूखा, 'जलाभाव, गायोंकी विपदाएँ, दीन-अनाथ छात्रों और विधवाओंकी सेवा-सहायता जीवनभर यही करते आये हैं और यथाशक्य आज भी कर रहे हैं। किन्तु भगवद्भक्त होनेके कारण इन्हें इसके प्रतिदानमें यश और कीर्तिकी कामना नहीं। विभिन्न रूपोंमें श्रीभगवान्की यत्किंचित् सेवा इस नश्वर कायासे बन जाय—उद्देश्य यही रहता

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

है। विद्वान्, त्यागी, सत्पुरुष एवं साधु-संन्यासियोंसे ये जीवनभर घिरे रहे। एक संन्यासी तो सदा ही इनके साथ रहते हैं। आजीवन प्रेमपूर्वक किसीका निर्वाह किस प्रकार किया जाता है, यह वात पोद्दारजीके द्वारा ही सीखी जा सकती है।

यौवनके प्रवेशमें इन्होंने वर्दवानके वाढ़-पीड़ितोंकी सेवा तन-मनसे की थी। संवत् १९६३ वि० में इनसे जयदयाल गोयन्दकासे भेंट हुई थी और उन्होंने इस सत्पात्रसे यही कहा था : 'देख, संसारमें जिस कामके लिए आना हुआ है, उसे सवसे पहले कर लेना चाहिए और वह काम है 'श्रीभगवान्का दर्शन करना।' इनके उर्वर हृत्क्षेत्रमें वह वीज उत्तरोत्तर पल्लवित-पुष्पित होता गया। अनेक वार तो ये संन्यास-ग्रहण करनेके लिए भी आतुर हो उठे।

किन्तु कलकत्तेमें व्यापारके साथ इन्होंने राजनीतिमें भी भाग लिया था। संवत् १९७१-७२ वि० में महामना मालवीयजी कलकत्ता पधारे तो उनसे घनिष्ठता स्थापित हो गयी और मालवीयजीके अन्तिम क्षण तक ये उनके परिवारमें सदस्यके रूपमें बने रहे। महामनाकी परलोक-यात्राके समाचारसे भाईजी व्यथित ही नहीं हुए. उनका चित्त अशांत हो गया था। जिन कारणोंसे महामनाके सुकोमल मनपर आघात पहुँचा था, उनके श्राद्धोपलक्ष्य-पर 'कल्याण' का एक पूरा अंक ही प्रकाशित कर दिया। उस अंकके मुखपृष्ठपर शंख और कोड़का चित्र अंकित था। उस अंकको हमारी सरकारने जब्त कर लिया।

राजनीतिमें भाग लेनेसे इनकी दूकानदारी शिथिल होने लगी थी। यही नहीं, कुछ ऋण भी हो गया, पर स्वातन्त्र्योन्मादमें यह सव किसे सूझता है? संवत् १९७२ वि० में गांधीजी रंगूनसे कलकत्ता पधारे। भाईजीने उन्हें मान-पत्र समर्पित किया और उसके अनन्तर ये गांधीजीके आत्मीय जनोंमें बने रहे।

राजनीतिमें अत्यधिक भाग लेनेपर विदेशी सरकारकी दृष्टि इनपर पड़ी और ये संवत् १९७२ वि० की श्रावण पंचमीको वन्दी वना लिये गये। कुछ दिन डेलेण्डर-हाउसमें रखनेके बाद ये अलीपुर सेण्ट्रल-जेलमें भेज दिये गये। वन्दी-जीवनमें आपने खूब भगवन्नाम-जप किया और उसका सुफल भी इन्हें देखनेमें आया। इसके बाद ये अनिश्चित कालके लिए नजरवन्द करके बांकुड़ा (वंगाल) से अठारह कोस दूर शिमलापाल नामक ग्राममें भेज दिये गये। वहाँ भगवन्नाम-जप, वंगलामें पुराण और उपनिषदादि ग्रन्थोंका अध्ययन करते हुए होमियोपैथिक औषधियोंके माध्यमसे ग्रामवासियोंकी अत्यन्त लगनसे सेवा-सहायता भी करते रहे। उस समय सरकारी भयसे इनका कोई मित्र भी इनसे सम्पर्क नहीं रखना चाहता था। परिवार भी दूर था। इस प्रकार साढ़े उन्नीस मास वाद ये वंगालसे निर्वासित कर दिये गये। इनके लिए सरकारी आदेशानुसार वंगाल प्रवेश भी निषिद्ध था। शिमलापालसे प्रस्थित होते समय ग्रामवासियोंको आँखोंमें आँसू आ गये। उन्हें ऐसा निःस्वार्थ भाई और सेवक कहाँ मिलता?

भाईजी अव अपनी मातृभूमि रतनगढ़ (चूरू) पहुँचे तो जमनालाल वजाजके बुलानेपर वम्वई चले गये। वहाँसे पं० मोतीलाल नेहरूके सभापतित्वमें होनेवाले कांग्रेसके अमृतसर-अधिवेशनमें, लाला लाजपतरायके सभापतित्वमें होनेवाले अधिवेशनमें तथा संवत् १९७७ वि० के हकीम अजमल खाँके सभापतित्वमें कांग्रेसके अधिवेशनमें सम्मिलित होते रहे। यद्यपि ये

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अनुयायी थे गरम-दलके नेता लोकमान्य तिलकके। संवत् १९७७ वि० में अ० भा० हिन्दू-महासभाके द्वितीय अधिवेशन बम्बईमें तथा संवत् १९७८ वि० में कलकत्तेके तृतीय अधिवेशनमें और संवत् १९७९ वि० में होनेवाले अधिवेशनमें आपने बहुमूल्य सेवाएँ कीं।

हिन्दू-धर्मके पवित्र संस्कार एवं ईश्वरपर अडिग विश्वासके कारण इन्हें प्रत्येक शुभा-शुभ घटनाओंमें मंगलमय प्रभुका ही वरदस्त दीखता था और आज भी दीखता है। जो भी हुआ, उसमें 'कितनी भगवत्कृपा थी' इस बुद्धि-विचारसे इनका मन उत्तरोत्तर परमार्थोन्मुख होता गया और जीवनमें ऐसी घटनाएँ भी प्रत्यक्ष होती गयीं, जिनसे परलोक एवं श्राद्धादि कर्मोंपर इनका दृढ़ विश्वास बढ़ने लगा। इसी कारण संवत् १९७९ वि० में बम्बईमें सत्संग-भवनकी स्थापना, गीता-रामायणके प्रवचन, रामनवमी और जन्माष्टमीपर बृहद् नगर-कीर्तन आदिके कार्यक्रम चलने लगे और श्रावण कृष्ण ११ संवत् १९८३ वि० के दिन मासिक 'कल्याण' का जन्म हुआ। तबसे अबतक ये उसका सफलतापूर्वक सम्पादन करते आ रहे हैं। 'कल्याण' के एक-एक विशेषांक अपने-अपने विषयोंकी विपुल सामग्रियोंसे पूर्ण एक-एक अत्यन्त उपयोगी स्तम्भ सिद्ध हो चुके हैं। गीता-प्रेसके इस प्रकाशनसे कितना उपकार हुआ है, यह हिन्दू-मात्रको विदित है।

भाईजी कट्टर सनातनधर्मी पुरुष हैं, किन्तु सभी धर्मोंका समान रूपसे आदर करते हैं। अभी कुछ दिनों पूर्व तक महात्मा ईसाका चित्र इनके कमरेमें टँगा था। इन पंक्तियोंके लेखकने देखा है कि ऋषिकेशके गीताभवनमें होनेवाले सत्संगमें उच्च मंचपर संन्यासी-महात्माओंके साथ पोद्दारजीने एक विद्वान् मुसलमानको बिठा रखा था और वे गीतापर प्रवचन कर रहे थे। अपने जीवनके प्रारम्भसे अबतक अपने वैयक्तिक एवं सामाजिक जीवनमें भाईजीने देश, समाज, एवं हिन्दू-जातिकी अमूल्य सेवा की है और कर रहे हैं। किन्तु अब इनका शरीर रुग्ण रहने लगा है और अत्यधिक दुर्बल हो गये हैं। आजसे दो वर्ष पूर्व २४-९-'६७ को इन्होंने अपने नागपुरके एक मित्रको अपनी स्थितिके सम्बन्धमें लिखा था :

'मेरी तो यह स्थिति है कि इच्छा होनेपर भी काम नहीं कर पा रहा हूँ। मतिष्ककी भी दशा उत्तरोत्तर असंतुलित होती जा रही है। किवाड़ बन्द किये अकेला पड़ा रहता हूँ, तब तो ठीक मालूम होता है। किसीसे भी मिलने-जुलने, (घरवालोंसे भी) और पत्र-व्यवहार करनेमें असमर्थ-सा हो रहा हूँ। सद्भाव रखनेवाले लोग अच्छी आशासे ही आते हैं, पत्र लिखते हैं। सभी भगवान्के रूप हैं। सबका आदर करना चाहिए, पर संसारकी बातोंको ग्रहण करनेके लिए मनको मानो लकवा-सा मार गया है। न ठीक उत्तर दे पाता हूँ, न उनकी बात अच्छी लगती है।'

आज यह स्थिति अधिक हो गयी है। भाईजीने अपने शरीरके कण-कण और समयके क्षण-क्षणका भरपूर सदुपयोग किया है। उन्होंने अपने जीवनमें सत्य, दया, क्षमा. सेवा, उपकार एवं भगवद्भजनको सरल बना लिया। ऐसे सत्पुरुषका जीवन हम सबके लिए सदा बहुमूल्य एवं उपयोगी है।

•

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

परम भागवतकी यह अनहोनी शादी !

श्री रामलाल

★

परम भागवत भाईजी हनुमानप्रसाद पोद्दार पंचतत्त्वोंसे रचित शरीरसे बाहर निकलकर आसीन परमात्मामें अभिव्यक्त अथवा स्वस्थ हो गये। उन्होंने संवत् १९४९ वि० की आश्विन-कृष्ण द्वादशीको यह शरीर अपनाया था और विश्व-विख्यात मासिक 'कल्याण' के यशस्वी सम्पादकके रूपमें संवत् २०२७ वि० की चैत्रकृष्ण दशमीको आठ बजे सवेरे मृत्यु-विजयकर अमरतामें समाधिस्थ हो गये।

पोद्दारजीकी महाभिनिष्क्रमण-तिथिके तीन-चार दिन पहले की बात है। दोपहरका समय था। वातावरण 'हरे राम···हरे कृष्ण' के कीर्तनकी रसमयी स्वर-लहरीमें आत्मविभोर था। मैं अपने सम्पादन-विभागवाले आफिससे पोद्दारजीके निवास-स्थानकी ओर जा रहा था कि गीता-उद्यानके बाहरी फाटकपर एक बुढ़िया बैठी दीख पड़ी। वह अस्सी सालसे आगे थी, बुढ़ापेके कारण थर-थर काँप रही थी। उसने पूछा : 'शादी हो रही है क्या, किनकी बारात है ?'

मैं उसकी बातसे सन्न हो गया। लोग बड़ी संख्यामें कलकत्ता, बम्बई, देहली आदि नगरों तथा उनके निवासस्थान रतनगढ़से उन्हे देखने आये थे। चारों ओर बगीचामें ही लोग उनके स्वस्थ हो जानेके लिए पाठ कर रहे थे, कीर्तन कर रहे थे। बुढ़िया मेरी ओर देखने लगी। न मैं ठहर सका, न जवाब दे सका। शादी ही तो थी ! मैं आगे बढ़ गया, नयनोंसे जलकण टपक पड़े।

मुझे पोद्दारजीके साथ पचीस साल 'कल्याण' के सम्पादन-विभागमें काम करते हो गये और अब···? मनने कहा : 'अब पोद्दारजी नहीं, उनकी कहानी रह जायगी।' मैं तत्काल उनके कमरेमें गया। वे वेदनाकी गहरी नींदमें सो रहे थे। लोग पलंगके आस-पास बैठकर दवा-सेवाकी चिन्तामें लीन थे।

करुण दृश्य था, उनकी शादी होनेवाली थी न ! मृत्यु सहेली बनकर उन्हें प्रियतमके रमणीय निकुञ्जमें ले जानेका सौभाग्य चाहती थी। मुझे सन्त कबीरका पद याद आ गया :

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जियरा जाहिगो मैं जाना।
जो देख्या सो वहुरि न पेख्यां
माटी सूं लपटाना॥

मृत्यु परीक्षा कर रही थी महामानव पोद्दारजीकी, प्रियतम परमात्माके साथ मांगलिक परिणय-तिथि की। नैहर छूटनेका समय आनेवाला था। ससुरालसे कहार डोली लेकर चल पड़े थे।

हरि मेरा पीव माई, हरि मेरा पीव।
हरि बिन रह न सकै मेरा जीव॥
हरि मेरा पीव मैं हरि की बहुरिया
राम बड़े मैं छुटक लहुरिया॥
किया श्रृंगार मिलन कै ताईं
काहे न मिलौ राजा राम गुसाईं।
अब की वेर मिलन जो पाऊँ।
कहै 'कबीर' भौ-जल नहिं आऊँ॥

प्रियतमसे मिलनेका समय आ गया। बारात तो पहले ही आ गयी। कहारोंने दरवाजेपर डोली रख दी। अविनाशी पुरुषका विवाह था यह! आत्मा अपने स्वामी परमात्माके नगर, महल, बाजार, सड़क, उपवन, राग-रंग आदिके चिन्तन-आनन्दसागरमें हाथमें सिहोरा लेकर जानेका लग्न विचार रहा था। उर-अन्तरकी शहनाई बज रही थी पंचम स्वरमें :

नैहरवा हमको न भावै।
साईंकी नगरी परम अति सुन्दर,
जहँ कोई जाप न आवै॥
चांद-सूरज जहँ पवन न पानी,
को संदेश पहुँचावै।
दरद यह साईं को सुनावै॥
कहत 'कबीर' सुनो भाई साधो,
सपने न प्रीतम पावै।
तपन यह जियकी बुझावै॥

प्रियतम तो प्रत्यक्ष हो गये, आँखें चार हो गयीं, परम पुरुष—अविनाशी पुरुषने आलिङ्गनमें भर लिया! ऐसा लगता था कि अग्निने लाल-लाल लपटोंको अपना लिया, सूर्यने पश्चिमकी अस्त-लालिमाकी साड़ीमें उषाका श्रृङ्गार किया। लग्न आ गया। अरुणोदयकी वेलामें परम भागवत भाईजीकी आत्माने प्रियतमके हाथपर हाथ रख दिया, मौत शरमा गयी कि वह अमरता न पा सकी। अपना-अपना भाग्य ही तो है!

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आत्माके परमात्माके साथ सप्तपदी-उत्सवमें छिति, जल, पावक, गगन और समीरने गीत गाये; प्राणने वेदमन्त्रका उच्चारण किया, सन्तका विवाह जो था ! पोद्दारजी सन्त थे; भक्तका भगवान्से गठवन्धन था, पोद्दारजी भक्त थे, सहज भागवत थे ! बारातियोंके साथ शोभायात्रामें वरकी बाँकी झाँकी देखनेके लिए जनता उमड़ पड़ी । पशु-पक्षी, वृक्ष, जड़-जंगम सब-के-सब तमाशा देखने लगे । इस तरहसे विवाहका तमाशा पृथ्वीके लोगोंने सदा देखा है । भगवती हिरण्यवतीके तटपर तथागतकी आत्मशान्तिके परिणय-अवसरपर, भगवती अनोमाके तटपर मगहरमें सन्त कवीरकी आत्माकी शून्यलोकमें—साहिबके प्रेमराज्यमें प्रतिष्ठाके अवसरपर बारातियों और तमाशा देखनेवालोंकी ऐसी ही भीड़ उमड़ी थी ।

संसारके सम्बन्धसे भाईजीकी आँख उलट गयी, नयनोंकी पुतरीके हिंडोलेपर प्राणधार प्रियतम परमात्मा झूलने लगे । कितना मनोरम दृश्य था । दुलहिनकी डोली सज गयी । पुष्पकी शय्यापर बाँसके वन्धनमें सोलह श्रृङ्गारसे युक्त प्रियतमाने—भक्ति-आत्माने भगवान्का वरण किया, अपने प्रियतमका आलिंगन किया । कहार डोली लेकर चल पड़े, वे ठहर नहीं सकते थे । किसीकी वेदना नहीं समझ सकते थे, उनके कान बहरे हो गये थे, हृदय कठोर हो गये थे, अविनाशी पुरुषकी डोलीके कहार जो थे वे ! बहुत बड़ी भागवत आत्मा नैहरसे ससुराल जा रही थी ।

हमारा सौभाग्य था कि हमने अविनाशी पुरुषका यह परिणय-उत्सव देखा । घंटे-घड़ियाल बज उठे, शंखध्वनिसे दिशाएँ आपूरित हो उठीं । दुलहिन—आत्मा अपने सनातन सतीत्वका परिचय देनेके लिए आगकी शय्यापर सोने जा रही थी । सुहाग-रातका मनुहार चल रहा था :

दुलहनी गावहु मंगलाचार !
हम घरि आये हो राजा राम भरतार ॥
तन रत करि मैं मन रत करिहूँ पंचतत्त बराती ।
रामदेव मोरे पांहुने आये मैं जोबनमें माती ॥
रामदेव संगि भांवरि लैहू, धनि धनि भाग हमार ।
कहै 'कवीर' हम ब्याहि चले हैं पुरिष एक अविनासी ॥

भाईजीकी आत्मा चितापर चढ़ गयी । चन्दनकी चिता थी, चन्दन परमात्माकी पूजाका माध्यम है । चन्दनकी चिताकी आगने दुलहिनरूपी आत्माको सोहाग दिया । चिता जल उठी, असंख्य लोगोंने आत्माका परमात्मासे विवाह देखा । आत्माका सिन्दूर अमर हो गया, मृत्यु-रूपी सहेली मुसकराने लगी । भागवत पुरुषने प्रेमालिंगनमें प्रियतमको भरकर कहा पासमें सिरहाने खड़ी मृत्युसे :

सखी सुहाग राम मोहिं दीन्हा ।

'पोद्दारजी अमर हो गये !' उनकी जलती चितासे यही आवाज निकल रही थी कि 'आत्म-मानवकी मृत्यु नहीं, शादी होती है।' परमात्मा अमर हैं तो आत्मा भी अमर है। पोद्दारजीका भागवत-चरित्र परम पवित्र सन्त-चरित्र है । उनके शरीरपर—आत्माकी चादपर धब्बा नहीं

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लगा। आजीवन मध्यकालीन असईवाले सन्त फ्रान्सिसके अभिनव रूप भाईजीने भगवान्‌को अपने व्यवहार और स्वभावमें उतारकर भागवत-जीवनके शीलसे जगत्‌की कल्याण-साधना की। उन्होंने शरीरको ज्योंका-त्यों छोड़ दिया :

दास 'कबीर' जतनसे ओढ़ी, ज्यों-की-त्यों धरि दीनी चदरिया।

मैं उन्हें क्या श्रद्धाञ्जलि समर्पित करूँ ? उन्होंने आजीवन हमें जिस स्नेहमें रससिक्त किया, उसका हृदयकमलमें मकरन्दीकरण—रसीकरण ही हमारी समझमें सबसे बड़ी श्रद्धाञ्जलि है। इस श्रद्धाञ्जलिके अनुरूप नये शब्द, नये भावको अक्षर-शरीर देनेकी क्षमता मेरी लेखनीके वशकी बात नहीं।

उनके जीवनकालके ही मैंने उनके समय-समयके भाव-चरित्रको पुस्तकके रूपमें अंकितकर उसका नाम 'भागवत-जीवन' रखा। प्रकाशनका भी छिपा प्रयास किया, पर साहस न हो सका उसे प्रकाशित करने का। उनके स्वभावके प्रनुकूल होता यह प्रयास। वे भारतीय परम्पराके पोपक थे। अपने सम्बन्धमें कुछ भी लिख जानेको वे अपनी साक्षात् मृत्यु कहा करते थे। तो फिर उनके हाथमें 'भागवत-जीवन' पुस्तक छपवाकर किस तरह सौंपता ? उन्होंने अपना जीवन-चरित लिखे जानेका आजीवन विरोध किया, वे जीवन-चरित लिख जानेको पाश्चात्य-सभ्यताकी देन कहा करते थे। मैंने 'शिवलाल एन्ड कम्पनी, आगरा'से अपनी प्रकाशित पुस्तक 'सन्तोंके संस्मरण' उन्हें समर्पित की थी, उसमें उनका चित्र भी दिया था। पर साहस न कर सका कि उनके हाथमें वह पुस्तक रखूँ, सामने रखकर चला आया। उन्होंने क्या सोचा होगा, वे जानें !

वे तो सदा जीवित रहे और जीवित रहेंगे। एक समयकी बात है। उनके जन्मदिनपर मैं उनके चरणोंमें प्रणाम निवेदन करने गया। उन्होंने कहा : 'जन्म-दिन-उत्सव मनानेकी यह परम्परा पापमयी है। भगवान् अमर हैं, सबमें उन अजन्माका निवास है। पार्थिव शरीरवाले प्राणीका जन्मदिन मनाना मेरी समझमें नहीं आता।' मैं प्रणामकर चला आया।

पोद्दारजीकी वैष्णवता उच्चकोटि की थी, असाधारण थी। वह नरसी मेहताकी पवित्र सहृदयता-कोमलता, चैतन्य महाप्रभुकी विनम्रता और आचार्य वल्लभकी भक्ति-प्रियताकी त्रिवेणी थी। एक बार मैंने बात-ही-बातमें उनसे कहा : 'आप जैसे लोग महाप्रभु वल्लभाचार्यके समकक्ष कहे जायँ तो यह अतिशयोक्ति न होगी।'

उनका मन तत्काल सहम उठा, मस्तक नत हो गया। वे लज्जित स्वरमें बोल उठे : 'यह अतिशयोक्ति नहीं, आचार्यके प्रति भयानक अपराध है। हिमालयकी तुलना रेगिस्तानके एक बालुका-कणसे नहीं हो सकती। भगवान्‌के पथपर चलनेके लिए आचार्यके चरणका एक कण भी मुझे मिल जाता !' उनकी विनम्रतासे मैं चकित हो गया; मैंने अपनी असावधानी स्वीकार की तो मुसकराने लगे।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पोद्दारजी इधर कई सालोंसे समय-समयपर समाधिस्थ हो जाया करते थे। मेरे मनमें उनकी समाधिका रहस्य समझनेकी बड़ी उत्सुकता थी। मैंने कहा : 'न आपने कभी योग-साधना की, न आसन-प्राणायाम किये। तब यह समाधि क्या है ?' पहले तो वे कुछ न बोले, पर सच्ची जिज्ञासा जानकर कहा : 'यह भाव-समाधि है, सहज समाधि है।' मैंने अपनी भाषामें कहा : 'क्या यह भक्तियोग-समाधि है ?' उन्होंने अधरोंपर मन्द मुसकान बिखेरकर कहा : 'ऐसा भी समझा जा सकता है।' वे उच्चकोटिके भक्त थे। निस्सन्देह भक्तियोग-समाधि उन्हीं-से भागवतोंकी उपासनाका फल है।

गीता-मानव पोद्दारजीका समग्र जीवन गीताके भगवद्-वचन **न मे भक्तः प्रणश्यति** और **मामेकं शरणं व्रज** का आचरण-भाष्य था। वे सहज सन्त थे। उनके हृदयकी सहज साधना एक दिन बात-ही-बातमें मुखरित हो उठी।

गीता-उद्यानकी ही बात है। उनकी छोटी दौहित्री पुष्पाका दो सालका बच्चा हाथमें एक चित्र लेकर देख रहा था। परिवारके लोग उसे बहला रहे थे। लोग चित्र माँगते थे तो वह देता ही नहीं था। पोद्दारजी टहलते-टहलते आ पहुँचे। बच्चेसे चित्र माँगा तो उसने अनायास दे दिया। चित्र देखते ही कह पड़े : 'भैया यह तो एक साधुका चित्र है, इसको लेकर क्या करोगे ?'

यह था उनके हृदयका सहज भागवत दैन्य! पर वे नहीं जानते थे कि यह एक अमर इतिहास बन गया। यह उनका उनकी ही भाषामें आत्मचरित ही था। उनकी इस आत्मकथामें उनका समग्र जीवन अंकित है, विश्वके बड़े-बड़े आत्म-कथाकारकी पोद्दारजीसे इस रूपमें उपमा ही नहीं बैठती। यह हमारी अतिशयोक्ति नहीं, उनके जीवनकी वास्तविकताका अक्षर इतिहास है।

यदि यह कहा जाय कि उनके स्थानकी पूर्ति नहीं हो सकती, तो यह बात नितान्त असंगत है। स्थानकी पूर्तिका सवाल ही नहीं उठता। वे तो अपने आपमें स्थान थे। वह स्थान ही चला गया तो उसकी पूर्तिकी बात करना गगनको जमीनपर खड़ा होकर अंगुलीसे छूनेके प्रयत्नसे भी कठिन है। गीता-प्रेस उस स्थानका भौम प्रतीक है।

मैं पोद्दारजीको प्रणाम करता हूँ, उनकी भागवत आत्माके चरण-देशमें मेरा मस्तक नत है, उनके भागवत जीवनके चिन्मय दिव्य-स्मारकपर मेरा हृदय-पुष्प समर्पित है। मेरी यही श्रद्धाञ्जलि है उन सहज सन्तके लिए। इस श्रद्धाञ्जलिमें भावकी भाषा ही नहीं है; श्रद्धाकी भाषा नहीं, भावकी संजीवनी है। भाईजी अमर हो गये!

•

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मूर्तिमन्त सन्त !

श्रीकृष्णदत्त भट्ट

★

१ लाख ५४ हजार ८८३ ! १९७०की 'प्रेस इन इण्डिया'—भारतके समाचारपत्र रजिस्ट्रारकी १४वीं वार्षिक रिपोर्ट उलट रहा था कि देखा उसमें—उत्तर प्रदेशकी ही नहीं, सारे भारतकी साप्ताहिक पत्र-पत्रिकाओंको छोड़कर, हिन्दीकी सबसे बड़ी ग्राहकसंख्या—१,५४,८८३ है गोरखपुरसे प्रकाशित होनेवाले 'कल्याण' मासिकपत्र की !

सन् १९६९में भारतमें प्रकाशित होनेवाले १२,८२६ पत्र-पत्रिकाओंमें ६५० हैं दैनिक, ५२ हैं द्वि या त्रि दैनिक और २,९७३ हैं साप्ताहिक। वार्षिक और मासिक, पाक्षिक आदि पत्र हैं ६,६०६। हिन्दीमें निकलनेवाले कुल ५२,५०८ पत्रोंमें धर्म और दर्शनपर निकलनेवाले पत्र हैं १,०९८। भारतमें लाखसे अधिक ग्राहक-संख्यावाले समाचारपत्र १६ हैं। इनमें सातवां स्थान है 'कल्याण' का। वह है हिन्दीका सर्वाधिक प्रचलि एकमात्र मासिक-पत्र।

प्रश्न है कि 'कल्याण'को इस मूर्धन्य स्थानपर पहुँचानेका श्रेय किसको है ? हर व्यक्ति मुक्तकण्ठसे स्वीकार करेगा : श्री हनुमानप्रसाद पोद्दारको।

× × × ×

भारतकी धर्मप्राण जनता 'कल्याण'को जितने आदरकी दृष्टिसे देखती है, जितने प्रेमसे उसका पाठ और चिन्तन-मनन करती है, उतना सम्भवतः अन्य किसी पत्र-पत्रिकाका नहीं करती।

क्यों ?

कारण क्या है ?

कारण स्पष्ट है।

एक तो भारतकी भूमि धर्मकी पवित्र भावनासे ओतप्रोत है, दूसरे 'कल्याण' द्वारा उसकी मानसिक और आध्यात्मिक क्षुधाकी अत्यन्त सफल रूपसे तृप्ति होती है।

× × × ×

'कल्याण' एक सामान्य मासिकपत्र ही नहीं, एक संस्था है।

वह एक प्राणवान् संस्था है। उसके पीछे त्याग और तपस्या, धर्म और सदाचार, श्रद्धा और निष्ठाकी एक अविरल धारा है। इस धाराके जो प्रमुख स्रोत रहे हैं, उनमें

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

श्री भाईजी हनुमानप्रसाद -पोद्दारका नाम मुकुट-मणिकी भाँति देदीप्यमान है। उनकी ४४-४५ वर्षकी उत्कट साधनाने ही 'कल्याण' को इस मूर्धन्य स्थानपर पहुँचाया है।

महात्मा गांधीने उनसे कहा—"कल्याण' में विज्ञापन मत छापो, 'कल्याण' में आलोचना मत छापो।" श्रीपोद्दारजीने इस आदेशको शिरोधार्य किया। इन दोनों नियमोंका पालन करनेसे कल्याणकी प्रतिष्ठामें तो चार चाँद लगे ही, दूसरोंके लिए भी एक उत्तम आदर्श मुखरित हुआ।

× × × ×

गोरखपुर जैसे दूर-दराज स्थानसे प्रकाशित होकर 'कल्याण' दिन-दूनी, रात-चौगुनी उन्नति करता रहा, इसका एकमात्र कारण श्री भाईजीकी अनवरत साधना और लगन ही थी। उनके मानसमें ओत-प्रोत भगवत्प्रेरणा ही उनसे इतना कठोर श्रम करा लेती थी, अन्यथा किसी सामान्य व्यक्तिमें इतना श्रम करनेकी सामर्थ्य कहाँ ?

'कल्याण-मानव मात्रकी ही नहीं, प्राणिमात्रकी कल्याण-कामनाका आदर्श लेकर दिन-दिन प्रगति करता चला आ रहा है।

'कल्याण' अपने पवित्र उद्देश्यमें बहुत कुछ सफल हुआ है। गीता-प्रेसके अनूठे और सस्ते प्रकाशन धर्म-परायण जन-मानसपर अपना व्यापक प्रभाव डालनेमें समर्थ तो हुए ही हैं, देश-विदेशमें भी उनकी पर्याप्त ख्याति हुई है। श्री भाईजीको ही इसका मुख्य श्रेय है।

× × × ×

उद्देश्य लाख अच्छे हों, पर उनका प्रभाव तभी पड़ता है, उनका असर तभी होता है, जब स्वयं उपदेष्टाके जीवनमें उक्त उपदेश व्यवहृत होता है। राम और कृष्ण; बुद्ध और महावीर, ईसा और मुहम्मद, नानक और गांधीकी बातें बड़ी असर करती रही हैं, इसीलिए कि उनके पीछे वैसा व्यक्तित्व रहा है। अन्यथा आज़ तो उपदेशकोंका पार नहीं, पर होता है उनका कोई असर ? लोग मुँह बिचका कर कह देते हैं :

उसकी बातोंसे समझ रखा है तुमने उसे खिज्र,
उसके पाँवोंको तो देखो कि किधर जाते हैं !

श्री पोद्दारजीकी वाणीका, उनकी लेखनीका, उनके लिखे पत्रोंका असर क्यों होता था ? इसीलिए कि उनका व्यक्तित्व उन गुणोंसे ओतप्रोत था, जिन गुणोंको वे समाजमें विकसित और प्रस्फुटित होते देखना चाहते थे।

× × × ×

उनका नम्रतापूर्ण व्यवहार, उनका उज्ज्वल चरित्र, प्राणिमात्रकी बिना किस भेद-भावके सेवा, उनके जीवनका अनिवार्य अंग था। दुखी और दीन, कष्ट और आपत्ति-ग्रस्त, रोग और व्यथासे पीड़ित प्राणी उनके आराध्य थे। तन-मन-वचनसे, रुपये-पैसेसे, मीठे वचनोंसे, सद्-व्यवहारसे प्राणिमात्रकी सेवा उनके जीवनका एकमात्र लक्ष्य था। यही उनका धर्म था, यही उनका व्रत। 'कल्याण' और गीता-प्रेस उनकी इस सेवाके अनुपम साधन थे। इनके माध्यमसे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उन्होंने पीड़ित मानवताकी ही आजीवन सेवा की। उनके रोम-रोमसे मानो यह दोहा मुखरित होता है :

> सो अनन्य जाकी असि, मति न टरे हनुमन्त।
> मैं सेवक सचराचर, रूप स्वामि भगवन्त॥

ऐसे थे भाईजी श्री हनुमानप्रसाद पोद्दार !

मुझे कभी-कभी उनके चरणोंमें कुछ क्षण वितानेका अवसर मिला, कभी-कभी उनके आदेशसे 'कल्याण' में लिखनेका कुछ अवसर मिला—यह मेरा परम सौभाग्य है।

बहुत दिनोंसे उनकी बीमारीसे उनके विशाल परिवारके हम सभी सदस्य चिन्तित थे, पर अब तो परम प्रभुने उनका पार्थिव-शरीर हमारे बीचसे उठा लिया, पर इससे क्या ? वे तो उन लोगोंमें थे—**नास्ति येषां यशःकाये जरामरणजं भयम्।** वे अब अत्यन्त व्यापक होकर हमारे बीच आ बैठे हैं। हमारी दृष्टिमें तो भाईजी सच्चे अर्थमें एक 'सन्त' थे—सन्तके गुणोंके मूर्तिमन्त प्रतीक हैं :

> मनसि वचसि काये पुण्य-पीयूषपूर्णाः,
> त्रिभुवनमुपकारश्रेणिभिः प्रीणयन्तः।
> परगुणपरमाणून् पर्वतीकृत्य नित्यं
> निजहृदि विकसन्तः सन्ति सन्तः कियन्तः॥

काश, हम श्री भाईजीके उज्ज्वल-चरित्रसे प्राणिमात्रकी सेवाकी कुछ भी प्रेरणा ले सकें ! धन्य हो उठेगा हमारा जीवन ! यही होगी उनके प्रति हमारी सर्वोत्तम श्रद्धांजलि ! ●

यही हिन्दू-संस्कृति है

गोरखनाथ-मन्दिरके नये भवनका शिलान्यास था, शहरके प्रतिष्ठित व्यक्ति आमन्त्रित थे। श्री भाईजी रेलवेके जनरल मैनेजरके साथ आगे सोफासेटपर बैठे थे। श्री अक्षयबाबूका भाषण हो रहा था—वे हिन्दू संस्कृतिपर बोल रहे थे। भाषण पूरा होनेपर वे बैठनेके लिए आये, जनरल मैनेजर एवं भाईजीने उठकर उनका स्वागत किया और सोफेपर बैठा लिया। जनरल मैनेजर भी बाबूके साथ-साथ बैठ गये, पर भाईजी अक्षयबाबूके समान आसनपर कैसे बैठते ! वे तो उन्हें अपने गुरुजनके रूपमें आदर देते आये हैं। वे अक्षयबाबूके चरणोंके समीप नीचे जमीनपर बैठ गये। जनरल मैनेजरने आश्चर्य प्रकट किया और भाईजीका हाथ पकड़कर वे उन्हें ऊपर सोफेपर बैठानेका प्रयत्न करने लगे, पर श्री भाईजी टस-से-मस नहीं हुए। श्री अक्षयबाबू भाईजीके इस शील-स्वभावको देखकर गद्गद हो गये और उनकी आँखोंसे स्नेहके आँसू टपक पड़े। उन्होंने जनरल मैनेजरसे कहा : 'यही हिन्दू-संस्कृति है।' जनरल मैनेजर भी हिन्दू-संस्कृतिके इस महान् आदर्शको देखकर मुग्ध हो गये।

प्रेषक : **श्री सूर्यकान्त फोगला**

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पूज्य भाईजी और प्रणाम

श्री विश्वम्भरनाथ द्विवेदी

★

पू० श्री भाईजीका सर्वप्रथम दर्शन मुझे तब हुआ जब मेरी उम्र मात्र ७-८ वर्षकी थी। उन दिनों 'कल्याण'के सम्पादकीय-विभागमें श्री लक्ष्मण नारायण गर्दे, श्री भुवनेश्वरनाथ मिश्र 'माधव', श्री नन्ददुलारे वाजपेयी, श्री देवधर शर्मा और मेरे पिताजी श्री शान्तनुबिहारी द्विवेदी काम करते थे। भाईजीके समीप पहुँचकर चरण छूकर प्रणाम करना मुझे सिखाया गया था। तदनुसार उनके चरणोंतक पहुँचकर जैसे ही मैंने प्रणाम किया, भाईजीने मुझे अपने पास खींचकर बैठा लिया और अपने अमूल्य समयमें भी बहुत लाड़-प्यारपूर्वक घर-बाहरकी बातें करने लगे। फिर तो मैं कई दिनोंतक उनके घर ही रहा। वहाँके स्नेहकी स्मृतियाँ आज भी चित्त-पटलपर एक-एक कर अंकित हो रही हैं।

सन् १९४२ में 'महाभारताङ्क'का काम पूरा होते-होते पिताजीने संन्यास ले लिया। उस समय मैं भाईजीकी जन्मभूमि रतनगढ़के निकट चूरूके 'ऋषिकुल ब्रह्मचर्याश्रम'में अध्ययन कर रहा था। जब मुझे संन्यासकी सूचना मिली तो आश्रममें मैं कई दिनोंतक दुःखी रहा और रोया भी। उस समय श्रीभाईजीने मुझे रतनगढ़ बुलवा लिया और विश्वास, आश्वासन और स्नेहकी वह वर्षा की, जिसे आज भी यादकर हृदय गद्गद हो उठता है।

सन् '४६ में ऋषिकुलका स्नातक होकर अपने गाँव 'महराई' आ गया। घर आनेके पश्चात् विवाहपर्यन्त भाईजीसे मैं मिल न सका। विवाह-कालमें ही भाईजीका एक कार्ड आया : "प्रिय विश्वम्भर, शुभाशीष !······तुम्हारा—हनुमानप्रसाद पोद्दार।" यह कार्ड मेरे एक अभिभावकके हाथ लगा। उस पत्रमें अंकित 'आशीष' और 'तुम्हारा' जैसे शब्दोंपर उन्होंने बड़ी आपत्ति उठायी और आगबबूला हो गये। लगे वहाँ अपनी भँड़ास निकालने : 'देखा, यह देशके बड़े विद्वान् 'कल्याण' के सम्पादकका पत्र है ! इतना तो ध्यान होना चाहिए कि पत्र लिख रहे हैं एक ब्राह्मणको !' भाईजी और अपने सम्बन्ध एवं भावकी बात उन्हें समझानेमें मैं विफल हो गया। वे अन्ततक झल्लाते ही रहे।

× × × ×

संयोगसे उन्हीं अभिभावक महोदयके साथ कुछ दिनों बाद मैं गोरखपुर गया। भाईजीसे मिला। अपने पहले संस्कारके अनुसार ही मैंने उन्हें प्रणाम किया। बस, भाईजीने मेरा हाथ पकड़ लिया, स्वयं हाथ जोड़ लिये। बोले : 'अच्छा, विश्वम्भर ! आ गये। अब तुम छोटे बच्चे नहीं, बड़े हो गये। ब्राह्मण हो, पूज्य हो। तुम पैर छूकर प्रणाम करो, यह नहीं चलेगा। अब तो मेरा ही तुम्हें प्रणाम करना कर्तव्य है। प्रसन्न हो न ? घरमें सब लोग स्वस्थ प्रसन्न हैं न ?'—पूछते हुए भाईजीने प्रणामके गौरवमें एक छोटा-सा प्रवचन ही दे डाला :

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

"देखो, इस प्रणाममें बहुत-से गुण हैं। क्यों पण्डितजी !'—हमारे अभिभावककी ओर संकेत करते हुए बोले (मानो उनकी झुंझलाहटका ही उत्तर दे रहे हों)—'युद्धभूमिमें कौरव-पाण्डवोंकी सेनाएँ डटी थीं। संघर्षके लिए शस्त्रास्त्रोंसे सुसज्जित योद्धा रक्तपिपासु हो एक दूसरेपर टूट पड़ना चाहते थे। उसी समय एकाएक युधिष्ठिर रथसे उतर पड़ते हैं। धनुष, बाण और कवच रथमें ही रख देते और पैदल ही कौरववाहिनीकी ओर बढ़ने लगते हैं। अर्जुन हतप्रभ हो जाता है। भीम ललकारता है—'यह क्या होने जा रहा है ?' नकुल-सहदेव सशंकित होते हैं—'क्या यह आत्म-समर्पणका समय है ?' किन्तु युधिष्ठिर निर्द्वन्द्व-निर्भय हो सैनिकोंकी कतार चीरते पहुँच जाते हैं पितामह भीष्मके समीप और चरणोंकी धूलि सिरपर धारण करते हैं।

'विजयी हो, युधिष्ठिर !'—पितामह आशीर्वाद देते हैं। 'यह कैसे सम्भव है पितामह ! जब आप-जैसे महान् सेनापति हमारे विरुद्ध युद्धके लिए सन्नद्ध हों ?'—धर्मराजने अत्यन्त विस्मय-मिश्रित जिज्ञासा प्रस्तुत की। 'अब यह असम्भव भी सम्भव हो गया है वत्स ! क्योंकि मैंने तुम्हें आशीर्वाद जो दे दिया है। इस स्थितिमें भी तुम्हारे प्रणामका यह परिणाम है। अन्यथा मैं तुम्हें शाप देता और तब ? हम जैसे दुर्धर्ष वीरोंसे पार पाना निश्चय ही तुम लोगोंके लिए टेढ़ीखीर थी।'

इसी प्रकार आचार्य द्रोण और कृपाचार्य तथा मामा शल्यसे भी महाराज युधिष्ठिरने प्रणाम करके विजयके वरदानरूप वह अद्भुत शक्ति प्राप्त की जो अन्ततः अजेय सिद्ध हुई।

महाभारतके विज्ञ पाठकोंको सुविदित है कि अर्जुन द्वारा प्रेरित शिखण्डी ही पितामहकी मृत्युका निमित्त बना, कृपाचार्यने विरति ले ली, द्रोणाचार्यको अश्वत्थामाकी मृत्युकी भ्रान्त कल्पनापर शस्त्रसंन्यास लेना पड़ा और कर्ण शल्य द्वारा अनुत्साहित हो गया !

आखिर इन महारथियोंकी सहज मृत्युका रहस्य-भेदन किया किसने ? कहना होगा, केवल एकमात्र युधिष्ठिरके प्रणाम ने ! अतः यह प्रणाम जीवमात्रके उत्कर्षके लिए अमोघ शस्त्र है। महाराज मनु कहते हैं :

अभिवादनशीलस्य नित्यं वृद्धोपसेविनः।
चत्वारि तस्य वर्धन्ते आयुर्विद्या यशो बलम् ॥

भाईजीने इस प्रवचनमें वर्णित तथ्यका अपने पूरे जीवनमें अनुसरण किया। इसी कारण आज वे 'अजातशत्रु' का अभिनव संस्करण बन गये। विज्ञजन जानते हैं कि नमस्कार-क्रियाका अर्थ यह जतलाना है कि मैं आपसे छोटा हूँ : **त्वत्तोऽहमपकृष्ट इति बोधनानुकूलः करयोः शिरःसंयोगपूर्वकः शिरोनमनानुरूपो व्यापारः।** सारा झमेला-झगड़ा अभिमानसे ही होता है और नमस्कार ठीक उसीपर निर्णायक चोट पहुँचाता है। तब क्यों न कोई समझदार, सहृदय नमस्कार करनेवालेके वश हो जाय ?

इसपर भी किसीका अहम् ऐसा करनेसे बरबस रोकता है, तो तुलसीबाबाने दूसरा शस्त्र बताया है, जो यह उपाय सहज ही साध लेता है। वे कहते हैं :

सीय राममय सब जगजानी। करहु प्रनाम जोरि जुग पानी ॥ ●

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

श्रीकृष्ण-जन्म स्थानके अन्यतम उद्धारक

श्री वृन्दावनदास : अध्यक्ष, व्रजसाहित्यमण्डल

★

श्रद्धेय श्री हनुमानप्रसादजी पोद्दारका दु:खद निधन सम्पूर्ण हिन्दू-संसारकी एक महान् दुर्घटना है। अपने जीवन-कालमें प्रातःस्मरणीय पोद्दारजीने धर्म, संस्कृति और साहित्यकी जो सेवा की, वह अनिवर्चनीय एवं अविस्मरणीय है। पोद्दारजी अपने आपमें एक महान् संस्था थे। धार्मिक साहित्यके क्षेत्रमें पोद्दारजीके उदयके पहले एक अभावग्रस्त स्थितिकी-सी अनुभूति होती थी। देशमें धार्मिक साहित्यके प्रकाशन-संस्थान उंगलियोंपर गिने जाने योग्य थे, धर्मग्रन्थोंकी प्राप्ति क्वचित् और व्यय-साध्य थी। धर्मप्राण जनतामें अपने महान् देशके आर्ष-ग्रन्थोंको अपनी मातृभाषामें ही पढ़नेके लिए छटपटाहट थी। पोद्दारजीने समयकी माँग पहचानी और अपने देशकी जनताको ऐसे ग्रन्थरत्न भेंट किये, जिनकी मुद्रणसम्बन्धी स्वच्छता, सुन्दरता और शुद्धता देखकर भारतीय जनमानस कृतकृत्य हो गया और जो स्वल्प मूल्यकृत सुलभताके कारण घर-घर पहुँच गये।

एक बार अपने कुछ साथियोंके साथ पोद्दारजी तीर्थाटन करते हुए मथुरा पधारे। तीर्थ-यात्रियोंके सम्मानमें मथुराके लक्ष्मीदास-हालमें एक समारोहका आयोजन किया गया। इन पंक्तियोंका लेखक भी उस समारोहके आयोजकोंमें एक था। समारोहमें एकके बाद दूसरे वक्ताने पोद्दारजीके ऋषितुल्य जीवनकी महिमापर प्रकाश डाला। कुछ वक्ताओंने तो पोद्दारजीके कार्यकलापोंकी उपमा महर्षि वेदव्यासके कर्तृत्वसे दे डाली। कई वक्ताओंने उन्हें 'आधुनिक भारतका वेदव्यास' कहा। हमने पोद्दारजीका ध्यान श्रीकृष्ण-जन्मस्थानकी दुर्दशाकी ओर आकृष्ट कर निवेदन किया कि मथुरामें प्रतिवर्ष लाखों यात्री आते हैं। किन्तु ऐसा कौन होगा, जिसका हृदय श्रीकृष्ण-जन्मभूमिकी वर्तमान दुरवस्थाको देखकर शतधा विदीर्ण न होता हो।' सब सुननेके बाद अश्रुपूरित नेत्रोंसे पोद्दारजीने कहा :

"आप लोगोंने प्रेमके वशीभूत होकर मेरे साथ बड़ा अन्याय किया है। मैं एक अत्यन्त क्षुद्र प्राणी हूँ। जिन परम वन्दनीय महर्षियोंके नामके साथ आपने मुझे सम्वद्ध किया है, मैं उनके चरणोंकी धूलि भी नहीं हूँ। मेरी तो सदैव यह कामना रही है कि मैं उनके चरण-कमलोंकी भक्तिके योग्य बन सकूँ। आप मुझे यही आशीर्वाद दीजिये। जन्मस्थानके प्रति जो कुछ कहा गया, उससे मैं पूर्ण सहमत हूँ। एतन्निमित्त अपने क्षुद्र प्रयास भी करनेको प्रस्तुत हूँ। शीघ्र ही दस हजार रुपये आप लोगोंकी सेवामें भेजूँगा। वास्तवमें यह कार्य आपके ही कर्तव्य-पालनकी अपेक्षा करता है।" पोद्दारजीके इस विनम्र वक्तव्यपर उपस्थित लोगोंने हर्ष-ध्वनि की।

उसके पश्चात् श्रीपोद्दारजीने तत्काल दस हजार रुपये भिजवा दिये और तभीसे श्रीकृष्ण-जन्मस्थानका विकास-कार्य बढ़ने लगा। धार्मिक जगत् और हिन्दी-संसार तो पोद्दारजीका ऋणी है ही, व्रजक्षेत्र भी उनकी अनुपम सेवाओंके कारण सदैव उनका आभारी रहेगा। ●

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

देखा एक बार : पहचाना बार-बार

श्री बनारसीदास चतुर्वेदी

भाई हनुमानप्रसादजी पोद्दारका स्वर्गवास केवल धार्मिक ही नहीं, एक साहित्यिक तथा सांस्कृतिक दुर्घटना भी है। यद्यपि मुझे उनके दर्शन करनेका सौभाग्य केवल एक बार ही प्राप्त हुआ, तथापि उनसे पत्र-व्यवहार बहुत वर्षोंसे चलता रहा और कई बार उन्होंने मुझपर कृपा भी की।

गोरखपुरके हिन्दी साहित्य-सम्मेलनके अवसर पर साहित्य-सेवियोंका एक दल उनका अतिथि हुआ था, जिनमें आचार्य पं० पद्मसिंह शर्मा, श्रद्धेय जगन्नाथप्रसाद चतुर्वेदी, श्री गांगेय नरोत्तम शास्त्री तथा श्री लक्ष्मण नारायण गर्दे मुख्य थे। मैं भी उन्हीं लोगोंके साथ था। उस समयकी कई मधुर स्मृतियाँ अब भी मेरे दिमागमें चक्कर काट रही हैं।

एक घटना खास तौर पर याद आ रही है। शौच आदिसे निवृत्त होनेपर जो सज्जन हमारे हाथ धुलाते थे, वे अधेड़ उम्रके और स्वच्छ कपड़े पहने थे। हम लोगोंने सोचा, वे पोद्दारजीके कोई नौकर होंगे। फिर भी मनमें कुछ आशंका अवश्य थी। पं० पद्मसिंहजीने उनके विषयमें पोद्दारजीसे पूछा तो उन्होंने कहा :

'जो सज्जन आपके हाथ धुलाते हैं, वे तो भागलपुरके एक लखपति सेठ हैं। उन्होंने सम्मेलनको आर्थिक सहायता तो दी, पर उनका आग्रह था कि वे साहित्यिक अतिथियोंकी कुछ सेवा भी करें। सो, मैंने उन्हें भागलपुरसे बुलाकर यह काम सौंप दिया है और इससे वे अत्यन्त प्रसन्न हैं।'

यह जानकार हम सबको बड़ा आश्चर्य हुआ और साथ ही खेद भी कि ऐसे प्रतिष्ठित सज्जनसे हम यह काम लेते रहे। स्वर्गीय पं० पद्मसिंह इस घटनाको नहीं भूले और उन्होंने एक पत्रमें मुझे लिखा था : 'यदि हिन्दी-जगत्‌में कोई सांस्कृतिक विद्यालय खोला जाय तो उसका आचार्य भागलपुरके उन सेठजीको ही बनाना चाहिए।'

यह बतलानेकी आवश्यकता नहीं कि स्वर्गीय पोद्दारजीकी सूझ-बूझका ही यह उत्कृष्ट उदाहरण था।

हम लोग जो पोद्दारजीके अतिथि थे, स्वभावत: विभिन्न विचारोंके थे। आपसमें किसी विषयपर काफी गरमागरम बहस हो गयी, पर पोद्दारजी सर्वथा मौन ही रहे। जब उनसे उस विषयपर बोलनेके लिए कहा गया तो उन्होंने केवल इतना ही निवेदन किया : 'मैंने यह नियम बना लिया है कि वाद-विवादमें कदापि नहीं पड़ूँगा।'

यदि पोद्दारजी वाद-विवादमें पड़ते तो जो महान् सांस्कृतिक तथा साहित्यिक कार्य उन्होंने किये, वे उनसे कभी भी न बन पाते।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पोद्दारजी की दान-शीलताके तीन उदाहरण मुझे इस समय याद आ रहे हैं। संस्कृतके एक पण्डितजी मेरे पास आये और अपनी आर्थिक कठिनाई की बात कही। मैं उन दिनों 'विशाल भारत' का सम्पादन करता था। मैंने अपनी असमर्थता प्रकट की, तो उन्होंने कहा : 'किसी साधन-सम्पन्न व्यक्तिको पत्र ही लिख दीजिये।' मुझे उस समय भाई पोद्दारजीका शुभ नाम याद आ गया और इस आशासे कि वे दस-बीस रुपये उन पंडितजीको भेज देंगे, उन्हें पत्र लिख दिया। मेरे आश्चर्यका ठिकाना न रहा, जब उन पण्डितजी ने यह समाचार मुझे सुनाया कि पोद्दारजी ने ७५) पचहत्तर रुपये भेज दिये हैं। पोद्दारजीका बड़ा विनम्रतापूर्ण पत्र भी मुझे मिला, जिसका आशय यह था कि 'संस्कृतके पंडित प्रायः निर्धन होते हैं, उनका काम दस-बीस रुपयेसे नहीं चल सकता।'

हमारे एक पत्रकार-बन्धुके अनुज क्षयरोगसे पीड़ित हो गये। मैंने फिर पोद्दारजीसे सहायता माँगी। उन्होंने फिर ७५) पचहत्तर रुपये उन्हें भेज दिये, जब कि दूसरों ने दस-दस पाँच-पाँच ही भेजे थे।

दिल्लीमें जब मैंने 'हिन्दी-भवन' खोला तो पुनः पोद्दारजीकी सेवामें निवेदन किया। उन्होंने तुरन्त १५०) रुपये भेज दिये। साथमें उन्होंने एक पत्र भी लिखा, जिसका आशय यह था—'मैं स्वयं पैसेवाला आदमी नहीं हूँ। ऐसे अवसरोंपर अपने उदार मित्रोंसे कुछ रुपये ले लिया करता हूँ।'

× × ×

एक बार शायद 'कल्याण'-प्रेसके कम्पोजीटरोंमें कुछ असन्तोष फैल गया था और उसकी खबर गोरखपुरसे किसीने मुझे भेज दी थी। मुझे याद पड़ता है कि मैने 'विशाल भारत' में प्रेसके मालिकोंके विरुद्ध एक व्यंग्यात्मक नोट लिखा दिया था, पर श्रीपोद्दारजी ने उसको बिल्कुल बुरा नहीं माना। यह उनकी उदारता थी।

एक बार सेवाग्राममें मैंने बाबा राघवदासजीके सामने एक धृष्टतापूर्ण मजाक कर दिया। किसी विषय पर वाद-विवाद चल रहा था, शायद सत्साहित्यके प्रचार और अश्लील साहित्यकी रोकथाम पर।

बाबा राघवदासजीने मुझसे पूछा : 'यदि आपके हाथमें सत्ता हो तो आप क्या करेंगे ?'

मैंने उत्तर दिया : 'पहला काम तो मैं यह करूँगा कि 'कल्याण' के प्रेसको जप्त कर लूँगा और उसके द्वारा अपने सत्साहित्य सम्बन्धी विचारोंका प्रचार करूँगा।'

बाबाने हँसकर कहा : 'कल्याण' तो प्रारम्भसे ही 'सत्साहित्य'का प्रचार कर रहा है। आप जानते ही होंगे कि मेरा पोद्दारजी से घनिष्ठ सम्बन्ध है।'

मैंने कहा : 'यह तो मैं भलीभाँति जानता हूँ, पर ऐसा बढ़िया संगठित प्रेस हमें कहाँ मिल सकता है ?'

बाबाजी खूब हँसने लगे और बोले : 'आपकी क्रान्तिकारी आयोजना की बात मैं पोद्दारजीको सुनाऊँगा।'

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मालूम नहीं कि उन्होंने मेरा वह मजाक उनतक पहुँचाया या नहीं, पर मैं श्रद्धेय पोद्दारजीके उत्तरकी कल्पना कर सकता हूँ। वे यही कहते : 'चीज तो दूसरोंकी जप्त की जाती है। अपनी चीजका जप्त करनेका कुछ अभिप्राय ही नहीं। 'सत्साहित्य'के प्रचारके लिए 'कल्याण'के सब साधन प्रस्तुत हैं। कोई भी भलामानुस उसका उपयोग कर सकता है।' मेरा वह मजाक निःसंदेह धृष्टतापूर्ण था, पर पोद्दारजीकी उदारतापर मुझे विश्वास था।

× × ×

एकबार मेरे एक मित्रने, जो अस्वस्थ थे, कहा कि मैं पोद्दारजीको पत्र लिखूं तो वे हरिद्वारमें उनके ठहरनेका प्रबन्ध कर सकते हैं। मैंने पत्र भेज दिया और पोद्दारजीने सहर्ष वह प्रबन्ध कर दिया।

स्वयं मेरी भी यह हार्दिक अभिलाषा थी कि कभी गर्मियोंमें 'हरिद्वार' में उनके सत्संगका लाभ प्राप्त करूँ, पर यह सौभाग्य मुझे नहीं मिल सका। मैं उसे टालता ही रहा। गत वर्ष 'जन्माष्टमी' पर मैं मथुरा इसी उद्देश्यसे गया था कि वहाँ भाई पोद्दारजीके दर्शन अवश्य होंगे, पर वे अस्वस्थताके कारण न पहुँच सके। इस प्रकार गोरखपुरका प्रथम दर्शन ही अन्तिम दर्शन सिद्ध हुआ।

जो महत्त्वपूर्ण कार्य अकेले भाई हनुमानप्रसाद पोद्दारजीने कर दिखाया, वह बड़ी-बड़ी संस्थाओंसे भी नहीं बन पड़ा। वस्तुतः वे स्वयं एक महान् संस्था थे। धार्मिक-जगत् तथा हिन्दी-साहित्यके लिए उनकी देन अद्वितीय है।

●

समुज्ज्वल रत्न

श्रद्धेय श्रीहनुमानप्रसादजी पोद्दार धर्मप्राण भारतके एक समुज्ज्वल रत्न थे, पारस-मणि थे। आजके युगमें 'जब कि भारतीय संस्कृतिका ह्रास हो रहा है, श्रीपोद्दारजीका देहावसान बहुत बड़ा दुःखद अभाव है। यद्यपि उन्होंने गीता-प्रेस और 'कल्याण'के माध्यमसे विश्वको इतना कुछ दिया है कि उसका संबल प्राप्त करके प्रत्येक मनुष्य अपने गन्तव्य पथपर अग्रसर हो सकता है, तथापि उनके अगणित गुण-गरिमासम्पन्न शरीरके साक्षात्कार और सत्संगसे उनके प्रेमियोंको जो परम लाभ मिलता था, वह अब कहाँ मिलेगा ?

श्री पोद्दारजीके जीवनमें पर्वत-जैसी ऊँचाई और समुद्र-जैसी गहराईका अद्भुत समन्वय था, फिर भी उनमें अहंका कहीं लेश भी नहीं था। वे छोटे-बड़े सभीके 'भाईजी' और गोस्वामी तुलसीदासजीके शब्दोंमें 'सबके प्रिय सबके हितकारी' थे। उन्होंने यथासम्भव सदा-सर्वदा सबको सुख पहुँचानेकी चेष्टा की, कष्ट कभी किसीको भी नहीं दिया। आज उनको खोकर कितने नर और नारी भ्रातृविहीन, प्रेमीविहीन और सर्वस्वविहीन हो गये हैं, इसकी कोई गणना नहीं की जा सकती।

मैं पुण्यसलिला गङ्गा-माताके पुनीत तटपर स्वर्गाश्रमके सभी साधुओं, कार्यकर्ताओं, अध्यापकों और छात्रों आदिके साथ श्रद्धेय श्री हनुमानप्रसादजी पोद्दारके पुनीत चरणोंमें अपनी भावभीनी हार्दिक श्रद्धांजलि समर्पित करता हूँ।

—स्वामी अचलानन्द सरस्वती

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सचमुच मानव मात्रके भाई

श्री मण्डन मिश्र

'कल्याण'के यशस्वी सम्पादक स्वर्गीय हनुमानप्रसादजी पोद्दार 'भाईजी'के नामसे प्रसिद्ध थे। सचमुच वे मानवमात्रके भाई थे। रहन-सहन और स्वभावसे सीधे-सादे, पर विचारोंमें गम्भीर! 'कल्याण' द्वारा उन्होंने जो मानव-सेवा की, उसे भूलाया नहीं जा सकता। उनके ओजस्वी लेखों द्वारा कितने ही पाठकोंका 'कल्याण' हुआ। धर्म, देश और हिन्दी इन तीनोंकी उन्होंने महती सेवा की है। देशमें आजकल 'कल्याण'का जितना प्रचार है, उतना देशी भाषाओंकी अन्य किसी पत्रिकाका नहीं। उनकी प्रतिमा बहुमुखी थी।

स्वतन्त्रता-आन्दोलनमें उन्होंने क्रांतिकारीके रूपमें भाग लिया। स्वतन्त्रता-प्राप्तिके बाद उन्होंने जनताका नैतिक-स्तर उच्च बनानेके लिए प्रयत्न आरम्भ किया। इसमें उन्हें बहुत कुछ सफलता भी मिली। भगवान् श्रीकृष्णके दरबारमें पहुँचनेकी कठिनताका अनुभव कर उन्होंने वृषभानुनन्दिनी नित्यनिकुंजेश्वरी, राधा-रानीकी शरण ली, जिसके पैर स्वयं भगवान् श्रीकृष्ण पलोटते रहते हैं। पिताकी अपेक्षा माताका स्नेह प्राप्त करना कहीं अधिक सुगम है। इसीलिए उन्होंने राधा-रानीको अपनी अधिष्ठात्री देवी बनाया। वे उनके ध्यानमें बराबर तल्लीन रहा करते और राधा-अष्टमी बड़े उल्लासके साथ मनाया करते थे। लगभग २५ वर्षोंसे मेरा उनसे परिचय रहा। वे जब कभी वाराणसी आते तो मुझसे अवश्य मिलते थे। उस समय अनेक विषयोंपर हम दोनोंका विचार-विनिमय होता रहता। इधर एक विषयपर विचार चल रहा था। मैंने उनसे कहा था कि यह बड़े खेदकी बात है कि भगवान् कृष्णकी कोई प्रामाणिक जीवनी हिन्दी या अंग्रेजीमें नहीं है। विदेशी विद्वान् प्रायः पूछा करते हैं, उत्तरमें चुप रह जाना पड़ता है। श्रीकृष्णके सम्बन्धमें केवल विदेशोंमें ही नहीं, स्वदेशमें भी अनेक प्रकारके भ्रम फैले हुए हैं। डाक्टर भण्डारकर जैसे विद्वान्ने अपनी 'शैविज्म एण्ड वैष्णविज्म' नामक पुस्तकमें उन्हें अनार्य सिद्ध करनेकी कुचेष्टा की है। उनका कहना है कि 'वे आभीर-जातिके थे जो बाहरसे आये थे। इसके अतिरिक्त गोपियोंके साथ उनकी अठखेलियाँ भी आर्यमर्यादाके विरुद्ध थीं।' सचमुच इस प्रसिद्ध विद्वान्की बुद्धिपर तरस आता है। श्रीकृष्ण वसुदेव और देवकीके पुत्र थे, जो शुद्ध क्षत्रिय थे। उनका लालन-पालन नन्दबाबाके यहाँ हुआ था, जिन्हें आभीर कहा जा सकता है। पर वास्तवमें वे वैश्य थे। इस तरहके मतोंका खण्डन नितान्त आवश्यक है। बचपनमें उनकी मनोहर बाललीलाएँ और फिर महाभारतमें उनका महान् दार्शनिक एवं कूटनीतिज्ञके रूपमें प्राकट्य उन्हें सचमुच 'जगद्गुरु' बना देता है। भाईजीने इसे स्वीकार कर लिया था।

उन्होंने जो-जो कार्य सम्भाले, उन्हें बराबर चालू रखना और उनकी उत्तरोत्तर वृद्धि करना ही स्वर्गीय भाईजीके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी। ●

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

महापुरुषताके कुछ प्रमाण

श्री सुदर्शन सिंह 'चक्र'

★

'कल्याण'के प्रधान सम्पादक श्री हनुमानप्रसादजी पोद्दार लोगोंमें 'भाईजी'के नामसे प्रसिद्ध थे। सचमुच वे सभीके भाई—स्नेहशील बड़े भाई थे। मुझे तो निजी अग्रजके समान उन्होंने स्नेह दे रखा था।

मुझे 'कल्याण' के 'नारी-अंक' में कुछ चरित लिख देनेके लिए भाईजीने पहले-पहल बुलाया था। उस समय मैं दो महीने गोरखपुर रहकर लौट आया। वैसे 'वेदान्त-अंक' में मेरी कविता छपी थी और 'कल्याण'में मेरी कहानियाँ एवं लेख सन् '३७ से छप रहे थे। मैं सन् '३८ में एक दिनके लिए गोरखपुर रह भी आया था। किन्तु निकटसे श्रीभाईजीको देखनेका अवसर मिला तब, जब 'कल्याण' के 'उपनिषद्-अंक'की तैयारी चल रही थी और मैं गोरखपुर पहुँचा एक वर्ष पीछे निकलनेवाले विशेषाङ्क 'हिन्दू-संस्कृति-अंक'की तैयारीके लिए। उस समय लगभग तीन-साढ़े-तीन वर्ष गीता-वाटिकामें रहा। वहाँसे आकर दुबारा लगभग वर्षभर पीछे ही 'बालक-अंक' की तैयारीके समय बुलाया गया और तब 'तीर्थाङ्क' तैयार करके लगभग पाँच वर्ष बाद वहाँसे लौट सका।

आठ-नौ वर्ष श्रीभाईजीके सम्पर्कमें रहा और खूब निकट सम्पर्कमें रहा। उनका भरपूर स्नेह तो मुझे वहाँ न रहनेपर भी मिलता ही रहा और पीछे भी कई विशेषाङ्कोंकी तैयारीके लिए बुलाया गया। भाईजीका अकस्मात् तार आ जाता था, वे इतना अपना मानते थे। इतना स्वत्व मानते थे कि पत्र प्रायः नहीं आता था। तार आता था : 'अमुक विशेषाङ्कके कामके लिए शीघ्र आइये' और मैं पहुँच जाता था।

इस सम्पर्कमें मैंने उन्हें जो देखा और जाना है, उस विषयमें कुछ कहनेसे पूर्व मुझे एक-दो बातें दूसरी कहनी हैं। मैंने सन्तों-महापुरुषोंकी बहुत-सी जीवनियाँ देखी-पढ़ी हैं; किन्तु श्रीचैतन्य-चरितावलीको छोड़कर मुझे प्रायः निराशा ही मिली है। महापुरुषोंकी जीवनियोंके लेखकोंने प्रायः महापुरुषकी महापुरुषताको गौण कर दिया है और महत्त्व जिन चमत्कारोंको दिया है, वे महापुरुषके जीवनमें भी महत्त्वहीन और साधकके लिए भी व्यर्थ होते हैं।

बचपनसे ही मुझे सिद्धियों-चमत्कारोंके होने-घटनेमें विश्वास रहा है; किन्तु उनसे वितृष्णा रही है। अनेक प्रख्यात सिद्ध मिले भी; किन्तु सिद्धियोंके प्रति कुतूहल भी नहीं जागा।

किसीने किसीके मनकी बात जान ली या बता दी, कुछ पदार्थ मँगा दिये, किसी अल्प पदार्थसे बहुत लोगोंको तृप्त कर दिया, विपत्तिमें आशीर्वाद या शुभकामनासे किसीको बचा दिया, आनेवाली विपत्तिसे चेतावनी देकर बचा दिया किन्हींको, ये बातें महापुरुषोंके जीवनमें बहुत होती हैं—प्रायः सर्वत्र होती हैं; किन्तु नगण्य हैं—ध्यान न देने योग्य हैं ये चमत्कार!

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

किसीको भगवद्दर्शन हुआ—एक या अधिक बार हुआ अथवा उन्होंने किसीको, किन्हीं-कई लोगोंको भगवद्दर्शन करा दिया। यह चमत्कार आपको महान् लगता होगा—मुझे यह भी उपेक्षणीय लगता है; क्योंकि आत्म-सम्मोहन (सेल्फ हिप्नाटिज्म) अथवा सम्मोहन (हिप्नाटिज्म) से भी ऐसा होता है, अधिकतर इसी प्रकार होता है। तब यह सचमुच भगवद्दर्शन है या सम्मोहनका प्रभाव है, यह भेद करना असम्भवप्राय हो जाता है। मैं कई लोगों को जानता हूँ जिनका कहना है कि उनको एक या अनेक बार भगवद्दर्शन हुआ। उनमें कई झूठ बोलेंगे, इसकी कोई सम्भावना मुझे नहीं लगती; किन्तु उनमें मुझे महापुरुषताका चिह्न भी नहीं दीखता।

महापुरुषता क्या है ? यह है क्लेशकी आत्यन्तिक निवृत्ति। अविद्या, अस्मिता, राग-द्वेष और अभिनिवेश ये पाँच क्लेश हैं। इनमें अविद्या निवृत्त हुई या नहीं, यह स्वसंवेद्य है। इसे कोई दूसरा नहीं जान सकता। अभिनिवेश अर्थात् शरीरको ही सब कुछ मानना साधारण साधक में भी नहीं होता। अतः दूसरेके लिए अस्मिता अर्थात् सम्मान-सुयश-पद-प्रतिष्ठाकी वासना और राग-द्वेष देखना ही सम्भव है और ये जिसमें न दीखें वही महापुरुष है।

महापुरुषके जीवनमें यह देखा जाना चाहिए कि वह राग-द्वेषसे कितना ऊपर है। कितना सहिष्णु है, कितना निरपेक्ष है। उसमें सर्वत्र भगवद्भाव कितना है। साथ ही उसके संगसे, उसकी प्रेरणासे लोगोंमें कितने सद्गुण, कितना भगवद्भाव आया और कितने दुर्गुण छूटे। चमत्कार ही देने हों तो वे किसी महापुरुषकी जीवनीके परिशिष्ट मात्र हो सकते हैं।

श्री भाईजीका संक्षिप्त जीवन-परिचय पत्र-पत्रिकाओंमें निकला है। सहस्रों लोग उनके द्वारा लाभान्वित हुए हैं और उनके सम्पर्कमें रहे हैं। सबको वे अपने लगे हैं। उनके सम्बन्धमें बहुत अधिक गहराईमें जाकर कुछ कहनेकी स्थिति मेरी नहीं है।

मेरे जैसे व्यक्तिको भी अपना लेना, सह लेना और उसे निर्बाध स्नेह देते रहना, यह मुझे श्री भाईजीकी महापुरुषताका सबसे बड़ा प्रमाण लगता है; क्योंकि मैंने कन्हाईको जबसे अपना कहा—मुझे लगता है कि ब्रह्मा तकके पास ऐसी कोई तोप नहीं जो मेरा कुछ कर ले सके, मुझे थोड़ी भी चोट पहुँचा सके। स्वभावसे ही मैं रूक्ष, उद्धत और जो मनमें आये, उचित या अनुचित, सो कर बैठनेवाला हूँ। कन्हाईके इस अपनत्वने तो मुझे सर्वथा निरंकुश ही बना दिया है।

औरोंको जो महान् अनर्थ लगे, वह भी मुझे खेलमात्र लगता है। ऐसे किसी खेलमें हाथ डालनेपर एक अद्भुत सत्यका बरसोंसे अनुभव होता आया है। जो उचित नहीं है, उसे कन्हाई सफल ही नहीं होने देता। किन्तु मेरा हाथ वह रोके तो रोके, यदि दूसरा रोके, बुरा माने, रोष करे तो पता नहीं कैसे—उसको हानि और कभी बड़ी हानि भी उठानी पड़ती है। लेकिन जो अनुचित भी सह गये हैं, सहयोगी बने हैं, उन्हें जैसे पुरस्कार दिया हो नन्दकुमारने। दो-चार बार तो उनके सम्बन्धमें ज्योतिषके बड़े मर्मज्ञोंकी सब अनर्थपरक भविष्यवाणियाँ तक श्यामने झूठी करके उन्हें पुरस्कृत किया है।

अब ऐसा निःशंक, निरंकुश उद्धत व्यक्ति साथ रहे तो उसे निभा लेना क्या सहज है ? एक दो उदाहरण देख लें :

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गीता-वाटिकामें मैं जिस कोठरीमें रहता था, मेरे कार्यालय चले जानेपर श्री भाईजीके प्रियजन उस कोठरीमें फोटोग्राफीका कुछ काम सीखते। पुरानी पुस्तकोंकी फोटो-प्रति बनाते। उनसे अपेक्षा थी कि मेरे कोठरीमें आनेसे पूर्व काम समाप्त करके, सब समान तख्तेके नीचे करके चले जाया करें। बड़ी सावधानीसे वे इस अपेक्षाका निर्वाह करते थे।

एक दिन उनमें-से किसीसे थोड़ी भूल हुई। इन्लार्जर वे तख्तेके नीचे थोड़ा कम खिसका गये। मैं रात्रिमें सोकर उठा तो मुझे ठोकर लगी। चोट तो नहीं लगी; किन्तु झल्ला कर मैंने इन्लार्जर उठाकर बाहर फेंक दिया। उसके शीशे टूट गये, कैमरा दूर जा गिरा। मैं तो समयपर कार्यालय चला गया; किन्तु उन लोगोंने बाहर पड़े शीशेके टुकड़े चुनकर उठाये। मेरी कोठरीसे सब सामान उठा ले गये।

बात श्रीभाईजी तक न जाय, सम्भव नहीं; किन्तु कुछ हुआ भी, इनकी चर्चा मेरे कानतक कभी नहीं आयी।

× × ×

एक बार ही नहीं, तीन या चार बार मेरे औद्धत्यसे मेरी उच्छृंखलतासे, मेरे असंयमसे वहाँके लोगोंको बहुत क्षोभ हुआ। उनका क्षोभ उचित था। भाईजीके पास जानेके अतिरिक्त उनके पास उपाय नहीं था। किन्तु परिणाम ? वे श्री भाईजीके पास गये और कुछ कहा, यह बात भी मुझे पता न लगती, यदि कोई दूसरा मुझे वह न बतलाता।

मेरी कहानियोंके कुछ संग्रह गीता-प्रेसने छापे। 'कल्याण'में उनकी सूचना देखकर मैंने खूब कड़ा पत्र भाईजीको लिखा। उत्तर आया—बीमारी चलते हुए स्वयं उन्होंने उत्तर दिया था—'आपकी कहानियोंको मैंने सहज भावसे वैसे ही छपने भेज दिया, जैसे अपनी कोई रचना भेजता हूँ। आपसे पूछना भी चाहिए, यह स्मरण नहीं आया। अब झगड़ना हो तो मुझसे झगड़िये।'

× × ×

बहुत पहलेकी बात है। तब गीता-वाटिकामें बिजली नहीं थी। घरमें घिया (लौकी) का शाक बना। भाईजीको पहले भोजन करानेको बैठाया गया। उन्होंने अचानक कहा : 'बहुत अच्छा बना है, मैं शाक ही खाऊँगा। सब मुझे दे दो।'

घियाका जितना शाक बना था, सब वे खा गये। भाभीजी जब उनकी थालीमें भोजन करने बैठीं, तो जहाँ घियाका शाक पड़ा था, वहाँ पड़ा भात कड़वा हो गया। तब कहीं पता लगा कि शाक कड़वी तूंबीका बन गया था। पूछनेपर भाईजीने पत्नीसे कहा : 'मैं तो चाहता था कि महाराजिनको दुःख न हो कि मैंने बिना शाक आज भोजन किया। तुमने बतला कर मेरा उद्देश्य ही नष्ट कर दिया।'

स्वयं भगवन्मय, जगत्को भगवन्मय देखनेवाले और कर्ममात्रको भगवत्सेवा समझकर करनेवाले ऐसे महापुरुषका मुझे स्नेह-सम्पर्क मिला, यही मेरा बहुत बड़ा सौभाग्य था।

●

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आदर्शमित्र श्रीपोद्दारजी : उन्हींके शब्दोंमें

संग्राहक—श्री सूर्यकान्त फोगला : भाईजीके दौहित्र

★

लगभग पैंतालीस साल पहलेकी बात है। मैं उस समय बम्बई नगरमें व्यापार करता था। यद्यपि व्यापारमें मुझे सफलता कम ही मिली थी, पर बड़े-बड़े व्यापारियोंके तथा समाजके सुप्रतिष्ठित पुरुषोंके मनमें मेरे प्रति बहुत श्रद्धा, प्रेम तथा आदरका भाव था। मेरी बातका बहुत बड़ा विश्वास था सभी लोगोंके हृदयोंमें।

मेरे एक परिचित मित्र सज्जन थे। वे एक बड़े फर्ममें प्रधान व्यवस्थापक थे, पर अपना सट्टेका काम भी करते थे बड़े पैमानेपर। लोग जानते भी थे, फिर भी उनकी ईमानदारीमें लोगोंका दृढ़ विश्वास था। एकबार उनके बहुत घाटा लगा। भुगतानकी और व्यवस्था तो हो गयी, पर लगभग साठ हजार रुपयेकी कमी पड़ रही थी। वे जिस फर्ममें काम करते थे, उसके मालिक भी इनके सट्टेके व्यापारसे जानकार तो थे, पर उनका विश्वास था कि ये ऐसा काम कभी नहीं करेंगे, जिससे इज्जतमें कोई बाधा आये। फिर भी यह नियम कर रखा था कि फर्ममेंसे वे अपना नाम लिखकर व्यापारके लिए एक पैसा भी कभी नहीं उठायेंगे। यह बात भी प्रसिद्ध थी कि वे लाखों रुपये कमा चुके हैं। पर इधर कई दिनोंसे उन्हें घाटा लग रहा था, इससे पासकी पूँजी समाप्त हो गयी थी।

सट्टेबाज लोग प्राय: घाटा भरनेके लिए दूना-चौगुना काम किया करते हैं, यद्यपि यह कमजोरी है। मेरे इन मित्रमें यह कमजोरी भी नहीं थी, इससे ये घाटा दीखते ही सौदा काट देते थे। फिर भी होनहारकी बात! इनको उलटी सलाह मिलती रही, घाटेमें सौदे खड़े रहे और बढ़ते रहे। इसीसे इनकी पूँजी समाप्त हो गयी और इस समय साठ हजार रुपयोंके लिए इनका भुगतान अटकनेकी सम्भावना हो गयी। ये घबराये!

असली हालत ये किसीको न बतलाना चाहते थे, न बतलानेमें लाभ ही था। मुझसे भी ये कम ही बताते थे, पर कभी बता देते थे। यद्यपि मेरे पास पैसे नहीं थे, पर काम अटकनेपर कभी-कभी मेरे द्वारा इनका काम निकल भी जाता था। पर इन दिनों मैं बाहर गया हुआ था। इन्हें जब कोई रास्ता नहीं दिखायी दिया, तब इन्होंने दु:साहस करके मेरा नाम लिखवाकर साठ हजार अपने फर्मसे लेकर अपना भुगतान कर दिया। इस फर्मसे मेरा लेन-देनका सम्बन्ध नहीं था, पर मुझपर श्रद्धा-विश्वास होनेके नाते फर्मके मालिकने इनसे कह रखा था कि वे 'मुझे कभी आवश्यकता होनेपर उनसे बिना पूछे भी ये एक लाख रुपयेतक मुझे दे सकते हैं।' इसीका इन्होंने लाभ उठाया। इनका भुगतान हो गया। इसके पन्द्रह-बीस दिन बाद फर्मके मालिकने खातेमें मेरे नाम साठ हजार रुपये देखे तो उन्होंने पूछा। इन्होंने कह

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दिया : 'उनको आवश्यकता थी, इसलिए रुपये दे दिये गये। आपकी अनुमति थी ही।' मैं उस दिनतक बाहरसे नहीं लौटा था।

इधर लोगोंकी कानाफूसीके जरिये यह बात कुछ-कुछ फैल गयी कि मेरे इन मित्रको इधर बड़ा घाटा लगा है। इससे इनके फर्मके मालिकके मनमें भी कुछ सन्देह पैदा हो गया कि 'शायद रुपये मैंने नहीं लिये हैं, उनके व्यवस्थापकजीने ही मेरे नाम लिखकर ले लिये हैं।' उन्होंने फिर पूछा तो इन्होंने कहा : 'रुपये उन्होंने ही लिये हैं, उनके हाथकी रसीद मेरे पास है। घरपर रखी है, कल ला दूँगा।'

मैं उसी रातको आनेवाला था, यह मेरे इन मित्रको मालूम था। अतएव रात्रिको जब मैं लौटकर आया, तभी ये मेरे पास आये और सारी बात सुनाकर कहा : 'मैंने यद्यपि आपके विश्वास तथा प्रेमका दुरुपयोग किया है, बड़ा पाप किया है, पर मजबूर होकर मुझे ऐसा करना पड़ा। अब तो आप साठ हजार रुपयोंकी प्राप्तिकी रसीद लिख दें, तभी मेरी इज्जत बच सकती है।'

मैंने सारी बातें शान्तिपूर्वक सुनीं। मैंने सोचा, होना था सो हो गया। मन-ही-मन भगवान्‌से प्रार्थना की कि वे उन्हें सद्‌बुद्धि दें। तत्काल मेरे हृदयमें स्फुरणा हुई—रसीद लिख दे देनी चाहिए। मैंने उनकी बतायी हुई तारीख डालकर अपने हाथसे रसीद लिख दी और उसपर टिकट लगाकर हस्ताक्षर करके उनको दे दिया। साथ ही उनके कथनानुसार फर्मके मालिकके नाम एक पत्र लिख दिया कि 'मैंने आपके व्यवस्थापक महोदयसे कहकर उस दिन साठ हजार रुपये मँगवाये थे। पाँच-सात दिनके लिए आवश्यकता थी। मुझे उसी दिन बाहर जाना था, इसलिए मैं आपसे बात नहीं कर सका। रसीद उन्हें दे दी थी। पर अब एक अनुरोध है, बड़े संकोचके साथ लिख रहा हूँ—मेरे एक बड़ी अड़चन आ गयी, इसलिए मैं छः महीने बाद रुपये लौटा सकूँगा। आशा है, आप इसे स्वीकार करेंगे।'

पत्र उन्हें दे दिया गया। शामको ही मेरे पास फर्मके मालिक महोदयका फोन आया कि 'आप इतना संकोच क्यों करते हैं? आपके रुपये तो मेरे घरमें ही पड़े हैं, सुरक्षित हैं। जब सुविधा हो, भिजवा दीजियेगा। मैंने सब रूबरू मिलकर आपसे इसलिए बात नहीं की कि कहीं आपको संकोच न हो। आपको आवश्यकता हो तो और रुपये भिजवा दूँ।' मैं तो उनकी बात सुनकर दंग रह गया। मैंने किस कामके लिए रुपये मँगाये, यह भी नहीं पूछा, वरन् और देनेको तैयार थे,। ऐसे मानव ही तो देवता हैं।

मैंने पत्र इसीलिए लिखा भी था कि वे रुपयोंके लिए तकादा न करें, क्योंकि मेरे इन मित्रने कहा था कि 'छः महीनेमें मैं कहींसे व्यवस्था कर सकूँगा।' मैंने इनसे यही कहा था कि 'मेरे पास रुपये होते तो मैं इसी समय दे देता, आपके पास जब आते आप लौटा देते, पर मेरे पास नहीं हैं, इसलिए मैं पत्र लिख रहा हूँ।' इनको बड़ा संकोच हो रहा था कि इनके कारण मुझको मिथ्या रसीद देनी पड़ी तथा रुपयोंके लिए पत्र लिखना पड़ रहा है। पर ये भी निरुपाय थे।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मेरे कथनानुसार इन्होंने भागवतोक्त गजेन्द्रस्तवन (भागवत अष्टम स्कन्ध, तृतीय अध्याय) का पाठ आरम्भ कर दिया। मैं भी चेष्टा करता रहा। भगवान्‌की कृपासे चार ही महीनेमें उन्होंने कुछ व्यवस्था की, कुछ मैंने और इनके मालिकके रुपये ब्याजसमेत लौटा दिये गये। भगवान्‌ने लाज तथा इज्जत रख ली।

मित्रकी सहायता तो हो गयी, पर बिना कुछ हुए मैंने झूठा पत्र लिख दिया, कहने-सुननेसे मैंने रुपये लेनेकी बात स्वीकार कर ली—यह क्रिया असत्य तो थी ही। अतएव इसके लिए प्रायश्चित्त करना आवश्यक था। उन दिनों मैं छोटी-छोटी बातोंपर गम्भीरतासे विचार करता था। मैंने इसे अपराध माना और इसके प्रायश्चित्तस्वरूप बड़ी संख्यामें भगवन्नामका जप किया।

भगवान्‌की लीला विचित्र होती है। मेरे मित्रने उस फर्ममें काम करना छोड़ दिया और अपना स्वतन्त्र सट्टेका काम करने लगे। भगवान्‌की कृपासे उन्हें कुछ ही दिनोंमें ५०-६० लाख रुपयोंकी प्राप्ति हो गयी। पैसेके साथ रहनेका, कामका ढंग बदल गया। लड़का बड़ा था, उसका विवाह तय कर दिया गया। विवाह राजस्थानमें अपने पैतृक घरपर करने जाना था। पर विवाहकी सब तैयारियाँ—गहना कपड़ा आदि बम्बईसे ही तैयार करके ले जाना था। उसके लिए जोर-शोरसे तैयारियाँ आरम्भ हो गयीं। मुझे पता चला, वे अमुक दिन लड़केकी शादीके लिए राजस्थान जानेवाले हैं। मैं उनसे मिलने गया। मैंने देखा, उनके घरपर लोगोंकी भीड़ जमी है! जौहरी, सुनार बैठे हैं, कपड़ेके अच्छे-अच्छे सौदागर बैठे हैं तथा काम करनेवाले नौकर-चाकर बैठे हैं। मुझे उनका यह वैभव देखकर मनमें एक बात आयी।

मैंने अपने मित्रसे कहा : 'भैया! देख आज कितनी भीड़ जमी है।'

उन्होंने उत्तर दिया : 'भाईजी! यह तो आपकी कृपा एवं प्यारका ही फल है।'

मैंने कहा : 'यह भीड़ आपके लिए नहीं, पैसेके लिए है। अतएव मेरी यह प्रार्थना है कि भगवान्‌की कृपाका आदर कीजिये और अब सट्टा करना छोड़ दीजिये। सुखसे रहिये, छोटा-मोटा और काम कर लीजिये और भगवान्‌का भजन करते रहिये।

बोले : 'भैया! बहुत ठीक आपने जैसा कहा, वैसा ही करूँगा। मैं आपके आदेशका पालन करूँगा।' मैं मिलकर चला आया।

पर माया बड़ी प्रबल होती है। वे मेरी बात मानकर सट्टेके बाजार गये कि जो सौदा किया हुआ है, उसे सलटा दिया जाय। पर वहाँ चीजोंके भाव बहुत अनुकूल दिखायी दिये। लोभका शैतान सिरपर सवार हो गया। सट्टा सलटानेके स्थानपर उन्होंने और सट्टा कर डाला। अधिक परिणाममें सट्टा करके वे राजस्थान लड़केके विवाहके लिए चले गये। पीछे बाजार बड़ा विपरीत चला और उन्होंने जो सट्टा कर रखा था, उसमें इतना घाटा लगा कि सब सम्पत्ति जाती रही। बेचारे पछताकर रह गये। पीछे उन्होंने फिर प्रयत्न किया, पर पैसा नहीं आया।

●

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दैवी सम्पदाके धनी महात्मा

श्री मुंशीराम शर्मा 'सोम'

✶

भगवान्‌की लीला विचित्र है। वह सत्त्व-सम्पन्न दिव्य पुरुषोंको उत्पन्न करता है, जिससे उनकी जीवन-झाँकी देखकर सामान्य जन दिव्यपथ पर चलनेकी प्रेरणा प्राप्त कर सके। सामान्यत: ये दैवी-पुरुष आत्माभिव्यंजनसे दूर रहते हैं, फिर भी तत्त्वदर्शी उन्हें जान ही लेते हैं और सामान्य जन तक भी उनकी जीवन-धाराका प्रवाह किसी न किसी रूपमें पहुँच ही जाता है। स्वर्गीय दैवी-सम्पदाके धनी महात्मा हनुमानप्रसादजी पोद्दार 'कल्याण' (अंग्रेजी-हिन्दी) के सम्पादकके रूपमें बहुजन-हिताय अपनी साधनामें संलग्न रहे। इसमें सन्देह नहीं कि 'कल्याण'के माध्यमसे उनका व्यक्तित्व चतुर्दिक् फैल गया। उनके सम्पादकीय लेख, जो प्राय: 'कल्याण' के अन्तमें प्रकाशित होते रहे, उनके मानसिक चित्रको सबके समक्ष प्रकट करते रहे। हिन्दुत्व उनकी दृष्टिमें संकीर्ण सम्प्रदाय नहीं था। वे हिन्दुत्वके मानवतावादी उच्चादर्शसे प्रेरित थे। विश्व-कल्याण जिन साधनों पर अवलम्बित है, उन्हींका प्रचार उनके 'कल्याण' द्वारा हुआ। गो-वधको इस देशके माथेपर कलंकका टीका समझते थे और इसीलिए गो-रक्षाके लिए वे सतत प्रयत्नशील रहे। आर्य-जातिके पास जो कुछ भी शिव और शुभका अंश है, उसे 'कल्याण' द्वारा वे सभी पाठकोंतक पहुँचाते रहे।

●

वास्तवमें नर-रत्न थे !

जगन्नारायणदेव शर्मा 'कविपुष्कर'

श्रीहनुमान-प्रसाद, हाय, परलोक पधारे,
हिन्दू-हिन्दी-हिन्द, देशके सबल सहारे।
सत्य सनातन धर्म-कर्मके निर्भय नेमी,
वेद-शास्त्र-उपनिषद्-ग्रन्थ, गीताके प्रेमी॥
भारतीय संस्कृति तथा—
शिक्षामें गतिवान थे।
सदाचार - सम्पन्न जो,
विनयशील मतिमान थे॥

●

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पुण्यश्लोक श्री भाईजी

★

श्री हनुमानप्रसाद पोद्दारजीके निधनसे हिन्दुत्वकी अपार क्षति हुई है। वे कट्टर सनातन-धर्मी तथा समाजसेवक थे। उन्होंने 'कल्याण'के माध्यमसे सनातनधर्मका प्रचार-प्रसार-किया तथा गोवध-निरोध महाभियानमें महत्त्वपूर्ण सहयोग दिया है।

श्री कृष्णबोधाश्रमजी
जगद्गुरु शंकराचार्य : ज्योतिर्मठ

श्री निरंजनदेव तीर्थ
जगद्गुरु शंकराचार्य : पुरी

भारतीय धर्म और संस्कृति गाय, गीता और गङ्गा—त्रैविक्रम-पादकल्प इन तीन वस्तुओंमें समाती है। भारतीयोंके ये निरतिशय-श्रद्धा विन्दु हैं। बैकुण्ठलीन भाई हनुमानप्रसाद पोद्दारजीने अपने जीवनमें इन्हीं तीन पदोंको विश्वमें सुस्थिर करनेमें अपना सारा पुरुषार्थ लगा दिया और एक परम भागवत-सा जीवन जिया। गोरक्षा-आन्दोलनके समय उनके इस रूपका मुझे विशेष साक्षात्कार हुआ। ऐसे व्यक्तिका समाजसे उठ जाना उसकी बहुत बड़ी क्षति है।

महामण्डलेश्वर गङ्गेश्वरानन्दजी
उदासीन-सम्प्रदायाचार्य

भाई श्री हनुमानप्रसाद पोद्दारजीका जीवन इतना पुनीत, राष्ट्रभक्ति, धर्मनिष्ठा और परमात्माके श्रीकृष्ण-रूपमें उत्कट-अविचल भक्तिसे ओत-प्रोत था कि उनका इहलोकसे गमन परम सौख्यमय, चिरन्तन भगवल्लोकमें प्रवेश और भगवत्सान्निध्यमें चिर निवासके रूपमें ही हुआ है, यह मेरी श्रद्धा है। अतः उनके लिए शोक नहीं, शोक तो हम सब जो पीछे रहे हैं, उनकी दशापर है कि हम लोगोंके सम्मुख अब वह जीता-जागता कर्म, भक्ति, योग, ज्ञान और माधुर्यसे परिपूर्ण आदर्श नहीं रहा। उनके जीवनका आदर्श अपने जीवनमें उतारनेका प्रयत्न करते हुए उनके धर्म-जागरण-कार्यको निरन्तर आगे बढ़ानेमें अपनी योग्यता तथा प्रवृत्तिके अनुसार लगा रहना ही उनके प्रति श्रद्धा अभिव्यक्त करनेका योग्य मार्ग होगा।

माधव सदाशिव गोलवलकर

श्री हनुमानप्रसाद पोद्दारजीके निधनसे भारतीय संस्कृतिकी जो क्षति हुई, उसकी पूर्ति सम्भव नहीं है। उन्होंने मासिक-पत्र 'कल्याण' द्वारा हिन्दू-धर्म और हिन्दू-जातिकी जो सेवा की है, उसे देश भुला नहीं सकता। पोद्दारजीका शास्त्रीजी एवं उनके परिवारके साथ बहुत घनिष्ठ सम्बन्ध रहा है।

श्रीमती ललिता लालबहादुर शास्त्री

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

श्री पोद्दारके निधनसे हिन्दू-धर्म एवं संस्कृतिकी अपूरणीय क्षति हुई है।

अनन्तशयनम् आयंगर
भू० पू० राज्यपाल : बिहार

श्री पोद्दारका निधन सुनकर मर्माहत हो गया !

विश्वनाथदास
भू० पू० राज्यपाल : उत्तर प्रदेश

भाईजीके देहावसानका समाचार पाकर मार्मिक दुःख हुआ। एक अपूर्व विभूति हमारे बीचसे उठ गयी। उनके जैसा देशभक्त, धर्म-परायण सज्जनका आजके संसारमें मिलना असम्भव है। उन्होंने कितना काम किया, कितनोंको शिक्षा दी, इसका हिसाब लगाना कठिन है।

श्रीप्रकाशजी
भूतपूर्व राज्यपाल

पूज्य श्री हनुमानप्रसादजी पोद्दारकी पार्थिव-देह पञ्चतत्त्वोंमें विलीन हुई है। उनका सुयश अजर-अमर है। भारतीय संस्कृतिके महान् दीप-स्तम्भ थे वे। आध्यात्मिक विचार और संस्कारके प्रचार-प्रसारमें उनका योगदान चिरस्मरणीय रहेगा।

श्रीमन्नारायण, मदालसा
राज्यपाल : गुजरात

श्री पोद्दारकी सेवाएँ सदैव याद की जायँगी। वे बीकानेरके थे, यह एक गर्वकी वस्तु है।

बीकानेरके महाराज तथा महारानी

भाईजीके निधनसे भारतके साथ मारीशसके लाखों भारतीय प्रवासियोंने भी अपना एक धार्मिक पथ-प्रदर्शक खो दिया।

स्वामी कृष्णानन्द, मारीशस

श्री पोद्दार मेरे पुराने मित्र थे। हिन्दू-धर्म तथा साहित्यके प्रसारमें उनकी सेवाएँ अविस्मरणीय हैं।

घनश्यामदास बिरला

पोद्दारजीके निधनसे हिन्दू-धर्म और हिन्दू-संस्कृतिका एक महान् अध्वर्यु उठ गया। विश्वमें हिन्दू-धर्मके प्रचार-प्रसारके लिए पोद्दारजीने जो आजीवन यत्न किया, वह हमारे राष्ट्रिय इतिहासमें सदैव सुरक्षित रहेगा।

अटलबिहारी वाजपेयी
अध्यक्ष : जनसंघ

श्रद्धेय भाईजीका स्वर्गवास मानव मात्रकी अपरिमित हानि है। एक असामान्य भागवत एवं कर्मयोगकी साकार मूर्ति, करुणाका सागर, विनम्रताकी विभूति, निःस्वार्थ प्रेमका प्रतीक, ज्ञानका गणेश और सेवाका आदर्श उठ गया!

नानाजी देशमुख

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सम्पूर्ण देश तथा विदेशोंमें हिन्दू-धर्मके महान् सिद्धान्तोंके प्रचार एवं प्रसारमें सत्-साहित्यके प्रकाशन एवं प्रसारमें गीताप्रेस गोरखपुरके माध्यमसे जो सेवाएँ उन्होंने की हैं, वे अनेक संस्थाएँ मिलकर भी नहीं कर सकेंगी। गीतोक्त निष्काम कर्मयोगके वे मूर्तिमान् स्वरूप थे।

बृजनारायण 'बृजेश'
अध्यक्ष : हिन्दू-महासभा

पोद्दारजीके निधनसे देश और समाजकी बहुत बड़ी क्षति हुई है। पोद्दारजी उन कर्मनिष्ठ सेवियोंमें थे जिन्होंने न केवल देशमें, अपितु विदेशोंमें भी हिन्दू-धर्मके प्रचार-प्रसार द्वारा भारी कार्य किया। वे स्वयंमें एक संस्था थे।

प्रकाशवीर शास्त्री
महासचिव : भारतीय क्रान्तिदल

श्री हनुमानप्रसाद पोद्दारके निधनसे भारतीय संस्कृतिकी बहुत बड़ी क्षति हुई।

गोविन्द शंकर कुरूप
अध्यक्ष : भारतीय साहित्य-परिषद्

पोद्दारजी न केवल सनातनधर्मके, अपितु समस्त हिन्दू-समाजके हितचिन्तकोंमें से थे। वे स्वामी दयानन्द सरस्वती एवं आर्य-समाजके प्रति भी भारी श्रद्धा रखते थे।

लाला रामगोपाल शालवाले
महासचिव : सार्वदेशिक आर्य-प्रतिनिधि सभा

गोरक्षा-आन्दोलनके कारण मुझे भाईजीका निकट सम्पर्क और सहज स्नेह प्राप्त करनेका अवसर मिला। ऐसा निर्मल और विशाल हृदय मिलना कठिन है। अध्यात्म-जगत्‌की दिव्य-ज्योति बुझ गयी।

विश्वंभर सहाय शर्मा
अध्यक्ष : भारत गोसेवक-समाज

पूज्य महामना मालवीयजी और पू० ब्रह्मलीन जयदयालजी गोयन्दकाके बाद हिन्दू तथा आर्य-धर्मके एकनिष्ठ उपासक तथा हृदयसे सबके आत्मीय पूज्य भाईजी चले गये। उनके जानेसे जो धार्मिक क्षति हुई है, उसकी केवल भगवान् ही पूर्ति कर सकते हैं। उनके बराबर धर्मनिष्ठ व्यक्ति भारतमें इने-गिने होंगे। मुझे बाल्यकालसे उनका सत्संग मिला है। मैं क्या कहूँ, मेरे तो परम आत्मीय, पूज्य मित्र थे।

नारायणदास बाजोरिया

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जिनके कार्य चिरस्मरणीय रहेंगे

भाई हनुमानप्रसादजी पोद्दारके निधनसे सारा देश स्तम्भित है। धार्मिक-जगत्में सर्वत्र शोककी लहर व्याप्त है। पोद्दारजी हिन्दू-धर्म तथा संस्कृतिके सच्चे प्रतीक थे। वे एक क्रान्तिकारी नेता थे। भारतीय स्वतन्त्रता-संग्राममें उनका योगदान सदा-सर्वदा स्मरणीय रहेगा। जीवन-पर्यन्त हिन्दू-धर्म और संस्कृतिके उत्थानके लिए उन्होंने अथक परिश्रम किया। गीताप्रेस द्वारा हिन्दू-धर्म और संस्कृतिको जन-जनके हृदय तथा घर-घर पहुँचानेका महान् कार्य उन्होंने किया, जो भारतीय इतिहासमें स्वर्ण अक्षरोंमें लिखा जायगा। सनातन हिन्दू-धर्मकी प्रतीक गोमाताकी सेवा एवं रक्षामें वे सदैव तत्पर रहते थे। श्री पोद्दारजी जैसे धर्म-प्रेमी, देश-भक्त, क्रान्तिकारी, कर्मठ कार्यकर्ता एवं सर्वजनप्रिय महान् आत्माके निधनसे देश एवं विशेषकर धार्मिक जगत्को अपूरणीय क्षति पहुँची है। देश, सनातन-धर्म तथा जन-कल्याणके उनके महान् कार्य सदा-सर्वदा चिरस्मरणीय रहेंगे।

स्वामी आनन्द
महामन्त्री : भारत साधु-समाज

जहाँ वाणी मौन हो जाती है

हमारे बीचसे एक प्रभु-विश्वासी उदार तथा परम स्नेही प्रिय भाईजी चले गये। वे क्या थे? कहाँसे आये? इसे तो वे ही जानें, पर प्रेमीजनोंके सर्वस्व थे। उनके जीवनसे प्रभु-प्रेमकी अविचल निष्ठाकी प्रेरणा भक्तजनोंको प्रेरित करती रहती। बाह्य दृष्टिसे तो उनके निधनसे बड़ी ही क्षति हुई है, पर वास्तवमें तो भक्तजनोंकी भक्ति सतत ज्यों-की-त्यों भक्तोंको शक्ति प्रदान करती रहती है। उनकी साधना सदैव हम लोगोंके साथ है। उनके दिखाये पथपर दृढ़ रहना है और उसीसे हम सबकी अभिन्नता हो सकती है। शरीर तो सदैव ही अलग था, अब सदाके लिए अलग हो गया। उनकी मधुर उदारता हृदयको पीड़ित करती है। वे तो अपने धाममें बड़े ही आनन्दमें हैं, उनके वियोगसे भोले भक्तोंका हृदय पीड़ित है। अधिक बोला नहीं जाता, हृदयकी मधुर पीड़ा कराहको अवरुद्ध करती है।

स्वामी शरणानन्द
अध्यक्ष : मानव-सेवा-संघ, वृन्दावन

जब भाईजी हमसे हारे

हमारा और भाईजी पोद्दारजीका सम्बन्ध 'कल्याण' जबसे गोरखपुर छपने लगा, तभीसे रहा। कईबार 'गीता-वाटिका'में जानेका मौका मिला। भाई पोद्दारजीसे अनेक बातें सीखीं। न तो उन सभी बातोंका स्मरण है और न लिख ही सकता हूँ। आजसे करीब ३० साल पहले 'गीता-वाटिका'में जाना हुआ, तब हमने कहा : 'भाईजी, मैं कुछ प्रचार भी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

करता हूँ और अपना साधन भी।' भाईजीने कहा : "भगवान् श्रीकृष्णने कहा है कि (गीता १८.६८-६९) जो पुरुष मुझसे परम प्रेम करके यह परमरहस्यमय 'गीताशास्त्र' मेरे भक्तोंसे कहेगा, वह निःसन्देह मुझे ही प्राप्त होगा। न तो इससे बढ़कर मेरा अतिशय प्रिय कार्य करनेवाला मनुष्योंमें कोई है और न इससे बढ़कर मेरा अत्यन्त प्यारा पृथ्वीमें दूसरा कोई होगा। साथ ही इस बातका भी ध्यान रखें कि कहीं इस प्रचारके अभिमानी न बन जायँ। यह भी ध्यान रखें कि अपना साधन कभी न छूटे।' उस समय यह भी भाईजीने कहा था :

पण्डित और मसालची इनको दीखत नाहिं।
औरन को कर चाँदनी आप अंधेरे माहिं॥

उस समय एक और बात उन्होंने कही, वह बड़े ही रहस्य की है :

यह भी देख वह भी देख। देखत-देखत ऐसा देख
कि मिटि जाय धोखा, रह जाय एक॥

वैसे तो 'परमार्थ-निकेतन' जबसे बना, प्रायः प्रतिवर्ष कुछ-न कुछ सत्संग हो ही जाता था। भाईजी पोद्दारजीने कहा : 'उलटी गंगा नहीं बहाया करें।' हमने कहा : 'उलटी गंगा भगवान्के चरणोंमें पहुँचेगी और सीधी गंगा खारे समुद्रमें।' सुनकर भाईजी खिलखिला उठे। कहने लगे : 'हम आपसे हार गये।' बातें अनेक हैं, वैसे महापुरुषोंके सम्बन्धमें कोई क्या लिख सकता है ?

महामण्डलेश्वर स्वामी भजनानन्द सरस्वती

सर्वतोमुखी प्रेम और सद्भावनाके स्रोत

कुछ दिनोंसे जैसी आशंका हो रही थी, वैसी दुर्घटना आखिर टल न सकी ! विधिका विधान अटल है और एक-न-एक दिन सभी लोगोंका जाना निश्चित है। फिर भी भाईजी श्री हनुमानप्रसादजीके स्वर्गवाससे सम्पूर्ण आस्तिक-जगत्में महान् शोक-समुद्रका उमड़ना स्वाभाविक है। जिस लगन और निष्ठाके साथ 'कल्याण' और गीता-प्रेसके माध्यमसे उन्होंने आध्यात्मिक जगत्की जो ऐतिहासिक सेवा की है वह सदाके लिए स्वर्णाक्षरोंमें लिखी रहेगी। उनकी दीर्घकालीन सेवाओंका मूल्यांकन करना किसी भी व्यक्तिके लिए सम्भव नहीं। उन्होंने अपने सादे और सात्त्विक जीवन एवं सौम्य व्यवहारसे सभीको अपने प्रति आकृष्ट कर लिया था। उनका प्रेम, उनकी सद्भावना सभी लोगोंके लिए व्यापक रूपसे उपलब्ध थी।

वैसे तो इस देशमें अनेक धार्मिक एवं आध्यात्मिक पत्र निकलते हैं, किन्तु 'कल्याण'का जो सर्वोत्कृष्ट स्थान बन गया है, वह स्वर्गीय भाईजीकी ही उत्कृष्ट साधनाका प्रतीक है। किसी भी धार्मिक एवं आध्यात्मिक पत्रका इतने व्यापक रूपसे लोकप्रिय होना कोई साधारण बात नहीं। वास्तवमें अपनी उत्कृष्ट लेखनी एवं साधनासे जिस प्रकार उन्होंने 'कल्याण' एवं अन्य धार्मिक ग्रन्थोंके माध्यमसे धार्मिक-जगत्की सेवा की है, वह चिरस्मरणीय रहेगी। उनके

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मार्गदर्शनमें केवल 'कल्याण' और गीताप्रेसका ही सफल संचालन नहीं होता था, बल्कि देशकी कितनी ही धार्मिक संस्थाओं एवं बड़ी संख्यामें लोगोंको उनका मार्गदर्शन प्राप्त था। ऐसी महान् विभूतिके उठ जानेसे धार्मिक-जगत्की जो क्षति हुई है, उसकी पूर्ति नहीं हो सकेगी।

मैं ऐसी महान् विभूतिके प्रति अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ और परमात्मासे प्रार्थना करता हूँ।

गजाधर सोमानी

अपूरणीय क्षति

भाई श्री हनुमानप्रसादजी पोद्दार अब नहीं रहे, यह सुनते ही मेरे हृदयपर बड़ा धक्का लगा। मेरा चित्त अशान्त था, कारण गत ८-२-'७१ को मेरे एक पुत्र भगवत्स्वरूपका अचानक देहान्त हो गया था। अतएव इस दारुण दुःखका बोझ मैं भाईजीको पत्र लिखकर हल्का करना चाहता था। दैवदुर्विपाकवश उनका सहारा भी अब नहीं रहा : 'पश्य कामस्य चेष्टितम् !'

स्वर्गीय पोद्दारजी, इस कुतर्क एवं नास्तिकता-प्रधान युगमें अपने साधना-सिद्ध, शुद्ध, सरल, सात्त्विक जीवनमें 'कल्याण' और गीताप्रेसके माध्यमसे निष्ठापूर्वक सनातन-धर्म-प्रचारकी दिशामें असाधारण कार्य कर गये हैं। वे अनन्य हरिभक्तिपरायण परम भागवत थे। उनके रिक्त स्थानकी पूर्ति करनेवाला अब कोई दृष्टिपथमें नहीं आता। मेरे वे पुराने सत्यस्नेही थे।

झाबरमल्ल शर्मा
भूतपूर्व सम्पादक : 'कलकत्ता-समाचार'

सबको प्रसन्न रखनेवाले !

नित्यलीलालीन श्री हनुमानप्रसादजी पोद्दार जीवमात्रके भाईजी थे। उनके किसी भी कार्य या आचरण द्वारा किसीको कष्ट न पहुँचे, इसके लिए बड़े सतर्क रहते थे। सभीकी प्रसन्नता बनी रहे, यह उनका एक व्रत था। यहाँतक कि वे औषधि-उपचारमें भी जो भी कोई डाक्टर-वैद्य उनको अपनी औषधि सेवन करनेको देता, उसकी औषधि सेवन कर लेते। मैंने उनसे एक बार कहा : 'आप बिना सोचे-समझे सबकी औषधि ले लेते हैं, यह ठीक नहीं। कभी कोई औषधि पूर्व-औषधिके विपरीत पड़ जाय तो उसका बड़ा भयंकर परिणाम हो सकता है।' उन्होंने बड़ी सरलतासे उत्तर दिया : 'शरीर तो जब जानेकी अवधि आयेगी, तभी जायगा। इस (औषधि देनेवाले) की औषधि ले लेनेसे इसको प्रसन्नता होगी कि भाईजीने मेरी औषधि ले ली और ठीक हो जानेपर औषधि देनेवालेको द्विगुण प्रसन्नता होगी कि मेरी ही औषधिसे भाईजी ठीक हो गये।'

एक बारकी बात है, मेरे पैरमें एक दुर्घटनासे चोट लग जानेके कारण बड़ा आपरेशन होनेकी बात थी। जिस डाक्टरसे आपरेशन करानेकी बात हुई, किसी कारणवश उससे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आपरेशन नहीं कराना चाहता था। अपनी यह इच्छा जब मैंने भाईजीके समक्ष व्यक्त की तो उन्होंने उसी सरलतासे उत्तर दिया : 'इनसे आपरेशन नहीं कराया जायगा तो इनका जी दुःखेगा। इसलिए इन्हींसे आपरेशन करा लेना चाहिए।' मेरे पास इसका कोई उत्तर नहीं था और मैंने चुपचाप स्वीकृति दे दी।

इस प्रकारका उनका व्रत था कि सभीको प्रसन्न रखना और किसीका भी जी न दुःखाना। दूसरेको सुख मिलनेसे उन्हें सहज आनन्द मिलता। दूसरेका सुख ही उनका सुख था।

जयदयाल डालमिया

आत्मनिष्ठ सत्पुरुष !

भाई हनुमानप्रसादजीसे मेरा संबंध बहुत पुराना और घरेलू रहा है। उनसे मैं पढ़ा भी हूँ। हमारे परिवारके साथ उनका व्यापार-धंधा भी चलता रहा। समय बदला, पूर्व-पुण्य जगे और दुनियादारी, व्यवहार, व्यापार छोड़कर वे सेवामें लग गये। उनके विचारोंमें प्राचीनतम धर्मशास्त्र और आधुनिकतम साइन्स दोनोंका पूरा मेल था। विनोबाजी जैसे आधुनिकतम विचारोंवाले सत्पुरुषपर भी उनकी अखण्ड श्रद्धा रही। साहित्यकी उनकी अखण्ड साधना थी। मैं उनका पुरुषार्थ देखता हूँ तो चकित रह जाता हूँ। 'कल्याण' जैसे मासिक-पत्रकी, जिसमें नया विज्ञान शायद ही मिले, करीब १॥ लाख प्रतियाँ हर माह जाना भारी पुरुषार्थ माना जायगा। गीताप्रेसकी पुस्तकोंकी घर-घर पहुँच, इतनी बिक्री और कीमत भी इतनी कम, इतनी सस्ती कि जिसका मुकाबला न 'सस्ता साहित्य मण्डल' कर पाया न 'सर्व सेवा संघ।'

भाई हनुमानप्रसादजी एक आत्मनिष्ठ पुरुष थे। हमेशा आत्मामें रहते थे। दिनमें सतत १६ से १८ घण्टे तक काम करना उनके लिए नित्य नियम था। कामके अलावा अन्य कोई विश्राम होता है, यह उनको मालूम ही नहीं था। गोरक्षा-आन्दोलन चला तो उसमें अधिकांश आर्थिक भारकी व्यवस्था भाई हनुमानप्रसादजीने की। वे नम्रताकी प्रतिमूर्ति थे। उनका जीवन त्याग, तपस्यामय रहा।

राधाकृष्ण बजाज
अध्यक्ष: सर्व-सेवा-संघ प्रकाशन

हिन्दी, हिन्दू, हिन्दूस्थानके अनन्य उपासक

भाई श्री हनुमानप्रसाद पोद्दार धर्मकी रक्षा और नास्तिकतासे संघर्षके लिए जीवनके अन्तिम समय तक जूझते इस संसारसे गोलोककी ओर प्रस्थान कर गये। भारतके प्राण धर्म एवं आध्यात्मिकताका दृढ़-संकल्पी प्रचारक, प्रसारक और धर्मरक्षक अब इस संसारमें नहीं रहा। संसारमें भारतीय अध्यात्मवादका सन्देशवाहक इस संसारसे उठ गया।

[श्रीकृष्ण-सन्देश

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वस्तुतः भाईजी एक व्यक्ति न होकर धर्मके मूर्तिमान् स्वरूप थे। विनम्र हृदय ही न होकर विनम्रताकी प्रतिमूर्ति थे। वे सच्चे अर्थमें सनातनधर्मके वर्तमान युगके दूत थे। देशमें बढ़ रही नास्तिकता, अनैतिकता तथा अधर्मने उनके हृदयमें एक तूफान मचाया था। वे मुझसे जब भी मिलते, रोते; हृदय और गीली आँखोंसे एक ही बात कहते। 'क्या सनातनधर्म और भारतीय अध्यात्मवाद मिटा दिया जायगा ? क्या भारत धर्मको खोकर निष्प्राण होकर रह जायगा ? क्या हिन्दूत्व देखते ही देखते मिटा डाला जायगा ?'

उनके ये प्रश्न और हृदय-रोदन देखकर मैं स्वयं भी रो उठता तथा उन्हें आश्वासन देता : 'नहीं भाईजी, भला हमारे सनातनधर्म और भारतीय अध्यात्मवादका कभी नाश हो सकता है ? इस धरतीसे मानवता और नैतिकता कैसे मिट सकती है ? जिस धर्म और संस्कृतिको रावण, हिरण्यकशिपु, औरंगजेब ओर नादिरशाहकी तलवार नहीं मिटा सकी उसे भौतिकवादी वर्ग क्या मिटा पायेगा ?'

भाईजी हिन्दू, हिन्दी एवं हिन्दुस्तानके अनन्य सेवक तथा सनातनधर्मके निष्ठावान् पुजारी थे। वह वर्तमान नास्तिकता और अनास्थाके युगमें धर्म-प्रचारकके लिए ठोस रचनात्मक रूपमें प्रयासशील थे। उनकी तरह निःस्वार्थ धर्म-सेवा करनेवाले विरले ही होते हैं। यदि भाईजी जैसे अन्य दो-चार व्यक्ति धर्म-सेवाके क्षेत्रमें और लग जायें, तो बड़ी आसानीसे तेजीसे बढ़ रही नास्तिकतासे सफल संघर्ष किया जा सकता है।

भक्त रामशरणदास

उपाधियोंके प्रलोभन : भाईजीके शब्दोंमें

गोरखपुरमें कमिश्नर थे—सर हेरी हेग। उन्होंने मेरेलिए 'सर'की उपाधि रिकमण्ड की थी, पर मैंने उसे अस्वीकार कर दिया। मुझसे उनका बड़ा स्नेह-सम्बन्ध था। मैंने उनसे पूछा : 'आप इन उपाधियोंको क्या मानते हैं ?' उन्होंने उत्तर दिया : 'कुत्तेके गलेका पट्टा।' मैंने हँसकर कहा : 'तो आप मुझे कुत्ता बनाकर मेरे गलेमें पट्टा बाँधना चाहते थे ?' बोले : 'आपने हमें जब अस्वीकार कर दिया तब मैंने स्नेहवश हृदयकी बात आपसे कही। किन्तु यदि इसे स्वीकार कर लेते तो मैं आपसे ऐसे थोड़े ही कहता !'

दूसरी बार ! श्री गोविन्दवल्लभ पन्तके साथ मेरा पुराना बड़ा स्नेह था। मृत्युके कुछ दिन पूर्व जब वे गोरखपुर आये थे तो उन्होंने मुझसे कहा : 'भाईजी, मैं आपके लिए 'भारतरत्न'की उपाधिकी सिफारिश करने जा रहा हूँ, आप उसे स्वीकार कर लें।' मैंने कहा : 'आपकी कृपा है, पर 'उपाधियाँ' तो पहलेसे ही बहुत लगी हुई हैं। अब एक नयी 'उपाधि' आप क्यों और लादना चाहते हैं ?' तर्क सुनकर पंतजी हँस पड़े।

संग्राहक : राधेश्याम बंका

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पितृकल्प पोद्दारजी !

श्रीशान्तिप्रसाद जैन

★

मेरा भाईजीका सर्वप्रथम परिचय दानापुरमें १९३१ में हुआ था और अन्तिम दर्शन हुए गोरखपुरमें पिछली १५ मार्चको। उन्होंने मुझे सदा प्यार किया और मेरी आस्था उनके साधुत्वके प्रति हमेशा ही बढ़ती रही। वे सबके कल्याणकारी और राग-द्वेषसे ऊपर थे।

कई वर्ष पूर्व गोरखपुरमें मैंने अपनी कुछ शंकाओंका समाधान करानेके लिए जो उनके जीवनमें मुझे विपरीतताएँ दिखायी देती थीं, उनके सम्बन्धमें पूछा। वे कर्मकाण्डी पण्डितोंको उत्साहित करते और जो उनके निकट थे और जिनपर उनकी ममता थी, उनको अपने शुभके लिए कर्मकाण्डी पण्डितों द्वारा पूजा-पाठ करानेमें उत्साहित करते थे। इसी प्रकार मान्त्रिक और तान्त्रिक विद्वानोंको भी उनकी प्रशंसा और सहयोग प्राप्त था।

मेरी इस उत्कण्ठाको उन्होंने बड़े चावसे केवल शान्त ही नहीं किया, अपितु जो मुझे समझाया उससे मेरा विश्वास हो गया है कि दोनों ही सत्य हैं, किन्तु इनका उपयोग मनुष्यके लिए अपनी आस्था और जीवन स्तरपर निर्भर है। उन्होंने कहा : "देवी-देवता उसी प्रकार सत्य हैं, जिस प्रकार इस जगत्‌में मनुष्य सत्य है। मन्त्र-तन्त्र उसी प्रकार लाभदायक है, जिस प्रकार किसी राजश्री या लक्ष्मी अधिपतिके लिए हम यहाँ स्तुति आदि करनेके पश्चात् लाभान्वित होते हैं। मनुष्यका जीवन जब सांसारिक इच्छाओंसे ऊपर उठ जाता है, तो कर्मकाण्डकी ये शक्तियाँ और विभूतियाँ उनके लिए उपादेय वस्तु नहीं रहतीं।

आदमी सब समय अध्यात्ममें लीन नहीं रह सकता और न आत्म-चिन्तन ही कर सकता है। भगवद्भक्ति, जन-सेवाके कार्य अध्यात्मकी सीढ़ीमात्र है।

इस वार्ताके पश्चात् मैंने कई बार और कई तरहसे जो भी शास्त्रोंका अध्ययन किया, मुझे उनके शब्दोंकी सत्यता अधिक प्रखर होती दिखायी दी। मैंने आज यह बात इसलिए लिखी है कि उनके श्राद्धके दिन जो भाई-बहनें उनसे नहीं मिले हैं, वे भी इस सत्यको जान लें। वे आध्यात्मिकता और ज्ञानके साथ-साथ एक सच्चे साधु थे और जिस साधुताकी विलक्षणता बालकोंके जीवनमें दिखायी देती है वह उनमें भरपूर थी।

एक बार ऋषिकेशमें गंगाजीमें उनके साथ नहाते हुए जब मैंने १०१ डुबकी लगानेकी बात की, तो वे भी बराबर डुबकी लगाते रहे और अपनी उम्रका बिना लिहाज किये पानीमें मेरे साथ उसी प्रकार आनन्द लेते रहे जैसे बच्चे लेते हैं।

उन्होंने मुझे हमेशा अपना बेटा माना है और मैंने उन्हें अपना पिता माना। उनकी आत्मा भगवान्‌में आत्मस्थ हो और वे सदाके लिए संसारके कल्याणकारी हों।

●

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भारतीय परम्पराके उद्धारक अवतार !

श्रीरामधारीसिंह 'दिनकर'

★

उन्नीसवीं सदीमें भारतीय संस्कृतिकी सेवा ब्रह्म-समाज, आर्यसमाज, प्रार्थना-समाज और राधास्वामी-समाजने की थी। उस समयके संस्कृति-सेवकोंमें उन विदेशी और देशी विद्वानोंका भी आदरणीय स्थान है, जिन्होंने भारतकी प्राचीन विद्याका उद्धार अंग्रेजीके माध्यमसे किया। किन्तु बीसवीं सदीमें भारतीय संस्कृतिकी जैसी सेवा गोरखपुरके गीता-प्रेस और बम्बईके भारतीय विद्या-भवनने की, वैसी सेवा न तो कोई सरकार कर सकी, न कोई विश्वविद्यालय कर सका। पर क्लेशका विषय है कि इन दोनों महान् संस्थाओंके संस्थापक और कर्णधार इसी वर्ष हमारे बीचसे उठ गये।

श्री पोद्दारजीकी विशेषता यह थी कि वे प्राचीन भारतके ज्ञानको प्राचीन अथवा मध्यकालीन भारतकी भ षामें फैलाते थे।

उन्होंने भारतकी सारी परम्परा हिन्दीमें लाकर विशाल जन-समूहके लिए सुलभ कर दी। जिन प्राचीन पुराणों और ग्रन्थोंके जनता पहले केवल नामभर सुना करती थी, वे ग्रन्थ अब उसके हाथमें हैं और वे हिन्दीमें हैं, जिस भाषापर जनताका स्वाभाविक अधिकार है। वे भारतीय परम्पराके उद्धारक अवतार थे।

मुन्शीजीने प्राचीन विद्याका नवीन आख्यान अंग्रेजीमें उनके लिए किया, जिनका मन आधुनिक है और जो अपनी परम्पराको अंग्रेजीमें ही समझना चाहते हैं, मगर दोनों महापुरुषोंकी सेवाओंका परिणाम लगभग समान है।

२७ मार्चको मैं पोद्दारजीकी समाधिपर फूल चढ़ानेको गोरखपुर गया तो वहाँ परम पूज्य मौनी बाबासे भेट हों गयी। मैंने पूछा : 'बाबा, पोद्दारजीकी चिता यहाँ गीता-वाटिकामें क्यों रचायी गयी, किसी नदीके तटपर क्यों नहीं ?'

बाबाने कहा : 'सन् १९३९ ई०में मेरे और भाईजीके बीच यह कौल हुआ था कि हममेंसे एक जहाँ समाधि ले, दूसरेको आजीवन उसी समाधिके पास रहना होगा। यदि भाईजीकी चिता नदी किनारे रचायी गयी होती, तो मै भी कुटी बनाकर वहीं रहता। अतएव पंचोंने तय किया कि भाईजी की चिता यहाँ गीता-वाटिकामें ही जले, जिससे मैं इसी वाटिकामें रहकर अपने प्रणका पालन कर सकूँ।'

बाबाका उद्‌गार सुनकर मुझे रोमांच हो आया। चलते-चलते मनमें यह बात दृढ़ हो गयी कि बाबाका गीता-वाटिकामें रखनेका निर्णय सही और लाभकारी निर्णय है, क्योंकि वे उस कार्यकी दूसरी आत्मा हैं, जो गीता-प्रेससे हो रहा है।

●

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

महानगरोंके विकासके लिए

"कोणार्क" मार्का डालमिया पोर्टलैण्ड सिमेंट
"ओसी" मार्का डालमिया पोज़ोलाना सिमेंट

निर्माता

उड़ीशा सीमेंट लिमिटेड
राजगंगपुर (उड़ीशा)

तथा

हर आकार और प्रकारकी डालमिया रिफ्रेक्टरीज़के उत्पादक

मुख्य कार्यालय :
४, सिंधिया हाउस
नयी दिल्ली—१

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

WITH BEST COMPLIMENTS FROM

KANORIA CHEMICALS
&
INDUSTRIES LIMITED

Manufacturers of

- ★ **Caustic Soda Lye**
- ★ **Liquid Chlorine**
- ★ **Hydrochloric Acid** (Commercial)
- ★ **Stable Bleaching Powder**
- ★ **Benzene Haxa Chloride** (Technical)
- ★ **Quikc & Slaked Lime** (Chemical purity above 90%)

Head office
9, Brabourne Road
CALCUTTA—1

★

Factory
P. O. Renukoot
Dist. Mirzapur
(*U. P.*)

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

A sip in a cup of tea
Makes body and mind free
After days hard turmoil
When all attempts foil
To recoup lost vigour
Tea is the only succour.

For

BEST QUALITY TEA

always remember

The Ananda (Assam)

Tea co., Ltd.

9, Brabourne Road

Calcutta-1

Phone : 22-0181 *(4 lines)*

GARDEN

Ananda Tea Estate

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भाईजीकी रचनाएँ

निबन्ध-संग्रह

भगवच्चर्चा : भाग १–५, पूर्णसमर्पणार्थं राधामाधव-चिन्तन, श्रीराधामाधव-चिन्तन परिशिष्ट, भवरोगकी राम-बाण दवा (विचारात्मक निबन्ध)।

पत्र-संग्रह

लोक-परलोक सुधार : भाग १–५ (साधना एवं व्यवहारके सम्बन्धमें दिये गये पथ-निर्देश)।

पद्य-संग्रह

श्रीराधामाधव-रस-सुधा, पत्र-पुष्प, प्रार्थना-पीयूष, व्रजरस-माधुरी, हरिप्रेरित हृदयकी वाणी, व्रजरसकी लहरें (खड़ी बोली, व्रजभाषा एवं राजस्थानीके पदोंका संग्रह)।

गद्य-काव्य

प्रार्थना, श्रीराधा-कृष्ण-मधुर-लीला-चम्पू, मधुर : भाग १, २।

समाज-निर्माणात्मक साहित्य

हिन्दू-संस्कृतिका स्वरूप, सिनेमा मनोरंजन या विनाशका साधन, विवाहमें दहेज, नारी-शिक्षा, स्त्री-धर्म-प्रश्नोत्तरी, वर्तमान शिक्षा, गो-वध भारतका कलंक, बलपूर्वक मन्दिर-प्रवेश और भक्ति।

साधना-साहित्य

मानव-धर्म, साधन-पथ, सत्संगके बिखरे मोती, मनको वशमें करनेका उपाय, ब्रह्मचर्य, मनुष्य सर्वप्रिय और सफल जीवन कैसे बने ? जीवनमें उतारनेकी सोलह बातें, कल्याणकारी आचरण।

उद्बोधक साहित्य

कल्याण-कुंज : भाग १–३, मानव-कल्याणके साधन, दिव्य-सुखकी सरिता, सफलताके शिखरकी सीढ़ियाँ, दैनिक कल्याण-सूत्र, आनन्दकी लहरें, दीन-दुखियोंके प्रति कर्तव्य (जीवनमें आशा, उत्साह, स्फूर्ति प्रदान करनेवाला साहित्य)।

अनूदित साहित्य

रामचरित-मानस, विनय-पत्रिका, दोह वली, कवितावली।

टीका साहित्य

प्रेम-दर्शन (नारद-भक्तिसूत्रोंकी विस्तृत टीका)।

भक्त-गाथा साहित्य

उपनिषदोंके चौदह रत्न, भक्त-गाथाएँ (कई भागोंमें)।

सम्पादित साहित्य

गीताप्रेस द्वारा प्रकाशित सम्पूर्ण साहित्य 'कल्याण'का ४५ वर्ष तक सम्पादन (सम्पूर्ण विशेषांकों एवं साधारण अंकों सहित), महाभारत-पत्रिका।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कल्याणके विशेषांक

संवत् १९८३ रामनवमी (२२-४-'२६) के दिन भक्तप्रवर जयदयालजी गोयन्दकाके साथ रेलयात्रामें 'कल्याण' मासिक-पत्र निकालनेका संकल्प हुआ। उसी वर्ष श्रावण कृष्ण ११ (२६-८-'२६) के शुभदिन 'कल्याण'का प्रथम अंक वेंकटेश्वर-प्रेस, बम्बईसे मुद्रित होकर सत्संग-भवन, बम्बई द्वारा प्रकाशित हुआ। संवत् १९८४ के भाद्रपदमें (अगस्त १९१७ ई०) पत्रका बम्बईसे गोरखपुर आगमन और वहाँ गीता-प्रेस द्वारा प्रकाशन प्रारम्भ हुआ जो आज १,५४८४३ प्रतियोंमें छप रहा है।

'कल्याण'के जितने भी विशेषांक प्रकाशित हुए हैं, उन सबके नाम निम्नलिखित हैं। प्रथम वर्षमें कोई नहीं निकला :

वर्ष	नाम	संवत्
२	भगवन्नामांक	१९८४
३	भक्तांक	१९८५
४	श्रीमद्भगवद्गीतांक	१९८६
५	रामायणांक	१९८७
६	श्रीकृष्णांक	१९८८
७	ईश्वरांक	१९८९
८	शिवांक	१९९०
९	शक्ति-अंक	१९९१
१०	योगांक	१९९२
११	वेदान्तांक	११९३
१२	सन्तांक	१९९४
१३	मानसांक	१९९५
१४	गीता-तत्त्वांक	१९९६
१५	साधनांक	१९९७
१६	भागवतांक	१९९८
१७	संक्षिप्त महाभारतांक	१९९९
१८	संक्षिप्त वाल्मीकि-रामायणांक	२०००
१९	संक्षिप्त पद्मपुराणांक	२००१
२०	गो-अंक	२००२
२१	संक्षिप्त मार्कण्डेय-ब्रह्मपुराणांक	२००३
२२	नारी-अंक	२००४
२३	उपनिषद्-अंक	२००५
२४	हिन्दू-संस्कृति-अंक	२००६
२५	संक्षिप्त-स्कन्दपुराणांक	२००७
२६	भक्त-चरितांक	२००८
२७	बालक-अंक	२००९
२८	संक्षिप्त नारद-विष्णुपुराणांक	२०१०
२९	सन्तवाणी-अंक	२०११
३०	सत्-कथांक	२०१२
३१	तीर्थाङ्क	२०१३
३२	भक्ति-अंक	२०१४
३३	मानवता-अंक	२०१५
३४	संक्षिप्त देवीभागवतांक	२०१६
३५	संक्षिप्त योगवाशिष्ठांक	२०१७
३६	संक्षिप्त शिवपुराणांक	२०१८
३७	संक्षिप्त ब्रह्मवैवर्तपुराणांक	२०१९
३८	श्रीकृष्णवचनामृतांक	२०२०
३९	श्रीभगवन्नाम-महिमा-प्रार्थनांक	२०२१
४०	धर्माङ्क	२०२२
४१	श्रीरामवचनामृताङ्क	२०२३
४२	उपासनांक	२०२४
४३	परलोक और पुनर्जन्मांक	२०२५
४४	संक्षिप्त अग्निपुराण गर्गसंहितांक	२०२६
४५	संक्षिप्त अग्निपुराण, गर्गसंहिता, नरसिंहपुराणांक	२०२७

श्रीकृष्ण-जन्मस्थान-सेवासंघ मथुराके लिए देवधरशर्मा द्वारा आनन्दकानन प्रेस, ढुण्ढिराज, वाराणसी—१ में मुद्रित एवं प्रकाशित

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri